प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण (कार्यरत)

डी.एल.एड. कोर्स (द्वि-वार्षिक)

(दूर शिक्षा माध्यम)

मातृ-भाषा

हिन्दी

पश्चिमबंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद
आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र भवन
डी०के० 7/1 सेक्टर-2, सल्टलेक
विधाननगर, कोलकाता-700091

पश्चिमबंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद

प्रथम प्रकाशित : मार्च 2012

द्वितीय प्रकाशित : मार्च 2014

Neither this book nor any keys, hints, comments, notes, meanings, connotations, annotations, answers and solutions by way of questions and answers or otherwise should be printed, published or sold without the prior approval in writing of the President, West Bengal Board of Primary Education.

प्रकाशक :
अध्यापक डा० मानिक भट्टाचार्य, सभापति
पश्चिमबंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद
आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र भवन
डी० के०-7/1 सेक्टर-2
विधाननगर, कोलकाता-700091

Prelude

It gives us immense pleasure to announce that a Two-year D.El.Ed Course, (approved by N.C.T.E) is about to commence as a result of the collaborative efforts of the WBBPE and the Govt. of West Bengal in the School Education Deptt. after having overcome all the obstacles. This is going to solve the problems of the existing in-service untrained Primary Teachers of our state in the context of N.C.F. - 2005, N.C.F.T.E.-2009 and RTE Act-2009 as well. It has been decided that this two year teacher-training course will be conducted in the Open Distance Learning Mode under the aegis of the West Bengal Board of Primary Education for the next three years. Follwing the order of the School Education Department, W.B., a team of experts comprising eminent educationists, representatives of N.C.T.E and IGNOU has very sincerely prepared the syllabus, study materials, guide books for the Coordinators and Counsellors of the 2 years D.El.Ed Course under the supervision of WBBPE. The curriculum and Syllabus of five theoretical papers, including seven method papers and three practical papers have been framed. Separate year wise study materials have been prepared for each paper and approved by NCTE.

The WBBPE will be glad if these study materials and guide books, which have been developed following the norms of the Open Distance Learning Mode, prove to be helpful for the trainees.

The WBBPE welcomes constructive suggestions and feedback for the improvement of these publications. The West Bengal Board of Primary Educations would also like to convey sincere gratitude to all the eminent academicians and all others involved in the process of composition, editing and publication of these books.

December, 2012

President
West Bengal Board of Primary Education

पर्षदीय प्राक्कथन

हमें यह घोषणा करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि द्वि-वार्षिक डी. एल. एड. (एन. सी. टी. ई. द्वारा अनुमोदित) पाठ्यक्रम प्राथमिक शिक्षा पर्षद और विद्यालय शिक्षा विभाग, पश्चिम बंग सरकार के सामुहिक प्रयास के परिणाम स्वरूप विभिन्न कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के बाद अब प्रारम्भ किये जाने के कगार पर है। यह हमारे प्रदेश में कार्यरत अप्रशिक्षित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं के समाधान हेतु आर. टी. ई. अधिनियम 2009 के अन्तर्गत किया जा रहा है। यह निर्णय लिया गया है कि यह द्विवार्षिक शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (दूर शिक्षा माध्यम) पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद के संरक्षण में अगले तीन वर्षों के लिए संचालित होगा। विद्यालय शिक्षा विभाग, पश्चिम बंग सरकार के आदेशानुसार अनेक विशेषज्ञों शिक्षाविदों तथा एन. सी. टी. ई. और इग्नु (IGNOU) के प्रतिनिधियों के सानिध्य में बहुत ही सावधानी के साथ इसके पाठ्यक्रम पाठ्य सामग्रियों तथा द्विवार्षिक डी. एल. एड. पाठक्रम के संजोजकों (Co-ordinators) तथा बुद्धि सहायकों (Counsellors) के लिए सहायिका पुस्तकों को तैयार किया गया है। इसके लिए पाँच तात्विक प्रश्नपत्रों (Theoretical papers) सात मेथड पेपर्स और तीन प्रायोगिक प्रश्नपत्रों का निमार्ण किया गया है। अलग अलग वर्ष के पाठ्क्रम के अनुसार प्रत्येक प्रश्नपत्र हेतु पाठ्य सामग्रियाँ तैयार की गयी हैं तथा एन. सी. टी. ई. द्वारा अनुमोदित भी हैं।

ये पाठ्य-सामग्रियाँ और सहायिका पुस्तकें जो प्रशिक्षणार्थियों और संयोजकों के लिए दूर शिक्षा माध्यम के सिद्धान्त पर तैयार की गयी हैं यदि सफल सिद्ध होती हैं तो यह पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा परिषद के लिए हर्ष का विषय होगा।

इन प्रकाशनों में सुधार हेतु उपयोगी और प्रायोगिक सुझाओं का पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद स्वागत करेगी। पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद इन पुस्तकों के नियमिओं संकलन कर्ताओं, प्रकाशकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करती है।

दिसम्बर, २०१२

अध्यक्ष
पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद

Preface for the Second Edition

Modules of Two Year D. El. Ed Course were first prepared in the year 2012 for the teachers' training of in-service Primary Teachers of West Bengal through ODL mode. The modules were very much popular to its clienteles and were effective in imparting training. In the mean time the curricula of Primary Education and of regular Two Year D. El. Ed. have been changed. With a view to incorporate those changes in the Primary Teachers' Training the content and style of presentation have also been changed in the modules of Two Year D. El. Ed. (ODL) Course for the next session. Hope this module would enjoy more support from its clienteles. Any suggestion for the improvement of this module will be thankfully received.

With best wishes to all,

Prof.(Dr.) Manik Bhattacharya

December, 2014.

President

WBBPE

हमारे कथन

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा 2009 और सार्वजनिक बाध्यतामूलक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकार कानुन एवं प्रासंगिक धारा और उपधाराओं को ध्यान में रखकर हमारी द्विवार्षिक दूर शिक्षा माध्यम से डी.एल. एड. कोर्स का पाठ्यक्रम, पाठ्यविषय व अनुषंगिक विषय व रूपरेखा स्थिर की गयी है। ये तीन आवश्यक विषय जिससे शिक्षक–शिक्षिकागण की धारणा, कार्यप्रणाली एवं चिन्तन के माध्यम से आ जाय, हमारे वर्तमान पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य यही है। R.T.E. Act या शिक्षा का अधिकार से सम्बन्धित कानून के सम्बन्ध में सभी शिक्षकों में स्पष्ट धारणा होनी आवश्यक है। शिक्षण–कक्ष में शिक्षक जिस प्रणाली से या पद्धति से विषय का प्रस्तुतीकरण या उसकी व्याख्या करेंगे, उसे ध्यान में रखना होगा, छात्रों का आग्रह, मनोयोग, जिज्ञासा को साथ लेकर वे पाठन में अग्रसर होते हैं। कक्षाध्यायन का आधा समय छात्रों के सक्रिय अंश ग्रहण में खर्च होना चाहिए।

- छात्रों का विषय के जानने का अधिकार है।
- प्रश्नों करने का अधिकार है।
- प्रथम बार नये विषय को न समझ पाने से द्वितीय बार व्याख्या करने के लिए बोलने का अधिकार है।

शिक्षक के साथ पाठ्य विषय में तर्क करने का अधिकार है। मूल्यांकन से सन्तुष्ट न होने पर त्रुटि कहाँ है अथवा कहाँ उनके समझने व व्याख्या करने में भूल हुई है उसे जानने का अधिकार है। शिक्षक को इस विषय में नये ढंग से सोचना होगा।

अध्यापक डा० मानिक भट्टाचार्य
अध्यक्ष
पश्चिम बंग प्राथमिक शिक्षा पर्षद

दक्षता–सम्बन्धित विषय (Skill-Based Subjects)

मातृभाषा पाठ्यांश एवं शिक्षण पद्धति (हिन्दी)

(Contents and Methods of Teaching Mother Language –Hindi)

उद्देश्य

1. प्राथमिक स्तर पर भाषा और साहित्य संचालन की योग्यता उत्पत्ति में सहायता करना।
2. विभिन्न स्तर से आने वाली बच्चों की भाषा सीखने से सम्बन्धित समस्या–परिचिति एवं उन समस्याओं का सामाधान।
3. प्रशिक्षणार्थियों के अन्तर्गत बाल–साहित्य सम्बन्धी ज्ञान का विस्तारण।
4. भाषा–शिक्षण के प्रति आनन्दप्रद भाव एवं प्रतियोगितात्मक मानसिक विकास में सहायक होना।
5. मातृ–भाषा के प्रमुख लक्षण व्याकरण के प्रमुख सिद्धान्त, मुहावरों एवं लोकोक्तियों से परिचित।

पाठ्यक्रम

1. हिन्दी–भाषा–शिक्षण–प्रस्तुतीकरण–हिन्दी भाषा सीखने की आवश्यकता एवं उद्देश्य।
2. कक्षा – 1 से लेकर कक्षा – 5 तक प्रचलित पाठ्यक्रम का विस्तृत एवं पर्याप्त ज्ञानार्जन।
3. प्राथमिक स्तर पर हिन्दी–भाषा शिक्षण सम्बन्धित वैषयिक विशेषता एवं अध्ययन सम्बन्धित सामग्री का ज्ञानार्जन।
4. विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का श्रवण–धनि सम्बन्धित लाक्षणिक अनुकरण—विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का अनुकरण।
5. कथन–हिन्दी भाषा में वार्तालाप, समुचित वार्तालाप का अभ्यास। निर्माण–वार्तालाप, कविता, कहानीकथन, पद्य, अभिव्यंजन एवं अनुभव युक्त व्याख्या।

-हिन्दी-

भाग-एक

पाठ्यसूची

1. पद्य :-

पुष्प की अभिलाषा - माखन लाल चतुर्वेदी

अनमोल वचन - कबीर दास

भूल गया है क्यों इन्सान - डा० हरिवंश राय बच्चन

2. गद्य :-

जब मैं पढ़ता था - मोहन दास करम चन्द गाँधी

ईदगाह - प्रेमचन्द

3. व्याकरण :-

(1) • भाषा-परिभाषा।
- उपभाषा-परिभाषा एवं उनमें सम्बन्ध।

(2) • उपभाषा के दो रूप - कथित एवं लिखित।
- कथित उपभाषा के पाँच रूप - अवधी, ब्रज, भोजपुरी, खड़ी बोली, मैथिली।
- गद्य उपभाषा के दो रूप - प्रामाणिक एवं आंचलिक।
- प्राथमिक स्तर पर आंचलिक भाषा एवं प्रामाणिक हिन्दी भाषा में भेद सम्बन्धित समस्याये एवं उनके समाधान का प्रयास।

पद परिचय - • विकारी।

समास - • अविकारी।

- प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य एवं प्रयोजनीयता।
- भाषा शिक्षण के विभिन्न स्तर :-

सुनना - प्राथमिक शिक्षण में सुनने का महत्व।

लिखना - आदर्श कथन।
भूल रहित वर्णों एवं शब्दों के उच्चारण का अभ्यास गठन एवं पद्धति
(कथोपकथन, कविता पाठ, कहानी-कथन, एवं गद्यांश पाठ)।

पढ़ना - आदर्श पठन की विशेषता।
उच्चारित एवं शान्त पठन की प्रयोजनीयता।
उच्चारित एवं शान्त पठन की पद्धति।

- लिखना –
  - आदर्श लेखन के अभ्यास गठन की पद्धति।
  - सूक्ष्म लेखन, श्रुत लेखन।
  - बोलने, पढ़ने एवं लिखने के क्षेत्र में विराम। चिन्ह के उचित प्रयोग की रीति।
- मातृभाषा शिक्षण की कुछ विधियाँ :–
  - वर्णों के अनुसार।
  - शब्दों के अनुसार।
  - वाक्यों के अनुसार।
  - कविता कहानी कथन, अभिनय एवं आरोही पद्धति।
- भाषा शिक्षण में सहायक उपकरणों का महत्व :–
- दर्शन एवं श्रवण पर आधारित उपकरणों का श्रेणी कक्ष में व्यवहार एवं प्रयोग की पद्धति – चार्ट, माडल, श्यामपट्टे, पाकेटबोर्ड, आडियो, वीडियो, कैसेट, सीडी।
- सूक्ष्म शिक्षण की धारणा एवं पाठ परिकल्पना
  (प्रथम श्रेणी से पंचम श्रेणी तक)

पाठ्य-सूची

पद्य :–

- एक बूँद – अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध।
- कदम्ब का पेड़ – सुभद्रा कुमारी चौहान।

गद्य :–

- हार की जीत – श्री सुदर्शन।
- एकाग्रता – महावीर प्रसाद द्विवेदी।
- कबीर दास – संकलन।
- राष्ट्रीय झण्डा संकलन।
- आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा।
- कवि एवं लेखक परिचय (प्रथम श्रेणी से पंचमश्रेणी तक)

व्याकरण :–

- मुहावरे, समोच्चरित शब्द, विपरीतार्थक शब्द, पर्यायवाची शब्द,
- समानार्थक शब्द एवं विभिन्न प्रकार के वाक्य गठन की पद्धति (सार्थक एवं रचनात्मक)।

भाग – दो

- व्याकरण शिक्षा की प्रयोजनीयता।
- प्रतिवेदन, अनुच्छेद रचना, पत्र–लेखन सीखने की पद्धति।
- मातृभाषा शिक्षण की कुछ पद्धतियाँ – कथोपकथन, आलोचना, अनुवन्ध एवं प्रकल्प पद्धति।
- उच्चारण एवं वर्तनी समस्या एवं उनके निवारण की पद्धतियाँ।
- सामर्थ्य पर आधारित इकाई विश्लेशण माध्यम से पाठ परिकल्पना।
- सतत एवं सामग्रिक मूल्यांकन, इकाई पाठ विश्लेषण सम्बन्धित प्रश्न पत्र प्रस्तुतीकरण।
- सामर्थ्य पर आधारित प्रयुक्त पाठ योजना एवं पाठ परिकल्पना प्रस्तुतीकरण (Macro-Teaching)

भाग – एक
पुष्प की अभिलाषा

प्रस्तावना :– 'पुष्प की अभिलाषा' माखन लाल चतुर्वेदी जी की प्रसिद्ध रचना है। प्रस्तुत कविता देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत है। प्रस्तुत कविता में पुष्प के माध्यम से वीर एवं त्यागी पुरुष की देश भक्ति का चित्रण किया है। प्रस्तुत कविता में देश प्रेमी या देशभक्त व्यक्ति के त्याग और बलिदान का वर्णन किया गया है। पुष्प की यही इच्छा है कि उसे उस पथ में फेंक दिया जाय जिस पथ से होकर अनेक वीर जाएँ। प्रस्तुत कविता शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि है।

उद्देश्य :– (i) प्रस्तुत पाठ का मुख्य उद्देश्य छात्रों में देशभक्ति की भावना को विकसित करना।

(ii) श्रवण पठन बोध क्षमता का विकास करना।

(iii) सौन्दर्य बोध करना।

(iv) काव्य के प्रति रुचि जागृत करना।

(v) कविता के संदर्भ से बच्चों को अवगत कराना – शहिदों के प्रति प्रेम की भावना विकसित करना।

(vi) बच्चों के अर्थ गहण करने की क्षमता को विकसित करना।

भाग – एक (पद्य)

पुष्प की अभिलाषा

माखन लाल चतुर्वेदी

चाह नहीं, मैं सुरबाला के,
गहनों में गूंथा जाऊँ
चाह नहीं, प्रेमी – माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ

चाह नहीं सम्राटों के शव
पर, हे हरि, डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ू, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना, वनमाली

उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

शब्दार्थ : सुरबाला = सुंदरी। गूंथा = गूंथना, पिरोना। चाह = इच्छा। शव = लाश (मृतक)। इठलाऊँ = इठलाना, प्रसन्न होना। अनेक = बहुत सारा।

अभ्यास

(1) **विचारात्मक एवं बोधमूलक प्रश्न :**

मुझे तोड़लेना ---------- वीर अनेक

(क) इस पंक्ति का वक्ता कौन है ?

(ख) इस पंक्ति को किसने लिखा हैं ?

(ग) वक्ता वनमाली से क्या कह रहा है ?

(2) **छोटे प्रश्न :**

(क) पुष्प की अभिलाषा क्या है ? स्पष्ट करो।

(ख) इस तरह की इच्छा वह क्यों रखना चाहता है ?

(3) **बड़े प्रश्न :**

(क) देशभक्तों की क्या विशेषताएँ हैं ?

(ख) फूल किन-किन कार्यों में प्रयोग किये जाते हैं ?

(4) **रचनात्मक प्रश्न :**

(क) इन शब्दों के विलोम लिखो।
प्रमी, सम्राट, देव, वीर

(ख) नीचे लिखे शब्दों के लिए और तीन/तीन शब्द लिखो:
चाह, गहना, हरि, फूल।

(ग) निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कर लिंग निर्णय कीजिए —
फूल, वीर, देवता, प्रेमी, पुष्प, अभिलाषा।

अनमोल वचन

प्रस्तावना – अनमोल वचन में रहीम एवं कबीर के कुछ दोहों को संग्रहित किया गया है। अनमोल वचन में संग्रहित दोहे नैतिकता पर आधारित हैं। प्रस्तुत दोहों में गुरु की महानता प्रेम के महत्व, समय के महत्व, संगति के महत्व जैसे आदर्श विषय का वर्णन किया गया है। इसके अलावा धर्म निरपेक्षता एवं सद्भाव जैसे गुणों का समावेश किया है। प्रस्तुत दोहे आम इन्सान की जिन्दगी को प्रेरित करने में सक्षम है। ये दोहे नैतिकता को ध्यान में रख कर आदर्श समाज की प्रतिष्ठा करने के उद्देश्य से लिखे गये हैं।

उद्देश्य :- (1) छात्रों में धर्मनिरपेक्षता, नैतिकता तथा सद्भाव जैसे गुणों का विकास करना।
(2) श्रवण-पठन बोध क्षमता का विकास करना।
(3) लयबद्ध तरीके से पठन क्षमता का विकास करना।
(4) काव्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
(5) छात्रों को कठिन शब्दों से परिचित कराना एवं उनके अर्थ को समझाना और अभ्यास द्वारा सिखाना।

अनमोल वचन

रहीम / कबीर दास

गुरु–गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

तिनका कबहूँ न निन्दिये, जो पायन तर होय।
कबहुँक उड़ि आँखिन परै, पीर धनेरी होय।।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा अपना, मुझ सा बुरा न कोय।।

रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवाया खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय।।

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पण्डित होय।।

साँच बराबर तब नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय सांच है, ताके हिरदय आप।।

ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, दाता सूर अनेक।
जपिया, तपिया बहुत हैं, सीलवंत कोऊ एक।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।

जो तोके काँटा बुवै ताहि बोय तु फूल।
टोको फूल को फूल हैं, वाको हैं तिरसूल।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।

ऐसी बानी बोलिये मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहुँ शीतल होय।।

तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियत न नीर।
परमारथ के कारनें, संतन धरा शरीर।।

बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तौल के, तब मुख बाहर आनि।।

विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखा की पौन।।

जो पहले कीजे जतन, सो पीछे फलदाय।
आग लगै खोदे कुआँ, कैसे आग बुझाय।।

शब्दार्थ : बलिहारी = श्रद्धा, भक्ति। मिलिया = मिलना। अमोल = अमूल्य। सीलवंत = कोमल स्वभाव वाला। भुजंग = सर्प। पंथी = राहगीर। आपा = दर्प, घमण्ड। हिये = हृदय। तरुवर = वृक्ष या पेड़। उद्यम = पयत्न। पौन = पवन, हवा।

अभ्यास

(1) सभी दोहों के अर्थ एवं भाव लिखे।

(2) दोहा किसे कहते हैं?

अभ्यासार्थ प्रश्नमाला

(3) लघु उत्तरी प्रश्न :-

(क) मनुष्य को कैसी वाणी बोलनी चाहिए?

(ख) संत क्यों शरीर धारण करते है?

(ग) विद्याधन की क्या विशेषता है?

(घ) मनुष्य को किस प्रकार बोलना चाहिए?

(ङ) गुरु और गोविन्द में कौन बड़ा है?

(च) उत्तम प्रकृति के मनुष्य की क्या विशेषता है?

(छ) निंदक को निकट क्यों रखना चाहिए?

(4) विचारात्मक एवं बोधमूलक प्रश्न

(i) बुरा जो देखन मैं चला ---------- बुरा न कोय।

(क) प्रस्तुत पंक्तियों के पाठ एवं कवि का नाम क्या है?

(ख) पंक्ति का अर्थ एवं भाव स्पष्ट कीजिए।

(ii) सौच बराबर तप ---------- हिरदय आप।

(क) पंक्तियों के रचनाकार का नाम लिखिए।

(ख) पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(iii) जो रहीम उत्तम प्रकृति ---------- लपटे रहत भुजंग।

(क) रचना एवं रचनाकार का नाम लिखिए।

(ख) कौन लोग उत्तम प्रकृति के होते हैं?

(ग) पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(5) **रचनात्मक प्रश्न**

(क) निम्नलिखित का विलोम कीजिए

गुरु, बुरा, गँवाना, पण्डित, उत्तम, विष, आग, शीतल।

भूल गया है क्यों इन्सान

प्रस्तावना : 'भूल गया है क्यों इन्सान' 'बच्चन' जी की प्रशिद्ध कविता है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने आपसी प्रेम एवं मानवता के गुणों को उजागर किया है। कवि बच्चन जी कहना चाहते हैं कि मनुष्य मनुष्यता ही भूल गया। सब पर भौतिक एवं लौकिक कृपा समान है फिर भी इन्सान इन्सानियत भूल गया है। देश भले ही अलग अलग हो लेकिन मनुष्य के अन्तर प्राण एक है, फिर भी मानव मानवता के गुणों को भूल गया हैं। मानव में प्रेम दया, क्षमा जैसे गुणों के बजाय ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट, षड्यंत्र जैसे अवगुण बढ़ रहे है जिससे मानवता का विनाश हो रहा है।

उद्देश्य :

(1) छात्रों में आपसी प्रेम, मानवता और उदारता जैसे सद्गुणों का विकास करना।

(2) शुद्धता के साथ वाचन लेखन एवं मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना।

(3) शुद्ध उच्चारण एवं श्रवण की पर्याप्त क्षमता का विकास करना।

(4) चिन्तन की क्षमता का विकास करना।

(5) साहित्य के प्रति रुचि में वृद्धि करना।

भूल गया है क्यों इन्सान

डा० हरिवंश राय बच्चन

भूल गया है क्यों इन्सान।
सबकी है मिट्टी की काया
सब पर नभ की निर्मल छाया
यहाँ नहीं कोई आया है ले विशेष वरदान।

भूल गया है क्यों इन्सान।
धरती ने मानव उपजाए,
मानव ने ही देश बनाए,
बहु देशों में बसी हुई है, एक धरा संतान।

भूल गया है क्यों इन्सान।
देश अलग हैं, देश अलग हो,
मानव का मानव से लेकिन, अलग न अंतर प्राण
भूल गया है क्यों इन्सान।

शब्दार्थ : काया = शरीर। बहु = अनेक। धरा = संतान, पृथ्वी की संतान। अंतर = प्राण, हृदय।

अभ्यास

(1) **बोध मूलक प्रश्न :**
भूल गया ----------विशेष वरदान

(क) पंक्ति के रचनाकार कौन है ?
(ख) मनुष्य का शरीर किस चीज से बना है ?
(ग) पंक्तियों का अर्थ समझाकर लिखो।

(2) **छोटे प्रश्न :**
(क) मनुष्य-मनुष्य में किस तरह के अन्तर देखते हो ?
(ख) हर देश के मनुष्यों में क्या समानताएँ हैं ?
(ग) इस पृथ्वी के पुत्र कहाँ-कहाँ बसे है ?

(3) **बड़े प्रश्न :**

(क) प्रस्तुत कविता का मूलभाव एवं उद्देश्य लिखिए।

(4) **रचनात्मक प्रश्न :**

(क) समोच्चारित शब्दों के अर्थ लिखिए :

बहु, बहू। सब, सव। वस, बस। भेश, वेश। देश, द्वेष।

(ख) निम्नलिखित शब्दों का विलोम लिखिए :

छाया, वरदान, भूलना, अलग, मानव, अंतर, धरती।

(ग) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए :

मनुष्य, मिट्टी, नभ, संसार, काया।

जब मैं पढ़ता था

प्रस्तावना :– 'जब मैं पढ़ता था' पाठ में गाँधीजी ने अपने जीवन के बारे में लिखा है। प्रस्तुत पाठ के माध्यम से गाँधीजी के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं की झांकी प्रस्तुत की गयी है। गाँधीजी पितृ भक्त बालक थे, वे पिता की सेवा को सुख मानते थे, साथ ही सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे। वे सदा सन्मार्ग पर चले तथा दूसरों को भी प्रेरित किया। प्रस्तुत पाठ में लगन और परिश्रम के महत्व को दर्शाया गया है। गाँधीजी सादा जीवन और उच्च विचार के समर्थक थे। प्रस्तुत पाठ के माध्यम से उन्होंने सत्य, सेवा एवं अहिंसा की शिक्षा दी है। गाँधीजी राही नहीं, राहों के अन्वेषक थे।

उद्देश्य :– (i) छात्रों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिल सकेगा।

(ii) बालकों में सत्य, सेवा एवं अहिंसा के भाव की वृद्धि करना।

(iii) छात्र विराम, शुद्धता, शीघ्रता के साथ वाचन कर सकेगा।

(iv) शब्द–बोध एवं वाचन अर्थ–बोध के साथ कर पायेगा।

(v) छात्र लगन तथा परिश्रम की प्रेरणा पा सकेंगे।

2 गद्य

जब मैं पढ़ता था

मोहनदास करमचन्द गाँधी

मेरे पिता करमचन्द गाँधी थे। वे राजकोट के दिवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी एवं उदार व्यक्ति थे। वे सदा उचित न्याय करते थे।

मेरी माता का नाम पुतली बाई था। उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थी। पूजा-पाठ किये बिना भोजन नहीं करती थी।

2 अक्टुबर 1869 को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ। पोरबंदर से पिताजी जब राजकोट गये तब मेरी उम्र सात वर्ष की होगी। पाठशाला से फिर फिर ऊपर के स्कूल में और वहाँ से हाईस्कूल में गया।

एकबार पिताजी 'श्रवण पितृभक्ति' नामक नाटक की एक किताब खरीद लाए थे। मैंने उसे बड़े शौक से पढ़ा। उन्हीं दिनों शीशे में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अंधे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर वे जानेवाले श्रवणकुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। मन ही मन मैंने कहा – मैं भी श्रवण कुमार की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक भी देखा बार-बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चन्द्र के सपने आते। बार-बार मन में यह बात उठती कि सभी हरिशचन्द्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें। यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चन्द्र की तरह दुःख उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

जब मैं केवल तेरह वर्ष का था, तभी मेरा विवाह कस्तूरबा के साथ हो गया था। मगर मेरी पढ़ाई चलती रही। पांचवी और छठी कक्षा में तो छात्रवृत्तियाँ भी, मिली थी। अपने आचरण की ओर मैं बहुत ध्यान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरे आँखो में आँसू भर आते। शिक्षक का कुछ कहना ही मेरे लिए असत्य हो जाता। अपने से बड़ों तथा शिक्षकों का अप्रसन्न होना मुझसे सहन नहीं हो पाता था। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी भी किसी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। सैर करना भी एक तरह का व्यायाम ही है। इससें मेरा शरीर मजबूत हो गया।

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरुरत नहीं यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैंड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर, देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया, परन्तु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है?

सुलेख शिक्षा का जरुरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो सकते हैं।

मेरे संस्कृत शिक्षक काम लेने में सख्त थे। फारसी के शिक्षक नरम थे। विद्यार्थी आपस में बाते करते कि फारसी बड़ी सरल है। यह सुनकर मैं ललचाया और एकदिन फारसी की कक्षा में जा बैठा। यह देखकर संस्कृत शिक्षक ने मुझे बुलाया और समझाया तुम्हें संस्कृत समझने में कोई कठिनाई हो तो मुझे बताओ। मैं तो सभी विद्यार्थियों को अच्छी तरह संस्कृत पढ़ाना

चाहता हूँ। आगे चलकर उसमें रस ही रस है। देखो हिम्मत न हारो। तुम फिर कक्षा में आकर बैठो। मैं उन शिक्षक के प्रेम के कारण इन्कार न कर सका। आज भी मैं उनका उपकार मानता हूँ क्योंकि आगे चलकर मैंने समझा कि संस्कृत का अच्छा अद्यायन किये बिना न रहना चाहिए।

मैं हाईस्कूल में मन्दबुद्धि का विद्यार्थी नहीं माना जाता था। पर जहाँ तक याद है मुझे कभी अपनी होशियारी का गर्व नहीं रहा। इनाम या छात्रवृत्ति पाने पर मुझे आश्चर्य होता था। लेकिन अपने आचरण की मुझे बड़ी चिंता रहती थी। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो जिसके लिए कोई मुझे दंड दे, यह मेरे लिए असहय था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दु:ख न था पर मैं दंड का पात्र समझा गया। इस बात का बड़ा दु:ख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है। दूसरी बात उस समय की है जब मैं सातवीं कक्षा में था। उस समय के हमारे हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे। फिर भी वे विद्यार्थियों के प्रिय थे, वे स्वयं ठीक काम करते और दूसरों से भी ठीक काम लेते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के विद्यार्थियों के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिये थे। मेरा मन इनमें नहीं लगता था। खेलना अनिवार्य होने के पहले तो मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट या फुटबॉल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ नहीं जाने में मेरा संकोची स्वभाव भी एक कारण था। अब मैं मानता हूँ कि व्यायाम के प्रति अरुचि, मेरी गलती थी। उस समय मेरे मन में यह गलत विचार घर किए हुए था कि व्यायाम का शिक्षा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत जरुरी है। व्यायाम में अरुचि का दूसरा कारण था पिताजी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल बन्द होते ही तुरंत घर पहुँच उनकी सेवा में लग जाता। अब व्यायाम अनिवार्य होने से इस सेवा में विघ्न पड़ने लगा। मैंने पिताजी की सेवा के लिए व्यायाम से छुटकारा पाने का प्रार्थना पत्र दिया पर हेडमास्टर साहब कब छोड़ने वाले थे।

एक शनिवार को स्कूल सबेरे का था। शाम के चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल थे। इससे समय का पता न चला। बादलों से धोखा खा गया। जब पहूँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी, बता दी। उन्होंने उसे माना नहीं और मुझे एक या दो आना, ठीक से याद नहीं कितना दंड देना पड़ा। मैं झूठा बना। मुझे भारी दु:ख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ, यह कैसे सिद्ध करुँ? कोई उपाय न था। मैं मन मारकर रह गया। रोया। बाद में समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए।

शब्दार्थ : सत्यप्रिय = सत्य से प्रेम करने वाला। धार्मिक = धर्म से जुड़ा, धर्म को मानने वाला। सत्यवादी = सत्य बोलने वाला। पितृभक्त = पिता के प्रति भक्ति। छात्रवृत्ति = वजीफा। आचरण = चाल चलन। असहय = जो सहन नहीं होता है। स्वास्थ्य = सेहत। व्यायाम = कसरत। अध्ययन = पढ़ना। अनुशासन = नियंत्रण। अनिवार्य = जरुरी। विघ्न = बाधा, रुकावट। अरुचि = रुचि न होना, मन के प्रतिकूल ।

अभ्यास प्रश्नमाला

प्रश्न :- लघुत्तरीय प्रश्न:

(i) अपने से बड़ें और शिक्षकों की अप्रसन्नता गाँधीजी से क्यों सहन नहीं होती थी?

(ii) व्यायाम में अरुचि का कारण क्या था?

(iii) गाँधीजी ने अन्त में क्या सोचा?

(iv) गाँधीजी के बारे में दस वाक्य लिखिए।
(v) गाँधीजी को किन-किन बातों का दु:ख था ?
(vi) सच बोलने वाले को कैसे रहना चाहिए ?

रचनात्मक एवं बोधगम्य प्रश्न :-

(i) गाँधीजी के चारित्रिक विशेषता का उल्लेख कीजिए।
(ii) गाँधीजी में आज्ञा एवं सेवा भाव था — उदारहण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
(iii) गाँधीजी का अपने संस्कृत शिक्षक के बारे में क्या विचार था ?
(iv) ''इनाम या छात्रवृत्ति पाने पर मुझे आश्चर्य होता था।''
(क) प्रस्तुत पंक्ति के पाठ का नाम क्या है ?
(ख) किसे क्यो आश्चर्य होता था ? स्पष्ट कीजिए।
(ग) यह किस विधा की रचना है ?

ईदगाह

प्रस्तावना :- 'ईदगाह' प्रेम चन्द की प्रसिद्ध एवं चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने आर्थिक विषमता को दिखाया है, साथ ही प्राशासनिक व्यवस्था पर भी व्यंग किया है। प्रस्तुत कहानी में बाल मनोविज्ञान का चित्रण भी किया गया है। प्रस्तुत कहानी में एक गरीब, मातृ-पितहीन बालक का अपने दादी के प्रति प्रेम को दिखाया गया है। वह मेले में जाता है। वहाँ मिठाइयाँ झूले, खिलौने से आकर्षित न हो कर अपनी दादी के लिए चिमटा लाता है। जो उसके त्याग को दर्शाता है। प्रस्तुत कहानी में सहधर्मिता, सहयोगिता के साथ-साथ सामाजिक गुणों का भी चित्रण किया गया है।

उद्देश्य :- (i) बालकों में धर्मनिरपेक्षता, सद्भाव, सहधर्मिता, सहयोगिता एवं सामाजिक गुणों का विकास करना।

(ii) विराम, शुद्धता, शीघ्रता से वाचन कर पायेगा।

(iii) शब्दबोध एवं अर्थबोध के साथ वाचन कर पायेगा।

(iv) पढ़ने-लिखने की क्षमता के विकास के साथ ही तत्कालीन समाज की समझ होगी।

ईदगाह

प्रेमचन्द

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आयी है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर सूई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गये हैं। उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी पानी दे दें। ईहगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जायेगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना भेंटना। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। इन्हें गृहस्थी की चिन्ताओं से क्या प्रयोजन। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों से अनगिनत चीजें लायेंगे - खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या क्या। और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीबसूरत, दूबला-पतला लड़का जिसका बाप गत वर्ष हैजे को भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है पर उतना ही प्रसन्न हैं। हामिद के पाँव में जूते नहीं है, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है जिसका गोट काला पड़ गया है। अभागिन, अमीना कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। आज आबिद होता तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती। इसी अंधकार और निराशा में डूबी जा रही थी। किसने बुलाया इस निगोड़ी ईदको घर में उसका काम नहीं है, लेकिन हामिद। उसे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब ? उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आये, हामिद की आन्नद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है - तुम डरना नहीं अम्माँ, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा था। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ, जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है ? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे। उस भीड़ भाड़ में बच्चा कहीं खो जाय तो क्या हो। नहीं अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्हीं सी जान ! तीन कोस चलेगा कैसे। पैर में छाले पड़ जायेंगे। जूते भी तो नहीं है। वह थोड़ी थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवइयां कौन पकायेगा। पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। अब तो कुल दो आने ही बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में पाँच अमीना के बटुवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार ! अल्लाह ही बेड़ा पार लगा दे। बच्चे को खुदा सलामत रखे ये दिन भी कट जायेंगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सब के सब दौड़कर आगे निकल जाते फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथवालों का इन्तजार करते। ये लोग क्यों इतना धीरे धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरो में तो जैसे पर लग गये हैं। वह कभी थक सकता है। शहर का दामन आ गया।

बड़ी बड़ी इमारतें आने लगी, यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब घर है। इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे ? सब लड़के नहीं है जी। बड़े बड़े आदमी हैं, सच उनकी बड़ी बड़ी मूंछे हैं। इतने बड़े हो गये अभी तक पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर।

आगे चलें, हलवाइयों की दुकानें शुरु हुई। आज खूब सजी हुई थी। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है। देखो न एक एक दुकानों की कतार लगी हुई है।

आगे चलें। यह पुलिस लाइन है। यही सब कानिसटिबल कवायद करते हैं। रात को बेचारे घूम-घूमकर पहरा देते हैं। अब बस्ती घनी होने लगी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नजर आने लगी। एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुये। कोई इक्के टांगे पर सवार कोई, बस से, सभी के दिलों में उमंग है। ग्रामीणों का यह छोटा सा दल अपनी विपन्नता से बेखबर संतोष और धैर्य से मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीजे अनोखी थी। जिस चीज की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे से बार-बार हार्न की आवाज आने पर भी नहीं ताकते। हामिद तो मोटर के नीचे आते-आते बचा।

सहसा ईदगाह नजर आया। ऊपर से इमली के घने वृक्षों की छाया, नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम विछा हुआ है और रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं, पक्के जगह के नीचे तक, जहाँ जाजिम नहीं है। नये आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गये।

नमाज खत्म हो गयी। लोग आपस में गले मिल रहे है। तब मिठाई और खिलौने की दूकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट, छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओं और पच्चीस चक्करों का मजा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास है। अपने कोष का तिहाई जरा सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दूकानों की कतारें लगी हुई हैं। तरह-तरह के खिलौने हैं-सिपाही, गुजरिया, वकील, भिश्ती, धोबिन और साधू। वाह कितने सुन्दर खिलौने हैं। जैसे अब बोलना चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है। मोहसिन को भिश्ती पसन्द आया। नूरे को वकील से प्रेम है। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महंगे खिलौने वह कैसे ले ? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर चूर हो जाय। जरा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाय। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा ? वे किस काम के ?

खिलौनो के बाद मिठाईयों की दूकाने आती हैं। किसी ने रेवाड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामून, किसी ने सोहनहलवा। मजे से खा रहे हैं। हामिद उनकी विरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे है। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता ? आँखों से सबकी ओर देखता है।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की है। कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दूकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है तवे से रोटियां उतारती है तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे तो वह कितनी प्रसन्न होगी ? फिर उनकी अंगुलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जायेगी। खिलौने से क्या फायदा। व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौनों को कोई आंख उठाकर नहीं देखता। चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियां तवे से उतार लो चूल्हे में सेंक लो। कोई आग मांगने आवे तो चटपट आग चूल्हे से निकाल कर दे दो। अम्मा, बेचारी को कहाँ फुर्सत है कि बाजार आयें और इतने पैसे ही कहाँ मिलते है। रोज हाथ जला लेती है। अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेगी और कहेगी - मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हजारों दुआयें देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएगी। सारे गांव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन दुआएं देगा ? उसने दुकानदार से पूछा - यह चिमटा कितने का है ?

दुकानदार उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा – यह तुम्हारे काम की नहीं है जी।

'क्यों बिकाऊ नहीं है। तो यहाँ क्यों लाद लाये हैं ?'

'तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है ?'

'छै–पैसे लगेंगे।'

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक–ठीक पाँच पैसे लगेंगे लेना हो तो लो, नहीं तो चलते बनो'।

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा–तीन पैसे लोगे ? यह कहते हुए आगे बढ़ गया ताकि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेले वाले आ गये। अमीना हामिद की आवज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौकी।

'यह चिमटा कहाँ था ?'

'मैनें मोल लिया है।'

'कै पैसे में।'

'तीन पैसे दिये ?'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है। कि दोपहर हो गयी, कुछ खाया न पीया और ले आया क्या, यह चिमटा ? सारे मेले में तुझे और कोई चीज नहीं मिली, जो यह चिमटा उठा लाया ?

हामिद ने अपराधी भाव से कहा—दादी तुम्हारी अंगुलियां तो तवे से जल जाती थी, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। और स्नेह भी वह नहीं जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक उसमें बिखेर देती है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और कार से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सदभाव और कितना विवेक। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जस्त इसमें हुआ कैसे ? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया। दामन फैलाकर हामिद को दुआएं देती जाती और आंसू की बड़ी बड़ी बूंदे गिरती जाती थीं।

शब्दार्थ : रोजा = उपवास। विसात = औकाट। विपत्ति = संकट। सलामत = खुशहाल। चितवन = दृष्टि। चटपट = जल्दी। विध्वंश = विनाश। दामन = आंचल। इन्तजार = प्रतीक्षा। विपन्नता = गरीबी, बदहाली। धैर्य = धीरज। भिश्ती = पानी वाला, पानी भरने वाला। दुआएं = आशीर्वाद। पृथक = अलग। फायदा = लाभ। घुड़कियाँ =धमकी। सहसा = अचानक। प्रगल्भ = परिपक्व। जस्त = नियंत्रण। गद्गद् = खुश । सामग्री = वस्तु। कार = निश्चय।

अभ्यासार्थ प्रश्नमाला

प्रश्न :-

(i) रोजा क्या है ? इसे कैसे रखा जा सकता है ?

(ii) हामिद ने मिठाई क्यों नहीं खरीदा ?

(iii) संक्षेप में हामिद का चरित्र-चित्रण करें।

(iv) ईदगाह कहानी का सारांश लिखिए।

(v) ईद जैसे किसी अन्य त्यौहार पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

रचनात्मक एवं बोधगम्य प्रश्न :-

(i) ईदगाह पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(ii) अमीना के चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(iii) हामिद के ईदगाह जाते समय अमीना के दिल की क्या स्थिति होती है ?

(iv) मेले के वातावरण का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(v) हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया कैसे ?

(vi) 'मैं सबसे पहले आऊँगा' - (क) कौन कहता है ? (ख) ऐसा क्यों कहता है ? (ग) पंक्ति का प्रसंग बताइएँ।

भाषा, उपभाषा

प्रस्तावना :– इसमें हम भाषा की परिभाषा तथा उपभाषा की परिभाषा एवं भाषा–उपभाषा के सम्बन्धों सहित, उनके रूप और प्राथमिक स्तर पर आंचलिक भाषा एवं प्रामाणिक भाषा में भेद सम्बधित समस्याओं का समाधान का प्रयास किया गया है। भाषा का शिक्षण अन्य विषयों के शिक्षण की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि भाषा से न केवल विषयगत तथ्यों की ही जानकारी प्राप्त होती है अपितु इसके माध्यम से हमारा संवेगात्मक विकास होता है। हमारे बैद्धिक एवं सास्कृतिक उत्कर्ष का आधार भी भाषा ही है। इस दृष्टि से हमें भाषा एवं उपभाषा के बारे में जानना अति आवश्यक है।

उद्देश्य :– (i) भाषा के महत्व को जान सकेंगे।

(ii) उपभाषा एवं भाषा के अन्तर को समझ सकेंगे एवं दोनों का सम्बन्ध जान सकेंगे।

(iii) उपभाषा के पाँच रूपों को जान सकेंगे।

(iv) भाषा एवं उपभाषा की प्रकृति के आधार पर परिभाषित कर सकेंगे।

(v) भाषा शिक्षण की उपयोगिता एवं आंचलिक भाषा के क्षेत्र में समस्याओं को समझ सकेंगे एवं उसके समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।

व्याकरण

भाषा

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है बोलना, अत: जिह्वेन्द्रिय से उतपन्न विकारों से प्राणी जो परस्पर विनिमय करते हैं, उन सबका समग्र रूप भाषा कहलाता है। भाषा को परिभाषित करना यद्यपि अत्यन्त कठिन है, फिर भी विभिन्न भाषा शास्त्रियों के अनुसार उसे इसप्रकार परिभाषित किया गया है।

''जिन ध्वनियों के चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनकी समष्टि को भाषा कहते हैं।''

— डा० बाबुराम सक्सेना

''भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को प्रकट करते हैं। डा० भोलानाथ तिवारी

'विचारों की अभिव्यक्ति के लिए श्रव्य ध्वनि प्रतीकों का प्रयोग ही सामान्य रूप से भाषा की परिभाषा है।'

— ए० एच० गार्डीनर

भाषा शास्त्रियों की उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि तत्वत: भाषा उच्चारण-अवयवों और ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है। यह मानवीय संस्कृति की विकास यात्रा का कारण, वक्ता-श्रोता के बीच की कड़ी तथा सहज सम्बन्धों की संवाहिका है।

उपभाषा

उपभाषा को 'विभाषा' या 'प्रान्तीय भाषा' भी कहते हैं। यह 'बोली' और 'भाषा' की मध्यवर्तिनी है। वस्तुत: भाषा का साहित्यिक और परिनिष्ठित रूप ही उपभाषा की कोटि में आता है। डा० कपिल देव द्विवेदी के अनुसार जो भाषाएँ प्रान्तीय स्तर पर शासन द्वारा स्वीकृत हो जाती है और जिनमें प्रान्तीय शासन का कार्य प्रचलित होता है उनका स्तर उच्च हो जाता है और वे उपभाषा की श्रेणी में आती है।

उपभाषा भौगोलिक पृष्ठभूमि के अनुसार परिवर्तित भी होती रहती है। हिन्दी की उपभाषाओं का दक्खिनी हिन्दी, खड़ी बोली, उर्दू, रेढता-रेढती, हिन्दुस्तानी एवं हिन्दवी के रूप में परिवर्तन भौगोलिक कारणों से हुआ है।

उपभाषा के दो रूप हैं। कथित भाषा और लिखित भाषा। कथित उपभाषा के निन्नलिखित पाँच रूप हैं। - (1) अवधी (2) ब्रज (3) भोजपुरी (4) खड़ी बोली (5) मैथिली।

अवधी

अवधी पूर्वी हिन्दी की मुख्य बोली है। यह अवध प्रदेश की बोली रही है। इसके अन्तर्गत वर्तमान मैं फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, बाराबंकी सुल्तानपुर हैं। इलाहाबाद, मिर्जापूर, जौनपुर, कानपुर के भी कुछ भागों में अवधी भाषा का प्रयोग होता है।

साहित्य – अवधी का साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। हिन्दी के सूफी और रामकाव्य अवधी में ही प्राप्त होते हैं। तुलसी दास के 'रामचरितमानस' तथा जायसी के 'पद्मावत' की रचना इसी भाषा में हुई। मुल्ला दाऊद, मँझन, सबल सिंह, त्रिलोचन और आलम इसके प्रमुख मध्ययुगीन कवि रह चुके हैं।

विशेषता –(i) अवधी में संज्ञा के तीन रूप पाये जाते हैं जैसे – लरिका, लरिकवा और, लरिकौना।

(ii) अवधी में क्रिया पदों के शब्दान्त में प्राय: 'ब' का प्रयोग होता है। जैसे – देखब, कहब, करब आदि।

(iii) हिन्दी क्रिया 'है' और 'हूँ' के स्थान पर 'अहै' एवं 'बाहैं' हो जाता है।

ब्रज भाषा

मध्यकाल से ही ब्रजभाषा एक प्रमुख साहित्यिक भाषा रही है। मथुरा इस भाषा का केन्द्र है। दक्षिण में यह आगरा, भतरपुर, धौलपुर तथा करौली तक व्याप्त है। उत्तर में गुड़गाँव का पूर्वी हिस्सा ब्रजभाषा युक्त है। साथ ही दोआब, बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा तथा गंगापार तथा बरेली एवं नैनीताल के तराई क्षेत्रों तक पहुँचती है, पर शुद्ध ब्रजभाषा का क्षेत्र केवल, मथुरा, आगरा एवं अलीगढ़ है।

साहित्य – साहित्य सृजन की दृष्टि से ब्रजभाषा सबसे समृद्ध है। कृष्णभक्ति की काव्यधारा की यह प्रमुख भाषा रही है। सूरदास, नन्ददास, केशव, सेनापति, देव, मतिराम, विहारी, घनानन्द, पद्माकर आदि कवियों ने इसकी साहित्य सम्पदा को समृद्धता प्रदान की है।

विशेषता -(i) ब्रजभाषा में प्रमुख सर्वनाम 'मैं' के स्थान पर 'हौं' का प्रयोग होता है। जैसे – मैंया हौं न चरैहों गाय।

(ii) खड़ी बोली की सहायक क्रियाएँ — था, थे, थी ब्रजभाषा में — हो, हे, ही के रूप में मिलती हैं।

(iii) भविष्यकालिक प्रयोगों ब्रज्री के 'गौं' अथवा 'इह' प्रसिद्ध है।

(iv) प्राय: 'न' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है। जैसे –घोड़ा – घोड़न।

भोजपुरी

शहाबाद जिले (बिहार प्रान्त) के भोजपुर कस्बे में प्रमुख रूप से व्यवहृत होने के कारण इसका नाम भोजपुरी पड़ा। भोजपुरी का क्षेत्र बिहार के चम्पारन, सारन, शहाबाद, छपरा, सीवान, पटना तथा गोपालगंज, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, बनारस, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया तथा नेपाल की दक्षिण सीमा से छोटा नागपुर तक के विस्तृत भू-भाग पर फैली है। भोजपुरी की लिपि देवनागरी है।

साहित्य – भोजपुरी संगीतात्मक एवं कर्णप्रिय भाषा है। इसलिए इसमें लोकसंगीत की भरमार है। रामदरश मिश्र, रेणु, शिवप्रसाद सिंह तथा नागार्जुन के उपन्यासों में भोजपूरी शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। पूर्वाचल के लोकगीत— कजरी, बिरहा, फगुआ सोहर आदि इस भाषा की समृद्धि का धरोहर है।

विशेषता -(i) 'ल' और 'ड़' का प्रयोग 'र' के रूप में हो जाता है। 'पतला' का 'पातर', 'थोड़ा' का 'थोर'।

(ii) इसमें घोषीकरण की प्रवृत्ति है जैसे डाक्टर-डाक्डर।

(iii) इसमें संख्यावाची विशेषण— दू, ती, छ के स्थान पर— ठो, ठे, गो का प्रयोग होता है। जैसे – दूठो, दूगो, तीनठे आदि।

खड़ी बोली

हिन्दी की बोलियों में खड़ी बोली की सीमा सबसे दीर्घ है। अपभ्रंश साहित्य तम में इसके दर्शन होते हैं। साथ ही आदिकालीन काव्य एवं मध्ययुगीन काव्य भी इसके संस्पर्श से वंचित नहीं है। खड़ी बोली के समानधर्मी अन्य नाम हैं – कौरवी, सरहिन्दी, हिन्दुस्तानी, नगरी–हिन्दी आदि, वर्तमान में इसके लिए नई हिन्दी, हिन्दवी, रेख्ता, मानक हिन्दी, सर्जनात्मक हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी आदि नाम भी प्रयुक्त होते है। प्रारम्भ में यह बोली रामपुर, बिजनौर, मेरठ, मुरादाबाद, मुजफ्फरपुर, सहारनपुर, देहरादून आदि क्षेत्रों में ही प्रचलित थी पर आज तो यह भारत के प्रत्येक प्रान्त का प्रतिनिधित्व करती है।

साहित्य – खड़ी बोली में गद्य तथा पद्य दोनों रूपों में विपुल मात्रा में साहित्य सृजन हुआ द्विवेदी युग के साहित्यकारों की यह प्रिय भाषा रही है। बाद में पंत, निराला, महादेवी वर्मा जी ने इस भाषा को चरन रूप प्रदान किया।

विशेषता –(i) खड़ी बोली की आकारान्त इसकी विशेषता है जैसे – खाना, जाना, पढ़ना, लिखना आदि।

(ii) 'अन' प्रत्यय का प्रयोग खड़ी बोली की अन्य विशेषता है। अनदेखा, अनपढ़ आदि।

(iii) खड़ी बोली में 'न' की जगह 'ण' का प्रयोग होता है। गनेश–गणेश, गनपति– गणपति।

(iv) खड़ी बोली की आज्ञासूचक भाषिक दृष्टि से कर्कश एवं अप्रिय लगती है। जाओ, पढ़ो, खाओ, हटो आदि।

मैथिली

मिथिला क्षेत्र की बोली होने के कारण इसका नाम मैथिली पड़ा। यह पूर्वी चम्पारन मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा, पूर्णिया तथा उत्तरी संथाल परगना में बोली जाती है। इसके अलावा मालदह और दिनाजपुर में तथा भागलपुर एवं तिरहुत सब डिवीजन की सीमा के पास नेपाल की तराई में भी बोली जाती है। उतरी मैथिली, मैथिली का परिनिष्ठित रूप है जो उतरी दरभंगा तथा आस–पास के ब्राह्मणों में विशेष रूप से प्रयुक्त होती है। इसे तेरहुतिया भी कहते हैं।

साहित्य –बिहारी हिन्दी की बोलियों में केवल मैथिली ही साहित्यसम्पन्न है। 'मैथिल कोकिल' विद्यापति की रचनाएँ मैथिली भाषा में ही है। इसके अलावा उमापति, रमापति, महीपति तथा मनबोध झा इसके अन्य मुख्य रचनाकार है।

विशेषता –(i) 'ट' वर्ग की अनुनासिक ध्वनि 'ण' का मैथिली में लोप है।

(ii) मूर्धण्य 'ष' का मैथिली में उच्चारण नहीं प्राप्त होता परन्तु बंगला प्रभाव से तालव्य 'श' सुरक्षित है।

(iii) कर्ताकारक में मैथिली में कोई परसर्ग प्राप्त नहीं होता।

गद्य उपभाषा के रूप

व्यक्तिगत भावों को गद्यात्मक रूप में विभिन्न उपभाषाओं के अन्तर्गत व्यक्त करने के प्राय: दो रूप परिलक्षित होते हैं – (i) प्रामाणिक (ii) आंचलिक।

प्रामाणिक – जब विभिन्न उपभाषाओं के अन्तर्गत प्रामाणिक शब्दों का प्रयोग करके किसी विषय को व्यक्त किया जाता है तो उसे प्रामाणिक गद्य उपभाषा के रूप में ग्रहण कर सकते हैं। जैसे— तुम कहाँ जा रहें हो ?

किन्तु जब किसी वाक्य को आंचलिक भाषा के रूप में व्यक्त करते है तो 'तूँ कहाँ जात हो'? 'कोई कहाँ जात हँई'? इत्यादि रूपों में व्यक्त करता है। चूँकि आंचलिक भाषाएँ लगभग 25-30 मील की दूरी पर परिवर्तित होती जाती हैं। विभिन्न भाषाओं जैसे – अवधी, ब्रज, भोजपुरी, खड़ी बोली एवं मैथिली भाषाओं में भी आंचलिक एवं प्रामाणिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

प्राथमिक स्तर पर भाषा एवं प्रमाणिक हिन्दी भाषा में भेद

प्रस्तावना – इस इकाई में प्राथमिक स्तर पर आंचलिक भाषा एवं प्रमाणिक हिन्दी भाषा में भेद सम्बन्धित समस्याएँ एवं उनके समाधान का प्रयास किया गया है। मातृभाषा एवं अन्य भाषाओं के शिक्षण में अन्तर को स्पष्ट करते हुए मातृभाषा शिक्षण के चार क्षमताओं (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के अन्तर को समझाया गया है। शिक्षण विधि एवं पाठ पुस्तक के अन्तर को भी स्पष्ट किया गया है।

उद्देश्य :– (i) मातृभाषा शिक्षण की आंचलिक समस्याओं से अवगत हो सकेंगे तथा उसके समाधान ढुँढ़ सकेंगे।

(ii) मातृ भाषा शिक्षण को प्रभावी ढंग से अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में करा सकेंगे।

(iii) आहिन्दी भाषी एवं हिन्दी भाषी क्षेत्र में मातृ भाषा के शिक्षण के अन्तर को समझ कर उचित पद्धति अपना सकेंगे।

(iv) प्रमाणिक एवं आंचलिक साहित्यों से परिचित हो सकेंगे।

(v) विभिन्न स्तर से आने वाले बच्चों की भाषा सीखने से सम्बन्धित समस्यायों का समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।

अभ्यास प्रश्नमाला

(क) संक्षिप्त उत्तरी प्रश्नः–

(i) भाषा किसे कहते हैं? उप–भाषा एवं भाषा के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

(ii) भाषा के महत्व पर प्रकाश डालिए।

(iii) कथित उपभाषा के कितने रूप हैं। वे कौन–कौन से हैं।

(iv) अवधी, ब्रज एवं भोजपुरी किन–किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

(v) खड़ी बोली एवं अवधी किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

(vi) खड़ी बोली के विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) रचनामूलक प्रश्न :–

(i) अवधी भाषा एवं ब्रज भाषा के साहित्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(ii) खड़ी बोली एवं भोजपुरी के साहित्य एवं विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।

(iii) गद्य भाषा के दोनों रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(iv) भाषा–उपभाषा के अन्तर एवं संम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए।

(v) मैथिली भाषा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(vi) अवधी भाषा की साहित्यिक विशेषताओं का वर्णन करें।

(vii) भाषा–उपभाषा के हिन्दी शिक्षण में महत्व को स्पष्ट कीजिए।

प्राथमिक स्तर पर आंचलिक भाषा एवं प्रमाणिक हिन्दी भाषा में भेद सम्बन्धी समस्याएँ एवं उनके समाधान

हमारे देश में हिन्दी शिक्षण के दो रूप हैं, एक तो हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों में मातृ भाषा के रूप में और दूसरे अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों में जिनकी अपनी कुछ और मातृभाषा है, वह हिन्दी अन्य भाषा (द्वितीय भाषा) के रूप में पढ़ाई जाती है। लेकिन क्षेत्रीय भाषा एवं प्रमाणिक हिन्दी भाषा में भेद सम्बन्धी समस्याँए है जो निम्नलिखित हैं :-

मातृ भाषा और अन्य भाषा शिक्षण के प्रयोजन में अन्तर

हिन्दी भाषी क्षेत्रों में मातृभाषा सीखने का प्रयोजन जीवन की मौलिक आवश्यकता के रूप में लोगों उक्त भाषा का सीखना है किन्तु अन्य भाषा के रूप में हिन्दी सीखने का प्रयोजन अन्य भाषा-भाषी क्षेत्रों में हैं सामुदायिक जीवन की कुछ विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। जीवन के कुछ गिने चुने हुए क्षेत्रों में व्यवहारिक आदान-प्रदान के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है। जीवन के रागात्मक पक्ष को विकसित करने में इसका कम प्रयोग किया जाता है।

आंचलिक भाषाएँ-आसामी, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, उड़िया, तमिल, तेलगू, मराठी, पंजाबी, मलयालम कश्मीरी, गुजराती हैं। इन भाषा-भाषी अंचल में हिन्दी सिखाते समय शिक्षक के सामने यह अन्तर स्पष्ट होना चाहिए।

चारों क्षमताओं के क्रम में अन्तर

मातृभाषा सीखते समय सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना क्रम अपनाया जाता है। किन्तु अन्य अंचलों में हिन्दी सिखाते समय जो क्रम अपनाया जाता है वह इससे अलग होता है। अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी सिखाते समय भाषा का चार क्रम इस प्रकार होता है— सुनकार समझना, पढ़ना, बोलना तब लिखना। इस प्रकार के अन्तर के निम्नलिखित कारण हैं :-

(१) पुस्तक के आधार पर भाषा सीखने की प्रवृत्ति।

(२) सरल से कठिन सुत्र पर आधारित।

(३) वातावरण का अन्तर।

पाठ्य पुस्तकों की रचना में अन्तर

हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है इसलिए पाठ्य पुस्तकों का निर्माण सामान्य सिद्धान्तों के आधार पर किया जा सकता है किन्तु विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी पाठ्य पुस्तक अलग अलग होनी चाहिए। प्रत्येक अंचल में हिन्दी की एक ही पुस्तक काम नहीं दे सकती। यदि तमिल भाषी एवं बंगाल भाषी हिन्दी पढ़ना चाहता है तो दोनों के लिए पाठ्य पुस्तकें उनके क्षेत्रीय भाषा के पुस्तकों की समानताओं को ध्यान में रखते हुए करना होगा। अत: पाठ्य पुस्तक के लेखक को हिन्दी एवं अन्य भाषा दोनों का भी ज्ञान होना आवश्यक है।

अहिन्दी भाषा क्षेत्रों में हिन्दी के लिए विशिष्ट पुस्तकें लिखी जानी चाहिए। क्यों कि प्रत्येक भाषा का गठन एक सा नहीं होता।

शिक्षण विधि में अन्तर

मातृभाषा अध्यापन विधि एवं अन्य भाषा अध्यापन विधि में पर्याप्त अन्तर होता है। अन्य भाषा शिक्षण की सबसे पुरानी प्रणाली व्याकरण अनुवाद प्रणाली है। इसका प्रयोग द्वितीय एवं तृतीय भाषा सिखाने के लिए किया जाता है।

व्याकरण अनुवाद प्रणाली की व्यवहारिकता की कमी को दूर करने का प्रयास किया जाता 'प्रत्यक्ष विधि' करती है। इसमें मौलिक बातचीत पर बल दिया जाता था। इस बात की मूल स्थापन यह थी कि हम मातृभाषा, परिवार, पास-पड़ोस के लोगों से बातचीत करके सीखते हैं। अत: दूसरी भाषा भी भाषा के जानकार से बात चीत करके सीखनी चाहिए। व्याकरण की तुलना में यह पद्धति अधिक उपयोगी है।

मातृभाषा एवं अन्य भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के स्तर में अन्तर

अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी का जो स्तर होगा वह हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों में नहीं होगा। मातृभाषा के रूप में हिन्दी का स्तर ऊँचा होगा, जबकि अन्य भाषा का इतना ऊँचा नहीं होगा। साधारणत: अहिन्दी क्षेत्रों में चौथी कक्षा से हिन्दी पढ़ाया जाता है। जबकि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रथम कक्षा से पढ़ाया जाता है। अत: मातृभाषा के रुप में हिन्दी शिक्षण के स्तर एवं अन्य भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के स्तर में पर्याप्त अन्तर है। हिन्दी भाषी क्षेत्र के ८वीं कक्षा का स्तर अहिन्दी भाषी क्षेत्र में ११वीं के बराबर होगा।

अभ्यासार्थ प्रश्नवली

लघु उत्तरीय प्रश्न:-

(i) हमारे देश में हिन्दी शिक्षण के कितने रूप हैं?

(ii) मातृभाषा क्या है?

(iii) मातृभाषा शिक्षण की चार क्षमताएँ क्या हैं?

(iv) मातृभाषा शिक्षण हिन्दी का अहिन्दी क्षेत्रों में क्या प्रयोजन है?

रचनात्मक एवं बोधमूलक प्रश्न :-

(i) मातृभाषा और अन्य भाषा शिक्षण के प्रयोजन में क्या अन्तर है?

(ii) मातृभाषा शिक्षण, की अहिन्दी क्षेत्रों में क्या समस्यायें हैं।

(iii) हिन्दी भाषा-भाषी एवं अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों की पाठ्पुस्तकों की रचना में क्या अन्तर है।

(iv) मातृभाषा एवं अन्य भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

(v) मातृभाषा एवं अन्य भाषा के अध्यापन में क्या अन्तर है।

(vi) प्राथमिक स्तर में प्रमाणिक हिन्दी एवं आंचलिक भाषा के शिक्षण की समस्याओं के समाधान पर विचार कीजिए।

पद परिचय–विकारी एवं अविकारी

प्रस्तावना :– प्रस्तुत इकाई में पद परिचय का ज्ञान कराया गया है जिसमें विकारी एवं अविकारी शब्दों का वर्गीकरण एवं महत्व बताया गया है। वर्ण, शब्द एवं वाक्य रचना के गठन के लिए इसका ज्ञान अनिवार्य है। भाषा शिक्षण में इसका अत्यंत महत्व है।

उद्देश्य :– (i) हिन्दी शब्द भंडार के विभिन्न स्रोतों का वर्णन कर सकेंगे।

(ii) लिंग, वचन, क्रिया काल आदि की दृष्टि से विभिन्न व्यकरणिक स्थितियों में शब्द में परिवर्तन कर सकेंगे एवं वाक्य में उनका सही प्रयोग कर सकेंगे।

(iii) वाक्यों में शुद्ध पदक्रम सम्बन्धी अभ्यास कर सकेंगे।

(iv) शुद्ध वाक्य रचना कर सकेंगे।

(v) समासिक पदों को समझ सकेंगे।

(vi) विकारी एवं अविकारी शब्दों के अन्तर एवं व्यवहार सीख सकेंगे।

पद परिचय—विकारी एवं अविकारी

वाक्य सार्थक शब्दों से मिलकर बनते हैं और वाक्य में प्रयुक्त शब्द को 'पद' कहते हैं। वाक्य में आए शब्दों के विषय में जानकारी देना 'पद परिचय' कहलाता है। जैसे – 'भुवन केला खा रहा है।' वाक्य में तीन पद है। भुवन, केला और खा रहा है। इन तीन पदों का परिचय इस प्रकार है —

भुवन – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एक वचन, 'खा रहा हैं' क्रिया का कर्ता और पुलिंग।

केला – जातिवाचक संज्ञा, पुलिंग, एक वचन, खा रहा है क्रिया का कर्म।

खा रहा है – सकर्मक क्रिया, अपूर्ण वर्तमान काल, पुलिंग, कर्तृवाच्य। क्रिया जिसका कर्ता भुवन और कर्म केला है।

वाक्य में प्रयुक्त किसी एक पद अथवा सभी पदों का व्याकरण की दृष्टि से परिचय देना 'पद परिचय' कहलाता है।

शब्दों के आठ प्रकार हैं (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, सबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक) सभी विकारी–अविकारी शब्दों का पद परिचय देते समय कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(1) संज्ञा पद–परिचय : इसमें संज्ञा का भेद, लिंग, वचन, कारक एवं क्रियाके साथ उसका संबन्ध बताना चाहिए।

(2) सर्वनाम पद : इसमें सर्वनाम का भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ सम्बन्ध बताना चाहिए।

(3) विशेषण पद–परिचय :इसमें विशेषण का भेद, लिंग, वचन, अवस्था तथा जिसकी विशेषता बता रहा है — उस विशेष्य का उल्लेख करना चाहिए।

(4) क्रिया पदों का पद परिचय : क्रिया पद–परिचय करते समय उसके मुख्य दो भेद—अकर्मक और सकर्मक तथा अन्य भेद संयुक्त क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, नामधातु, क्रिया अथवा पूर्व कालिक क्रिया भी बताएँ। इसके बाद क्रिया का काल, लिंग, वचन, वाच्य तथा कर्ता, कर्म, करण आदि कारकों से सम्बन्ध भी लिखें।

(5) क्रिया विशेषण पद–परिचय : इसमें केवल दो बातें लिखनी चाहिए — (i) क्रिया विशेषण का भेद (स्थानवाचक, कालवाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक) तथा (ii) वह क्रिया जिसकी विशेषता बताई जा रही है।

(6) सम्बन्धबोधक का पद–परिचय : इसमें भी केवल दो बातों का उल्लेख करना चाहिए — (i) भेद—कालवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक, कारणवाचक, साधनवाचक, तुलनावाचक, उद्देश्यवाचक, विरोधवाचक। (ii) सम्बन्ध–सम्बन्धी शब्द।

(7) समुच्चयबोधक अथवा योजक का पद परिचय :इसमें भी मुख्य रूप से दो बातें लिखनी चाहिए।

(क) भेद–समानाधिकरण अथवा व्याधिकरण।

(ख) योजित शब्द या वाक्य – जिन्हें वह मिलता है।

(8) विस्मयादिबोधक का पद परिचय : इसमें केवल वह कौन सा भाव व्यक्त कर रहा है यह बताना होता है। जैसे अरे वाह ! गणित में शत प्रतिशत अंक मिले! इसमें हर्ष का भाव है।

समास (अविकारी)

जब संक्षिप्त करने के लिए दो या दो से अधिक शब्द मिलाकर एक नया शब्द बनाया जाता है, तब उस योग को समास कहते हैं।

मिले हुए शब्दों को समस्त पद (समास किया हुआ शब्द) कहते हैं। समास करते हुए पहले पद या पदों की विभक्तियों का अथवा 'और' अव्ययों का लोप हो जाता है, जैसे — राम का दास = रामदास, कृष्ण और अर्जुन = कृष्णार्जुन। दो से अधिक शब्दों का ही समास होता है। जैसे — तन-मन-धन, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, काशी-विद्वत-परिषद।

समस्त पद जिन शब्दों के मेल से बनते हैं, वे 'समास खण्ड' कहलाते हैं। समस्त पद के खण्ड करके उनका परस्पर सम्बन्ध दिखाने की रीति को 'विग्रह' कहते हैं अर्थात समस्त पद के सब शब्दों को पुनः पूर्ववत पृथक-पृथक करके दर्शाने को विग्रह कहते हैं, जैसे- 'राजपुत्र' = राजा का पुत्र। यहाँ समास होने पर बीच की 'का' विभक्ति का लोप हो गया है और विग्रह करने पर विभक्ति पुनः दिखलायी गयी है।

समास के मुख्य ४ भेद हैं —

(१) अव्ययी भाव (२) तत्पुरुष (३) बहुब्रीहि (४) द्वन्द्व समास।

वैयाकरणों ने 'कर्मधारय' और 'द्विगु' को तत्पुरुष समास के उपभेद के रूप में माना है।

अव्ययीभाव समास :- जिस समास में पहला खण्ड अव्यय प्रधान हो और समस्त पद से अव्यय का बोध हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। यह समास क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है। इसमें पहला पद प्रधान होता है और वह अव्यय होता है। अव्ययी भाव समास में कुछ शब्द लुप्त हो जाते हैं और उनके बदले पहले अव्यय आ जाता है। जैसे — प्रतिदिन (दिन-दिन), यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), बेखटके (खटके बिना), भरपेट (पेट को भरकर)।

तत्पुरुष समास :- जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है और पहले खण्ड के विभक्ति चिन्हों का लोप कर दिया जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे — राजा का पुत्र (राजपुत्र).

तत्पुरुष समास के दो भेद होते हैं — (१) व्यधिकरण तत्पुरुष

(२) समानाधिकरण तत्पुरुष

व्याधिकरण तत्पुरुष :- जिसमें समस्त पद का विग्रह करने पर पहले खण्ड और दूसरे खण्ड में भिन्न-भिन्न विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। जैसे - राजसभा = राजा की सभा।

इस समास के पहले खण्ड में जिस कारक की विभक्ति का लोप होता है, उस कारक या विभक्ति के नाम पर इस समास का नाम होता है। इस प्रकार विभक्तियों के आधार पर इसके छः भेद हैं :-

(१) कर्म तत्पुरुष — 'को' का लोप - स्वर्गप्राप्त (स्वर्ग को प्राप्त)

(२) करण तत्पुरुष — 'से' या द्वारा का लोप - तुलसीकृत (तुलसी द्वारा कृत)

— नीतियुक्त (नीति से युक्त)

(३) सम्प्रदान तत्पुरुष — 'के लिए' का लोप - रसोईघर (रसोई के लिए घर)

(४) अपादान तत्पुरुष — 'से' (पृथक होने के अर्थ में) का लोप - देशानिर्वासित (देश से निर्वासित)

(५) सम्बन्ध तत्पुरुष — 'का' परसर्ग का लोप - देवदास - (देव का दास)

(६) अधिकरण तत्पुरुष — 'पर' में का लोप — आपबीती (आप पर बीती)

— शोकमग्न (शोक में मग्न)

— कलाकुशल (कला में कुशल)

समानाधिकरण तत्पुरुष :- जिसमें समस्त पदों के विग्रह करने पर दोनों खण्डों में कर्ताकारक (प्रथमा विभक्ति) ही रहे। जैसे — नीलकमल - नीला जो कमल, इन दोनों पदों में एक ही विभक्ति है। समानाधिकरण तत्पुरुष का ही दूसरा नाम कर्मधारय है।

कर्मधारय :- जिसमें 'विशेषण' तथा 'विशेष्य' अथवा 'उपमान' और 'उपमेय' का मेल हो और विग्रह करने पर दोनों खण्डों मे कर्ताकारक की विभक्ति रहे उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे — रक्तकमल — रक्त के वर्ण का कमल, नीलाम्बर = नीला जो अम्बर , महाराज = महान राजा, नराधम = अधम नर, कमलनयन = कमल के समान नयन, विद्याधन = विद्यारूपी धन।

द्विगु समास :- जिस कर्मधारय समास का पहला पद संख्यावाची हो और जिसमें एक समुदाय का बोध हो उसे द्विगु समास कहते हैं । यह कर्मधारय समास का ही एक भेद है। इस समास के अन्त में कभी कभी 'ई' भी लग जाता है, जैसे —

त्रिलोकी = (तीनों लोकों का स्वामी),

चौमासा = चार मासों का समाहार

पंचतंत्र = पाँच तंत्रों का समाहार

देवत्रयी = तीन देवों का समाहार

अठन्नी = आठ आनों का समाहार

चौराहा = चार राहों का समाहार

बहुव्रीहि समास :- जिसमें समस्त शब्द का कोई भी खण्ड प्रधान नहीं होता, अपितु कोई अन्य अर्थ प्रधान हो और जिसमें वाला अर्थ पाया जाये उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। जैसे — दशानन (दस मुखों वाला)। इसमें कोई खण्ड (दश या आनन) प्रधान नहीं है अपितु इसका अर्थ 'रावण' प्रधान है। जैसे —

गजानन - गज के समान आनन वाला अर्थात गणेश।

नीलकण्ठ - नीला है कण्ठ जिसका अर्थात महादेव।

चक्रपाणि - चक्र है जिसके पाणि में अर्थात विष्णु।

गिरिधारी - गिरि को धारण करने वाला अर्थात श्री कृष्ण।

द्वन्द्व समास :–जिस समस्त पद में सब खण्ड प्रधान होते हैं और विग्रह (अलग-अलग) करने पर योजक 'और' शब्द लगता है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। जैसे —

सुख – दुःख = सुख और दुःख

जन्म – मरण = जन्म और मरण

ज्ञान – विज्ञान = ज्ञान और विज्ञान

नर – नारी = नर और नारी

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(क) संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्नः–

(i) पद परिचय से क्या समझते हो ?

(ii) शब्दों के कितने प्रकार हैं ?

(iii) समास किसे कहते हैं ?

(iv) समास के भेदों का नाम लिखिए।

(ख) रचनात्मक प्रश्न :–

(i) शब्दों के भेदों का सोदाहरण वर्णन करें।

(ii) समास के भेदों का वर्णन करें।

(iii) बहुब्रीहि और कर्मधारय समास में क्या अन्तर है ?

(iv) निम्नलिखित के समास विग्रह करते हुए समास के नाम लिखिए :–

रसोईघर, श्रमसाध्य, राजपुत्र, महावीर, पुरुषोत्तम, चन्दमुगी, प्रत्येक, हाथोहाथ, गजानन, चक्रपाणि, वीणापाणि, चौराहा, सप्तऋषि, नवग्रह, पाणीलोक, कुपुत्र, माता-पिता, सफल-असफल, राजसभा, पीताम्बर, मायालोग, कलि वर्णन।

प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के उद्देश्य एवं प्रयोजनीयता

प्रस्तावना :– इसमें हम मातृभाषा शिक्षण के उद्देस्यों को तथा लिखने एवं पढ़ने के महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करेंगे। भाषा मानव की अपनी आकांक्षाओं, वृत्तियों एवं मनोगत भावों की अभिव्यक्ति है। इसके अतिरिक्त भाषा के द्वारा ही हम एक दूसरे के भावों एवं विचारों को ग्रहण करते है। बाल मनोविकास का प्रधान साधन मातृभाषा की शिक्षा है क्योंकि बालक के सोचने, समझने, और उसके अनुभव करने का साधन उसकी मातृभाषा ही होती है। मातृभाषा ही सब विषयों, ज्ञानविज्ञान का मूल आधार होती है। अत: मातृभाषा का शिक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसी पर अन्य विषयों की पूर्णता, योग्यता और सफलता निर्भर है तथा उसी पर शिक्षा की सफलता आधारित है।

उद्देश्य :– (i) मातृभाषा की मूल अवधारणा स्पष्ट कर सकेंगे।

(ii) बालक की शिक्षा एवं उसके व्यक्तित्व के विकास में मातृभाषा के स्थान का निरूपण कर सकेंगे।

(iii) भाषा के ज्ञानात्मक, सौन्दर्य बोधात्मक, सृजनात्मक, अभिरुच्यात्मक तथा अभिवृत्यात्मक का वर्णन कर सकेंगे।

(iv) भाषा कौशलों के विकास से शिक्षार्थियों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तनों की व्याख्या कर सकेंगे।

(v) त्रिभाषा सूत्र के सन्दर्भ में वर्तमान विद्यालयों पाठ्यचर्या में हिन्दी भाषा का स्थान निर्धारित कर सकेंगे।

(vi) प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण एवं द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे।

प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य एवं प्रयोजनीयता

इस स्तर पर ६+ वर्ष के उम्र के बालक आते हैं और ११+ वर्ष तक अर्थात पूरे ५ वर्ष तक रहते है। प्राथमिक स्तर की समाप्ति तक इन्हें मातृभाषा में चलने वाले लगभग सभी वाक्य साँचों से परिचित हो जाना चाहिए। उन्हें प्रतिदिन मातृभाषा पढ़ने का अवसर मितला है, अन्य विषय भी उन्हें मातृभाषा के माध्यम से ही पढ़ाये जाते हैं। साधारणत: वे इस स्तर पर कोई भी विदेशी भाषा नहीं पढ़ते। किन्तु अब कुछ प्रदेशों में कक्षा १ से भी अंग्रेजी पढ़ाई होती है। इस स्थिति और आवश्यकताओं को देखते हुए प्रथामिक स्तर पर निम्न उदेश्य होने चाहिए –

1) वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों के उच्चारण में शुद्धता उत्पन्न करना।
2) अवशिष्ट वाक्य साँचों पर प्रयोगाधिकार करना।
3) विचारों तथा शब्दों, लोकोक्तियों, सूक्तियों, कथाओं तथा गीतों के कोष का क्रमश: विस्तार करना।
4) चिन्तन में क्रमश: संगतता एवं क्रमबद्धता उत्पन्न करना।
5) वाचन एवं कविता पाठ में गति, शुर्द्धता एवं अभीष्ट प्रभावोत्पादकता का विकास करना।
6) समुचित गति के साथ शुद्ध स्पष्ट एवं सुन्दर लेख लिखने का अभ्यास करना।
7) आवश्यक भाषायी शिष्टाचार का व्यवहारिक परिचय प्रदान करना।
8) स्तरोचित मौखिक और लिखित रचना विधाओं की प्रविधियों पर अधिकार करना।
9) वाक्य में प्रयुक्त शब्द रूपों की शुद्धता और अशुद्धता समझने की स्तरोचित योग्यता उत्पन्न करना।

मातृ भाषा एक आधारभूत भाषा है। जिसके कुशलतापूर्वक अध्ययन एवं अध्यापन का सम्पूर्ण शिक्षा पर असर पड़ता है। भाषा शिक्षण जीवन का अनिवार्य आधार है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मातृभाषा का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है। मातृभाषा शिक्षण का माध्यम है। किसी विद्वान ने मातृभाषा शिक्षण को पाठ्क्रम में प्रमुख स्थान देते हुए लिखा है — " मातृभाषा का सफल शिक्षण सम्पूर्ण शिक्षा का आधार है।"

मातृभाषा शिक्षण बालकों के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण भाग को विकसित करता है। बालकों के बौद्धिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास में उसकी भाषा क्षमता का बहुत बड़ा हाथ है। बालकों के संवेगों एवं स्थायी भावों का भी मातृभाषा से घनिष्ठ सम्बन्ध है। राइबर्न के कथनानुसार व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिए मातृभाषा शिक्षण अनिवार्य है।
" बौद्धिक विकास, ज्ञानवृद्धि, आत्मअभिव्यक्ति और रचनात्मक शक्ति का विकास एवं उन्नति मातृभाषा के ज्ञान के विना संभव नहीं है।"

अभ्यसार्थ प्रश्नावली

(क) लघु उत्तरीय प्रश्नः-

(i) प्राथमिक स्तर पर बच्चों की उम्र कितनी होती है ?

(ii) मातृभाषा के शिक्षण का बालकों के ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(iii) मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्यों को संक्षेप में लिखिए।

(iv) मातृभाषा की मूल अवधारणा क्या है ?

(ख) विचारात्मक एवं रचनात्मक प्रश्न :-

(i) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षक की प्रयोजनीयता स्पष्ट कीजिए।

(ii) मातृभाषा के शिक्षण की प्रयोजनीयता को सिद्ध करने में शिक्षक की क्या भूमिका होगी ?

(iii) मातृभाषा का शिक्षण बालकों में किन-किन गुणों का विकास करता है ?

(iv) प्रथम भाषा के रूपमें हिन्दी एवं द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी के शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

प्राथमिक शिक्षण में —

सुनने, लिखने व पढ़ने का महत्व

प्रस्तावना : प्राथमिक शिक्षण में सुनने, लिखने एवं पढ़ने के महत्व को दर्शाया गया है। बालकों के उच्चारण अभ्यास पर बल दिया गया है। बालकों के उच्चरित एवं मौन वाचन के महत्व को स्पष्ट किया गया है, साथ ही लिखने का अभ्यास एवं लिखते समय विराम चिन्हों के महत्व को स्पष्ट किया गया है। बोलते, पढ़ते, लिखते समय विराम चिन्हों की रीति पर जोर दिया गया है।

उद्देश्य :- (i) बालक शुद्ध, स्पष्ट, स्वाभाविक एवं प्रवाहयुक्त वाणी में वार्तालाप एवं भाषण करने की क्षमता अर्जित कर सकेंगे।

(ii) भावानुकूल आरोह-अवरोह बल और अनुतान का ध्यान रखते हुए मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे।

(iii) सस्वर पठन तथा मौन पठन के स्वरूप और उद्देश्य को समझते हुए उनमें अन्तर कर सकेंगे।

(iv) शिक्षार्थी पठन अभिरुचि के विकास के उपायों का निरूपण कर सकेंगे।

(v) पठन सम्बन्धी त्रुटियों को जानकर निराकरण कर सकेंगे।

(vi) लेखन के महत्व एवं उसकी प्रक्रिया का उल्लेख कर सकेंगे।

(vii) अनुलेख, श्रुतलेख, स्वतंत्र लेख के अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे।

(viii) पत्र लेखन, निबन्ध लेखन, कहानी लेखन, भाव पल्लवन तथा सार लेख का क्रम का निर्धारण कर सकेंगे।

भाषा शिक्षण के विभिन्न स्तर —

सुनना – प्राथमिक शिक्षण में सुनने का महत्व

प्रत्येक बालक भाषा सीखता है वयस्कों द्वारा भाषा को बोलते हुए सुनता है और प्रारम्भ में अनुकरण द्वारा कभी-कभी क्रियाविहीन वाक्य बोलने लगता है। वास्तव में ये भाषा ज्ञान एक शब्द ज्ञान से ही प्रारम्भ हो जाता है। बालक द्वारा 'पानी' 'खाना' कहने से ही वयस्क समझ जाते है कि वह क्या चाहता है। ये एक शब्द वाची सार्थक वाक्य उसने वयस्कों द्वारा बोले जाने पर सुने और सुनकर सीखे हैं। भाषा सीखने का यह एक स्वाभाविक क्रम है। यदि दुर्भाग्यवश किसी बालक का वयस्कों से यह सम्पर्क टूट जाय तो वह भाषा नहीं सीख पायेगा। किसी बच्चे को पशु उठाकर ले गया और वह इस सम्पर्क से वंचित हो गया, निरीक्षण करने पर विदित हुआ कि बालक का भाषा ज्ञान शून्य है, वह पशुवत आचरण करने लगा। प्रत्येक विद्यार्थी में सुनने की क्षमता का विकास अत्यन्तावश्यक है, विशेषरूप से प्रजातान्त्रिक समाज में। प्रजातन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति के विचार बहुमूल्य है प्रत्येक वयक्ति के विचारों का आदर होना चाहिए जिसके लिए वैचारिक स्तर पर उदारता व सहिष्णुता नामक गुणों की आवश्यकता है। अपने विरोधियों के विचारों को भी ध्यानपूर्वक सुनना उदारता व सहिष्णुता के साथ और विनम्रता के साथ विरोधी व प्रतिकूल मत का स्वागत करना। 'एक अच्छा श्रोता ही एक अच्छा वक्ता हो सकता है'। जो ध्यान से सुनने की कला में प्रवीण नहीं वे विरोधियों के तर्क का खण्डन नहीं कर सकते। बालक जब तक शान्त रहकर सुनेगा नहीं, तो वह समझ नहीं सकता और समझ में न आने के कारण उचित भाषा नहीं सीख सकता। प्राय: यह वाद -विवाद प्रतियोगिताओं या परिसंवाद में देखने को मिलता है। कुछ लोग अपनी ढपली अपना राग अलापते रहते हैं।

लिखना – आदर्श कथन

पाठशाला में प्रवेश करते ही बालक को वर्णमाला लिखवाने प्रारम्भ कर देना वास्तव में शिक्षक की दूषित समझदारी का परिणाम है। बालक को लिखाना तभी प्रारम्भ करना चाहिए जब कि वह अपनी माँसपेशियों पर नियंत्रण रखना सीख चुका हो। लिखने की प्रथम सीढ़ी चित्रकारी है। महात्मा गाँधीजी ने भी इस बात का समर्थन किया है कि 'लिखना सिखाने के पूर्व बालकों को चित्रकला सिखाना चाहिए क्योंकि अक्षर भी चित्र ही है।'

अत: प्रारम्भिक कक्षा में बालकों के कद के अनुसार नीचे श्यामपट लटका देना चाहिए। जिसपर बालक स्वेच्छापूर्वक मनमाने ढंग से लकीरे खीचता रहे। टेढ़ी मेढ़ी लकीरे खींचते खींचते बालक फिर छोटे मोटे चित्र बनाने लगते हैं। लिखने के लिये तैयार करने के लिए बालकों की कुछ शक्तियों का विकास शिक्षक को करना चाहिए। जैसे निरीक्षण शक्ति का विकास, लिखने की ओर रुचि उत्पन्न करना, लिखने एवं स्नायु के बीच सहयोग स्थापित करना एवं उनकी क्रियात्मक शक्तियों का विकास करना ताकि थोड़ा सा ही काम करने से हाथ थकने न पायें।

विद्यार्थियों को पहले पढ़ना सिखाना चाहिए या लिखना यह एक विवाद का विषय है। मैडम मांटेसरी के अनुसार बालक को पढ़ने से पहले लिखना सिखाना चाहिए क्यों कि पढ़ने की क्रिया कठिन है। लेकिन इस मत पर मतभेद है। वास्तव में मध्य मार्ग ही ठीक है। दोनों क्रियायें साथ-साथ चलनी चाहिए क्योंकि दोनों एक दूसरे पर आश्रित है। दोनों का अभ्यास साथ होने से कर्मेन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रिय में सांमजस्य स्थापित होता है।

भूल रहित वर्णों एवं शब्दों के उच्चारण का अभ्यास एवं गठन

उच्चारण के छः तत्वों से सम्बन्धित अध्यापन करना जैसे अक्षर–व्यक्ति उचित ध्वनि निर्गम स्थान, बलाघात व स्वराघात, विश्राम, सुरलहर और गति व ताल इत्यादि। बालकों को ध्वनि यन्त्रों का भी ज्ञान कराना चाहिए।

कठिन शब्दोच्चारण अभ्यास

पाठ्य पुस्तक पढ़ाते समय विशेष रुप से गद्य शिक्षण में कठिन शब्दोच्चारणाभ्यास कराना चाहिए। शब्दोच्चारणाभ्यास आवृत्ति अभ्यास समवेत स्वर में भी करवाया जा सकता है व व्यक्तिगत रुप से भी। यदि विद्यार्थी उच्चारण में त्रुटि करता है तो तुरन्त अन्य छात्रों की सहायता से या स्वयं उसका संशोधन करना चाहिए।

हिन्दी की विशेष कठिन ध्वनियों का अन्तर समझाना

विशेष रुप से उम्र ध्वनियों के बारे में अध्यापन कराना जिनमें भ्रम की संभावना अधिक है, जैसे न और ण, स, श और ष व और ब, ड और ड़, ड़ और ढ़, ढ और ढ़ छ और क्ष आदि। इन कठिन स्थलों से सम्बन्धित मालायें तैयार की जा सकती है। अभ्यास हेतु आवृत्ति और पुनरावृत्ति के नियम का पालन करना चाहिए ताकि विद्यार्थी उच्चारण की शुद्धता को आत्मसात कर ले। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रणाली है। उदाहरणार्थ –

न और ण का भ्रम दूर करने के लिए –

न	ण
अभिमान	रामायण
वर्तमान	साधारण
भगवान	कल्याण
अपमान	व्याकरण

श और ष के भ्रम हेतु –

श	ष
उपदेश	पुरुष
शोकाकुल	वर्षा
शकुन्तला	ऋषि

व और ब के भ्रम हेतू –

व	ब
केवल	बहुत
वन	बात
वर्षा	बल

छ और क्ष के भ्रम हेतु –

छ	क्ष
छात्र	कक्षा
छपाई	शिक्षा
छवि	भिक्षा

ड और ड़ के भ्रम हेतू

ड	ड़
पंडित	पड़ोस
निडर	पड़वा
डरपोक	पड़ाव
डगमग	पड़पोता

ड़ और ढ़ के भ्रम हेतु –

ड़	ढ़
हड़बड़ाना	पढ़ना
लड़ाई	कढ़ाई
पतझड़	उढ़ाना

शब्द विश्लेषण विधि द्वारा

समास, संधि, प्रत्यक्ष व उपसर्ग से निर्मित बड़े-बड़े शब्दों का विश्लेषण कर के खंड खंड का उच्चारण कराया जाय तत्पश्चात सम्पूर्ण शब्द का उच्चारण कराया जाय। इससें कठिन से कठिन शब्दों का उच्चारण विद्यार्थी शुद्ध रुप से करने लगते हैं। उदाहरणार्थ -

साष्टांग = स + अष्ट + अंग
सम्मिलित = सम + मि + लि + त
प्रारम्भिक = प्रा + रम + भिक
अन्तर्राष्ट्रीयता = अन्तर + राष्ट्रीय + ता

इकार सम्बन्धी अशुद्धियों के निवारण हेतु

अधिकांश विद्यार्थी इस प्रकार की अशुद्धियाँ उच्चारण में करते हैं। उच्चारण अभ्यास मालाओं का निर्माण कर छात्रों को बुलाकर आवृत्ति-पुनरावृत्ति द्वारा शुद्धोच्चारण कराना परम आवश्यक है।

ऋ	प्र	ट्र	र्श
वृक्ष	प्रणाम	राष्ट्र	आदर्श
कृष्ण	प्रताप	अन्तर्राष्ट्रीय	प्रार्थना
कृपा	प्रकरण	हाइड्रोजन	पार्थिव
मातृभाषा	प्रसंग	ड्रम	आर्थिक
गृह	प्रांगण	मिलिट्री	कार्यालय

अक्षर की बारह खड़ी का अभ्यास

उच्चारण की दृष्टि से अक्षर की बारह खड़ी का अभ्यास कराया जाय ताकि बालक की अक्षर व्यक्ति स्पष्ट हो सके। उदाहरणार्थ -
क - क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
ख - ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
ग - ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
घ - घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः

स्वराघात सुस्वरता, बल, विराम व गति

इनसे सम्बन्धित अशुद्धियों का निराकरण भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। बोलते या पढ़ते समय यदि इन समस्त बातों का ध्यान नहीं रखा जायेगा तो उच्चारण की शुद्धता नहीं बनी रहेगी। शिक्षकों को चाहिए कि शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ बल, विराम, गति व प्रवाह पर भी ध्यान दें।

उच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन

प्रत्येक हिन्दी शिक्षकों का कर्तव्य है कि कभी-कभी कक्षा में शब्द प्रतियोगिताओं का आयोजन करें। प्रतियोगिता इस प्रकार हो सकती है। सम्पूर्ण कक्षा को तीन टुकड़ियों में बाँट दिया जाय। अन्त्याक्षरी की भाँति ही इसका संचालन किया जा सकता है। कुछ शब्द उनकी पाठ्पुस्तक से छाटकर पर्ची पर लिख दिया जाय, बच्चे पर्ची उठाते जायँ व उच्चारण करते जायँ जिस दल के विद्यार्थी सर्वाधिक अंक पायें उन्हें विजयी घोषित किया जाय।

इन सब के अलावा बालक से कक्षा में कविता पाठ, बादविबाद कहानी, कथन, कथोपकथन एवं गद्यांश पाठ करवायें एवं उपर्युक्त बातों का ध्यान रखते हुए संशोधन करें।

पढ़ना - आदर्श पठन की विशेषता

पठन एक कला है कौशल है। पठन केवल पुस्तक को पढ़ना मात्र नहीं है बल्कि उसको पढ़कर समझना और उसका अर्थ ग्रहण करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पठन की परिभाषा इस प्रकार है-

पूर्वश्रुत ध्वनियों के प्रतीक लिपिबद्ध शब्दों को पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया को पठन कहते हैं।

बालकों को स्वर के उतार चढ़ाव का ऐसा अभ्यास कराना चाहिए कि वे गद्य, पद्य, नाटक आदि का वाचन यथावसर भावों के अनुकूल स्वरों में लोंच देकर कर सकें।

ज्ञानोपार्जन के साथ साथ वाचन के प्रति रुचि उत्पन्न करके विद्यार्थी को साहित्य-प्रवेश करवाना ताकि वह वाचन का सदुपयोग रचनात्मक कार्यों में कर सके।

वाचन के तीन भेद हैं - (i) सस्वर वाचन (ii) मौन वाचन (iii) अध्ययन

उच्चरित पठन की विशेषता :-

(i) **अक्षर व्यक्ति :-** इसको स्पष्ट अक्षरोच्चार भी कहा जाता है। अर्थात एक-एक अक्षर को शुद्ध, तथा स्पष्ट रीति से उच्चारित स्वराघात एवं बलाघात के साथ उच्चारित करना।

(ii) **शब्दोचारण :-** प्रत्येक शब्द को शुद्ध रुप से उच्चरित करना।

(iii) **बल :-** प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से पृथक करते हुए उचित बल के साथ सस्वर वाचन अधिक प्रभावशाली होता है।

(iv) **स्वर माधुर्य :-** भावों और विचारों के साथ शब्दों के उतार चढ़ाव के साथ सुमधुर वाणी में पढ़ना जिससे एक अक्षर स्पष्ट सुनाई दे सके।

(v) **उचित गति :-** गति का ध्यान रहे अधिक तीव्र या अधिक मन्द गति दोनों से बचकर सामान्य व उचित गति के साथ पढ़ना चाहिए।

(vi) **पठन मुद्रा :-** पठन करते समय पाठक की मुद्रा ठीक होनी चाहिए। पुस्तक को केवल बाँये हाथ से इसप्रकार पकड़ना चाहिए कि पुस्तक थोड़ी बायीं ओर की तरफ ही हो पुस्तक के बीच के मोड़ पर अंगूठा आ जाय। केवल दीर्घ आकार की पुस्तक को दोनों हाथों से पकड़ना चाहिए। वाचन करते समय इधर - उधर न घूमें चेहरा उदासीन न रखें। पठन प्रसन्नचित मुद्रा में आत्मविश्वास के साथ स्वाभाविक स्वर में करें।

मौन वाचन के उद्देश्य

(i) बालकों में चिन्तन एवं तर्क शक्ति का विकास किया जा सकता है।

(ii) अधिक छात्रों की कक्षा में अवकाश के समय का सदुपयोग कर सकें।

(iii) यात्रा के समय या एकाकी क्षणों का सदुपयोग कर सकें।

(iv) बालक अपना ध्यान विषय वस्तु पर केन्द्रित कर सकें।

(v) किसी अन्य को बिना बाधा पहुँचाये अध्ययन कर सकें।

(vi) बालक कम से कम समय में अधिक से अधिक सामग्री को आत्मसात करके समय का सदुपयोग कर सकें।

(vii) एकाग्रता बढ़ती है एवं अर्थ बोध की क्षमता बढ़ती है।

उच्चरित एवं शान्त पठन की पद्धति

पठन की चार अवस्थायें हैं –

(1) **प्रथमावस्था तैयारी :–** इस अवस्था में पढ़ना सिखाया नहीं जाता बल्कि पढ़ने की तैयारी हेतु कुछ कार्य करवायें जाते हैं, जैसे – सम्भाषण, मौखिक कार्य, चित्रों के प्रयोग द्वारा उत्सूकता,रुचि तथा एकाग्रता उत्पन्न करना।

(2) **द्वितीय अवस्था –अक्षर ज्ञान :–** इस अवस्था में विविध प्रणालियों द्वारा अक्षर ज्ञान करवाया जाता है ध्वनि और लिपि में सहसम्बन्ध स्थापित कर के लिपि ज्ञान कराया जाता है।

(3) **तृतीय अवस्था –स्वतंन्त्रवाचन अवस्था :–** इसमें बालक स्वतंन्त्र रुप से पठन करने लगता है कहानी, नाटक कविता पढ़कर समझ लेता है व पढ़कर आनन्द प्राप्त करता है।

(4) **चतुर्थ अवस्था–निर्बाध अर्थ सहित वाचन :–** बालक निर्वाध रीति से बिना अटके, बिना किसी कठिनाई और दोष के पढ़ते चला जाता है। पढ़कर सारांश भी समझ लेता है।

पठन या पढ़ना सिखाने के लिए यदि हम मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनायें तो अधिक न्यासंगत होगा। पढ़ना सिखाने के लिए चाहे जिस विधि का उपयोग किया जाय किन्तु सदैव "सरल और जटिल की ओर" नामक शिक्षण सुत्र का पालन करना चाहिए। पहले सरल वाक्य फिर बाद में कठिन वाक्य।

अतिरिक्त पढ़ना सिखाने के लिए मनोवैज्ञानिक से तार्किक क्रम की ओर बढ़ना चाहिए। मनोवैज्ञानिक क्रम का तात्पर्य है बालक की रुचि, आयु, जिज्ञासा एवं ग्रहण शक्ति के अनुसार विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण। तार्किक क्रम का अर्थ है विषय वस्तु को तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करना। मनोवैज्ञानिक क्रम में पढ़ना वाक्य से शुरु होना चाहिए क्योंकि बालक की रुचि सार्थक शब्दों में होती है। किन्तु प्राचीन काल के वैज्ञानिक तार्किक क्रम को महत्व देते है क्योंकि इसमें पहले वर्ण ध्वनि फिर शब्द अन्त में वाक्य पठन सिखाया जाता है। वाचन या पठन शिक्षण की कई विधियाँ है जो इस प्रकार हैं–

(1) **वाक्य शिक्षण विधि :–** इस विधि में शब्दों की अपेक्षा वाक्यों से शुरु किया जाता है क्योंकि वाक्य ही बालक के सोचने की इकाई होती है। इस विधि को कहानी या कविता विधि भी कहते हैं। इसमें पढ़ना सिखाते समय चार पाँच पंक्तियों की कहानी चुनी जा सकती है क्योंकि बच्चों के कहानी प्रिय लगती है।

(2) **शब्द शिक्षण पद्धति :–** इसके अनुसार सार्थक शब्दों को पढ़ने की शिक्षा दी जाती है जैसे – दादा, नाना, आदि। इस विधि द्वारा बालकों का मनोरंजन भी होता है। इस लिए यह विधि मनोवैज्ञानिक है। यह विश्लेषणात्मक पद्धति है, इसमें चित्रों के माध्यम से शब्द सिखाये जाते हैं।

वर्ण शिक्षा विधि

इस विधि को अति प्राचीन विधि कहा जाता है। इसमें पहले स्वर, फिर व्यंजन मात्रायें, संयुक्ताक्षर फिर सार्थक शब्द सिखाये जाते हैं। आजकल पाठशालाओं में इसी विधि का प्रयोग किया जा रहा है। यही तार्किक क्रम है।

ध्वनि साम्य विधि

इस विधि में ध्वनियों वाले शब्दों का उच्चारण एक साथ कराया जाता है जैसे – कर्म, धर्म, मर्म, चर्म, आदि। इस विधि का दोष यह है कि ध्वनियों पर ध्यान देना व शब्दों, वाक्यों, खण्डों और वाक्य के अर्थ पर उतना ध्यान न देना।

भाषा शिक्षण यन्त्र विधि

इसमें ग्रामोफोन के रिकार्ड भरे हुए पाठ बजाये जाते हैं। बालक अनुकरण द्वारा उच्चारण की शुद्धता एवं एकरुपता से परिचित हो जाते हैं। भारत जैसा धनहीन देश इसको अपना नहीं सकता।

संयुक्त विधि

वाक्य विधि या कहानी विधि से पठन शिक्षण आरम्भ किया जाय तत्पश्चात देखो और कहो विधि–को अपनाया जाय। शब्द ज्ञान के पश्चात अक्षर ज्ञान द्वारा वर्णों की ओर ध्यान आकर्षित किया जाय। ध्वनि साम्य विधि का प्रयोग कर समस्त वर्णमाला सिखानी चाहिए। वर्णमाला के सभी अक्षरों की पहचान हेतु खेल विधि का आश्रय लिया जाय।

लिखना — आदर्श लेखन के अभ्यास गठन की पद्धति

पाठशाला में प्रवेश करते ही बालक को वर्णमाला लिखवानी प्रारम्भ कर देना वास्तव में दूषित प्रणाली है। बालक को लिखना तभी प्रारम्भ करवाना चाहिए, जब कि वह अपनी माँसपेशियों पर नियंत्रण रखना सीख चुका हो। लिखने की प्रथम सीढ़ी चित्रकारी है। गाँधीजी ने भी इस मत का समर्थन किया है। अत: प्रारम्भिक कक्षा में बालकों के कद के अनुसार श्यामपट लटका देना चाहिए जिसपर स्वेच्छानुसार सीधी, आड़ी लकीरें खींच सके ताकि उसकी माँसपेसियाँ मजबूत हो सके। अभ्यास करते करते वे छोटे मोटे चित्र बनाने लगते हैं।

लिखने की तैयारी हेतु नर्सरी कक्षा में कुछ खेलों का आयोजन करना चाहिए जिससे उसकी माँसपेशियाँ मजबूत हो सके। लिखना प्रारम्भ करने से पूर्व बालक के स्नायु को अनुशासन में रहने का अभ्यस्त बनाना अत्यन्तावश्यक है।

लेखन –शिक्षण की विधियाँ

लिखना सिखाने के लिए कई विधियाँ हैं

(i) **अनुकरण विधि :–** इसमें साधारणत्य लिखना सिखाया जाता है शिक्षक स्लेट या श्यामपट पर वर्ण लिख देता है और उसी को देखकर विद्यार्थी स्वयं लिख देते हैं। सुलेख की पुस्तिकाओं में प्रथम पंक्ति लिखी होती है शेष पूरा पृष्ठ विद्यार्थी अनुकरण द्वारा लिखता है।

(ii) **पेस्टालाजी की रचनात्मक विधि :-** इसके अनुसार तीन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है जैसे प्रत्येक वर्ण का निम्न आकृतियों के संयोग बनने के कारण छोटे छोटे भाग में पृथक करना (|, \, —, O, (,)) इत्यादि। दूसरी बात कठिनाई के अनुसार वर्णों का वर्गीकरण करना जैसे - ग, म, न, भ, झ, र, ण, स, ए आदि। तीसरी बात है कि विभिन्न आकृतियों का वर्ण बनाने के लिए एकीकरण करना। अत: यह पृथक्करण, वर्गीकरण एवं एकीकरण तीन क्रियाओं पर आधारित है।

(iii) **मांटेसरी विधि :-** इस विधि में गत्ते के बने अक्षरों पर उँगली फेरने को कहा जाता है। गत्ते के एक वर्ण की आकृतियाँ बनाकर शिक्षक दे देगा। बालक शिक्षक की सहायता से उसे काट लेंगे। अब गत्ते में कटी हुयी आकृति रह जायेगी। अत: नीचे कागज रखकर कटे हुए स्थानों पर पेन्सिल चलाने से नीचे के कागज पर वर्ण बन भी जायेंगे और बालक का अभ्यास भी हो जायेगा। यह एक रोचक विधि है।

(iv) **विश्लेषण विधि :-** इसमें लेखन शिक्षण शब्द, वाक्य एवं शब्द इन दो क्रमों में चलता है। दोनों क्रमों को रोंचक बनाने के लिए चित्रों का सहारा लिया जाता है। विश्लेषण विधि वाचन-शिक्षण की दृष्टि से अधिक उपयोगी है।

(v) **संश्लेषण विधि :-** इसके अन्तर्गत पहले वर्ण फिर शब्द अन्त में वाक्य लिखना सिखाया जाता है। इसलिए इसे संश्लेषण विधि कहते हैं। इसे वर्ण, शब्द, वाक्य विधि भी कहते हैं। लेखन, शिक्षण आरम्भ करते समय वह विधि सर्वश्रेष्ठ विधि है।

लिपि शिक्षण की चार अवस्थायें हैं-

(i) लिखने की तैयारी (ii) अक्षर रचना (iii) शब्द रचना व वाक्य रचना (iv) अभ्यास एवं आदर्श लिपि।

लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रहे —

(i) प्रारम्भिक कक्षा में बालक पेन्सिल का प्रयोग करें, तीसरी कक्षा में पेन का प्रयोग सिखायें।

(ii) लिखते समय रीढ़ की हड्डी सीधी रखनी चाहिए। लिखते समय लेखन सामग्री आँख से एक फुट की दूरी पर हों, तख्ती या स्लेट सीधी होनी चाहिए।

(iii) प्रथम एवं द्वितीय उंगली के मध्य तथा ऊपर अंगूठा रख कर कलम पकड़नी चाहिए। कलम को उसकी जीभ से लगभग एक इंच की दूरी पर पकड़नी चाहिए।

सूक्ष्म लेख श्रुत लेख

लिखित रचना शिक्षण के विभिन्न अंग हैं जैसे - सुलेख, श्रुत लेख, सूक्ष्म लेख, वाक्य, रचना, अनुच्छेद लेख, उचित विराम चिन्हों का प्रयोग आदि। इस शिक्षा को सूचारु रुप से चलाने के लिए कई अभ्यास शिक्षकों को निरंन्तर करवाने चाहिए-

अनुलिपि – इसके लिए लिपि पुस्तकों पर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाने चाहिए। इन पुस्तिकाओं में आदर्श लेख के रुप में सुडौल और बड़े बड़े अक्षर छपे रहते हैं। इसमें बालक बिन्दुओं को जोड़कर अक्षर बनाने का प्रयास करते हैं। इससे सुन्दर लिखने की आदत का विकास होता है।

प्रतिलिपि – सुलेख का दूसरा अभ्यास है, इसमें आदर्श वाक्य को देखकर हूबहू नकल की चेष्टा करना। इसमें स्वतंत्र रुप से सुलेख का अभ्यास करना चाहिए। इससे वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों में कमी आती है। शब्द भण्डार में वृद्धि के साथ साथ चक्षु एवं पेशीय क्रिया जन्य स्मृतियाँ दृढ़ होती है।

श्रुत लेख – इसमें शिक्षक कुछ कहता हैं उसे सुनकर विद्यार्थी लिखते हैं। इससे बालकों के सुनने समझने के साथ लिखने की क्षमता का विकास होता है। इसमें शिक्षक प्रवचन विधि का सहारा ले सकता है।

सूक्ष्म लेख – इसके अन्तर्गत व्याख्या, समीक्षा लेखन संवाद भाव पल्लवन, छोटी कहानी आदि आते हैं। इसमें छात्रों को स्मृति शक्ति के आधार पर घटना और चित्रों के माध्यम से लिखने की क्षमता का विकास किया जाता है।

बोलने, पढ़ने, लिखने के क्षेत्र में विराम चिन्ह का प्रयोग

विराम चिन्ह भाषा को स्पष्ट और प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है। बात-चीत में वक्ता अपने मन्तव्य को प्रकट करने के लिए लय और टोन का सहारा ले लेता है लिखित भाषा में संकेत-चिन्हों से ही वक्ता की भाव-मुद्रा स्पष्ट होती है। अत: भाषा के शद्ध प्रयोग के लिए विराम चिन्ह और उनका ज्ञान आवश्यक है।

पढ़ते समय कुछ लोग विराम चिन्ह पर उचित ठहराव दिये बिना सपाट गति से पढ़ते चले जाते हैं। अल्प विराम (,) अर्धविराम (;) पूर्ण विराम (।) पर आवश्यकतानुसार रुकना चाहिए। इसी प्रकार प्रश्नवाचक वाक्य (?) एवं विस्मयसूचक (!) के पूर्व उचित बल दिया जाना चाहिए। एकांकी के पाठ को पात्रानुसार पढ़ते समय विराम चिन्ह को ध्यान में रखकर पढ़े बिना प्रभाव की सृष्टि नहीं हो पाती।

प्राय: हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले विराम चिन्ह निम्नलिखित हैं-

(1) अल्पविराम (,) — (i) समान महत्व वाले शब्दों तथा उपवाक्यों को अलग करने के लिए अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे – राधा, गुणवती, परिश्रमी, सुन्दर और विवाहित औरत है।

(ii) संयुक्त और मिश्र वाक्यों के उपवाक्यों को अलग करता है, जैसे – मैं तुम्हें अवश्य रुपया दे देता, किन्तु मेरी जेब खाली है।

(2) अर्धविराम (;) — जहाँ अल्पोविराम से अधिक और पूर्णविराम से कम रुकना हो वहाँ अर्धविराम का प्रयोग होता है। जैसे – अब खूब परिश्रम करो; परीक्षा सिर पर आ गई है।

(3) पूर्ण विराम (।) — इसका अर्थ है पूरी तरह रुकना। यह प्रश्नवाचक और विस्मय सूचक वाक्यों को छोड़कर प्रत्येक वाक्यों के अन्त में लगता है। जैसे – सूर्य पूर्व में उगता है।

(4) प्रश्नबोधक चिन्ह (?) — इसका प्रयोग प्रश्नसूचक वाक्यों के अन्त में होता है। जैसे – क्या तुम मुझे पानी दोगे ?

(5) विस्मयादि बोधक चिन्ह (!) — इसका प्रयोग विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि भावों को प्रकट करता है। ऐसे वाक्यों के अन्त में इसका प्रयोग होता है, जैसे – आहा ! मजा आ गया। हाय राम ! अब क्या होगा। तुम बड़े अजीब आदमी हो।

(6) निर्देशक चिन्ह (—) – आगे दी जाने वाली विषय-वस्तु या निर्देश करने के लिए इसका प्रयोग होता है। जैसे- व्याकरण के निम्न उद्देश्य हैं –

(7) योजक चिन्ह (–) — इसका प्रयोग शब्द-युग्मों, पुनरावृत्ति वाले शब्दों, समस्त पदों आदि में होता है। जैसे दस-पाँच माता-पिता आदि। इसकी रेखा निर्देशक चिन्ह की रेखा से छोटी होती है।

(8) कोष्ठक चिन्ह ( ) — कोष्ठक मे ऐसी जानकारियाँ रखी जाती हैं जो मुख्य वाक्य का अंग या मुख्य विषय नहीं होती किन्तु पाठकों की सुविधा के लिए उनकी जानकारी दी जाती है, जैसे–समुद्रगुप्त महान विजेता (भारत नेपोलियन) था।

(9) उद्धरण चिन्ह (" ") — दूसरे के कथन को जस के तस रखने के लिए इसका प्रयोग होता है, जैसे – नेताजी ने कहा था, ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

किसी व्यक्ति के नाम, उपनाम, लेख, पाठ का नाम देने के लिए (' ') इकहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग होता है, जैसे – 'कमायनी' जयशंकर प्रसाद की रचना है।

(10) लाघव चिन्ह (o) — संक्षिप्त रुप लिखने के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे– सं०, मि०, ई० पू०, ई० आदि।

ल० ब० शास्त्री – लाल बहादुर शास्त्री।

कृ० प० उ० – कृपया पन्ना उलटिये।

(11) विवरण चिन्ह (:-) — जब किसी पद की व्याख्या करनी होती है, जैसे – समास के निम्नलिखित भेद हैं :–
(i) अव्ययीभाव (ii) तत्पुरुष (iii) कर्मधारय (iv) बहुब्रीहि (v) द्विगु

(12) लोप–निर्देशक चिन्ह (-----) — कभी–कभी वाक्य में कुछ अंश छोड़ दिया जाता है। छोड़े गये स्थान पर इसका प्रयोग होता है, जैसे – दीपों की माला पहन कर वह .....।

(13) त्रुटिपूरक विराम (∧) — लिखते समय कुछ शब्द छुट जाता है तब जहाँ शब्द छुटा है वहाँ इसका प्रयोग होता है, जैसे – शिवाजी देशभक्त और चतुर शासक थे।

(14) उपविराम या अपूर्ण विराम (:) — किसी संम्बन्धित विषय अथवा शीर्षक के एक भाग को अलग से सूचित करने के लिए इस चिन्ह (:) का प्रयोग किया जाता है, जैसे – सूर : एक अध्ययन, नई कहानी : कुछ प्रश्न विवरण देने के चिन्ह के रुप मे भी इसका प्रयोग होता है, जैसे – इसका विवरण इस प्रकार है :

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

लघु उत्तरीय प्रश्नः–

(i) बालक भाषा बोलना किससे सीखता है?
(ii) बालक का वयस्कों से सम्पर्क टुटने पर क्या होगा?
(iii) क्या एक अच्छा श्रोता ही अच्छा वक्ता होता है?
(iv) पाठशाला में प्रवेश करते ही बालक से क्या करवाना चाहिए?
(v) अक्षर की बारह खड़ी क्या है?

रचनात्मक एवं बोधमूलक प्रश्न :–

(i) प्राथमिक शिक्षण में सुनने का क्या महत्व है?

(ii) उच्चारण का अभ्यास किस प्रकार कराया जाता है ?

(iii) आदर्श पठन की क्या विशेषताएँ हैं ?

(iv) मौन वाचन के उद्देश्य क्या हैं ?

(v) पठन की चार अवस्थाएँ क्या हैं ? संक्षेप में वर्णन करें।

(vi) लिखना, पढ़ना सिखाते समय किन–किन विधियों को अपनाया जाता हैं ?

(vii) आदर्श लेखन की विधियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(viii) लिखने, पढ़ने के क्षेत्र में विराम चिन्हों के प्रयोग एवं महत्व का उल्लेख करें।

मातृभाषा शिक्षण की विधियाँ
वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों के अनुसार

प्रस्तावना :- भाषा की व्यवस्था को समझने के लिए और उसके प्रयोग की दक्षता प्राप्त करने के लिए हमें ध्वनि, शब्द और वाक्य के बारे में जानना आवश्यक है। इन्हें ही भाषिक तत्व कहा जाता है। इन भाषिक तत्वों का विचार हिन्दी व्याकरण में वर्ण विचार, शब्द विचार और वाक्य विचार के अंतर्गत किया जाता है। भाषा शिक्षक के लिए भाषिक तत्वों का विस्तृत ज्ञान बहुत आवश्यक है।

उद्देश्य :- (i) हिन्दी ध्वनियों की मानक वर्णमाला से परिचित हो सकेंगे। वर्णों का यथास्थान सही प्रयोग कर सकेंगे।

(ii) उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी वर्णों का वर्गीकरण कर सकेंगे। वर्तनीगत अशुद्धियों का सुधार कर सकेंगे।

(iii) हिन्दी शब्द भंडार के विभिन्न स्रोतों का वर्णन कर सकेंगे।

(iv) लिंग, वचन, विभक्ति, क्रिया, काल, आदि दृष्टि से विभिन्न व्याकरणिक स्थितियों में शब्द में परिवर्तन कर सकेंगे और वाक्य में उनका सही प्रयोग कर सकेंगे।

(v) वाक्य में उद्देश्य और विधेय बता सकेंगे।

(vi) वाक्यों के प्रकारों—सरल, संयुक्त और मिश्र की संरचनात्मक विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

(vii) शब्द तथा वाक्य की शिक्षण प्रक्रिया से अवगत होकर तत्संबंधी उपागमों का कक्षा शिक्षण में उचित प्रयोग कर सकेंगे।

मातृभाषा शिक्षण की कुछ विधियाँ

वर्णों के अनुसार :– यह सबसे प्राचीन विधि है। इस विधि के अनुसार पहले स्वर, फिर व्यंजन, मात्राएं, संयुक्ताक्षर और फिर सार्थक शब्द, सिखाये जाते हैं। आजकल हमारे विद्यालयों में इसी विधि द्वारा शिक्षा दी जाती है। यही तार्किक क्रम है। सम्पूर्ण वर्णमाला का बोध इसी विधि से कराया जाता है। इस विधि का गुण यही है कि इस विधि को अपनाना ही पड़ेगा चाहे आगे या पीछे।

लिपि :– भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। हिन्दी भाषा में ध्वनि के लिए वर्ण शब्द का प्रयोग होता है। ध्वनियों को अंकित करने के लिए निश्चित किए गये चिन्हों को 'लिपि' कहते हैं। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

वर्णमाला :– वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी के शुद्ध उच्चारण व वर्तनी के लिए इसका ज्ञान अति आवश्यक है।

स्वर – अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

मात्राएं – ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ं ः

अं – अनुस्वर तथा अः – विसर्ग है।

अनुनासिका चिन्ह ँ है।

व्यंजन –

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	

संयुक्त व्यंजन

क्ष	**(क् + ष)**
त्र	**(त् + र)**
ज्ञ	**(ज् + ञ)**
श्र	**(श् + र)**

उच्चारण की दृष्टि से स्वर दो प्रकार के होते हैं — (1) ह्रस्व स्वर और (2) दीर्घ स्वर।

जिन स्वरों को एक मात्रा में उच्चारित किया जाता है उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इसके उच्चारण की अवधि अपेक्षाकृत कम होती है।

जिन स्वरों के उच्चारण में एकमात्रा काल से अधिक समय लगता है उसे दीर्घ स्वर कहते हैं।

भाषा की व्यावस्था समझने के लिए और उसके प्रयोग की दक्षता प्राप्त करने के लिए हमें इस भाषिक तत्व को जानना जरुरी है।

शब्दों के अनुसार :– इस विधि के अनुसार सार्थक शब्दों का ज्ञान कराया जाता है जैसे – दादा, चाचा, नाना आदि। इस विधि द्वारा बालकों का मनोरंजन भी होता है इसलिए यह मनोवैज्ञानिक विधि है। इस विदि का प्रयोग सुलझा हुआ शिक्षक ही कर सकता है। यह विश्लेषणात्मक विधि है। इसमें चित्र के माध्यम से शब्द सिखाये जाते हैं और फिर चित्र दिखा कर पढ़ना सिखाया जाता हैं इसलिए इस विधि को 'देखो और कहो' विधि या सहचर्य विधि कहते हैं।

शब्द विचार :- ध्वनियों के ऐसे समूह को शब्द कहते हैं जिसका कोई अर्थ होता है। अर्थ शब्द का प्रधान लक्षण है। उदाहरण के लिए क, म, ल ध्वनियाँ हैं जिनका अपने आप में कोई अर्थ नहीं। किन्तु इन तीनों को मिलाकर कमल ध्वनि समूह बनता है जो एक शब्द है।

जिस भाषा का शब्द-भंडार जितना विशाल हो वह भाषा उतनी सम्पन्न एवं समृद्ध मानी जाती है। हिन्दी जीवंत भाषा है, वह अपने विकास के क्रम में अनेक स्रोतों से शब्द ग्रहण करती हुई समृद्ध बनती गई है और उसका शब्द भंडार उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। हिन्दी के शब्द विवेचन के निम्न प्रकार हैं —

1. **व्युत्पत्ति के आधार पर** - (i) तत्सम (ii) तद्भव (iii) देशज (iv) विदेशज
   - (i) तत्सम शब्द — जो शब्द संस्कृत से मूल रूप में हिन्दी में आ गये हों उन्हें तत्सम कहते हैं जैसे — सूर्य, सृष्टि, वृक्ष आदि।
   - (ii) तद्भव शब्द - जो शब्द संस्कृत से परिवर्तित होकर हिन्दी में आये। जैसे — सूरज, आग, पत्थर आदि।
   - (iii) देशज शब्द - जिन शब्दों का विकास देश में हुआ है जैसे — खटपट, धड़कन, खिचड़ी, टाँग आदि।
   - (iv) विदेशज शब्द - भारत से बाहर की भाषाओं अरबी, फारसी, अंग्रजी, तुर्की आदि, से जो शब्द हिन्दी में आये उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं। जैसे — स्टेशन, अदालत आदि।

2. **अर्थ की दृष्टि से** — (i) पर्यायवाची, (ii) एकार्थी, (iii) अनेकार्थी, (iv) विलोमार्थी या विपरितार्थक।
   - (i) पर्यायवाची शब्द - वे शब्द जिनके अर्थ में समानता हो पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। जैसे — प्रेम - स्नेह - आशंका - संदेह - संशय।
   - (ii) एकार्थी शब्द - ऐसे शब्द जिनका अर्थ सभी परिस्थितियों में एक सा रहता है। जैसे — ऋषि, श्रद्धा, आत्मा, कलंक, मोक्ष आदि।
   - (iii) अनेकार्थी शब्द- वे शब्द जो प्रयोग के अनुसार भिन्न भिन्न परिस्थितियों में भिन्न भिन्न अर्थ देते हैं। जैसे — अंबर (वस्त्र, आकाश, कपास) अलि (सखी, भौंरा, कोयल)
   - (iv) विलोमार्थी शब्द - किसी शब्द से विपरीत अर्थ देने वाला शब्द। जैसे - सुख-दु:ख, बड़ा-छोटा, हर्ष-विषाद आदि।

3. **रचना के आधार पर** - (i) रुढ़, (ii) योगरुढ़, (iii) यौगिक।
   - (i) रुढ़ शब्द - वे शब्द जिनके सार्थक खंड न हो सके, जैसे— पैर, सूर्य, दिन, हाथ आदि।
   - (ii) यौगिक शब्द - जो मूल या रुढ़ शब्दों में अन्य शब्दांशों, उपसर्ग, प्रत्यय आदि के मेल से बनते हैं, जैसे— अत्याचार, बड़ाई, राजकुमार, सेनापति आदि।

     सार्थक और निरर्थक शब्दों के मेल से - कूड़ा-करकट, गलत-सलत, झूठ-मूठ, पुछ-ताछ आदि। निरर्थक के मेल से - अबड़-खाबड़, हक्का-बक्का आदि।
   - (iii) योगरुढ़ - जो शब्द यौगिक होते हुए भी एक ही अर्थ में रुढ़ हो जाते हैं। जैसे— दशानन, चक्रपाणि।

4. **व्याकरणिक विवेचना के आधार पर शब्द को दो भागों में बाँटा गया है-**
   - (i) विकारी
   - (ii) अविकारी

(i) **विकारी शब्द** – वाक्य में जिन शब्दों के रूप, लिंग, वचन और कारक के भेद के अनुसार बदल जाते हैं उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं। इनके चार भेद हैं — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।

(ii) **अविकारी शब्द** – वे हैं जिनका रुप नहीं बदलता इन्हें अव्यय भी कहते हैं जैसे :-

क्रिया विशेषण – अब-जब, यहाँ-वहाँ, भीतर-बाहर आदि।

संबंध बोधक – के बाहर, के नीचे, के सामने आदि।

समुच्चय बोधक – और, तथा, किन्तु, परन्तु, अथवा आदि।

विस्मयादि बोधक – अरे, ओ, हे, हाय, बापरे आदि।

वाक्यों के अनुसार– इस विधि में शब्दों की अपेक्षा वाक्यों से शिक्षण विधि शुरु किया जाता हैं क्योंकि वाक्य ही बालक के सोचनें की इकाई होता है। इसे कहानी या कविता विधि कहते हैं। रचना शिक्षण उपागम द्वारा वाक्य शिक्षण में यथेष्ट सहायता मिलती है। इसके अन्तर्गत वाक्यों में शुद्ध पदक्रम संबंधी अभ्यास, अपूर्ण वाक्यों की पूर्ति, वाक्य प्रयोग, सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्य आदि सिखाना चाहिए।

वाक्य सही पदक्रम से योजित ऐसी संरचना है जिसमें परस्पर योग्यता, अकांक्षा, तृप्ति, आसक्ति हो।

वाक्य के अंश – इसके दो अंग होते हैं। (i) उद्देश्य, (ii) विधेय।

वाक्य छोटा हो या बड़ा उसके दो अंग होते हैं – उद्देश्य और विधेय। जिसके बारे में बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं। उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाय उसे विधेय कहते हैं।

''राम ने रावण को मारा'' वाक्य में 'राम' उद्देश्य और 'रावण' को मारा विधेय है।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के प्रकार

(i) विधानार्थक : वह वाक्य जिससे किसी बात का होना प्रकट हो, जैसे — भारत की जनसंख्या 100 करोड़ है।

(ii) निषेधात्मक : जिससे अस्वीकृति सूचित है — वह भोजन नहीं करेगा।

(iii) आज्ञानार्थक : ऐसे वाक्य जिससे आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश का अर्थ सूचित हो, जैसे — सदा सत्य बोलो।

(iv) प्रश्नार्थक : जिससे प्रश्न का बोध हो, जैसे — अब यह काम कैसे होगा?

(v) विस्मयादिसूचक : ऐसे वाक्य जिनसे आश्चर्य, विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि का बोध हो, जैसे — वाह! तुमने कमाल कर दिया। कैसा सुन्दर दृश्य है!

(vi) संदेह सूचक :- जिस वाक्य में संदेह प्रकट हो, जैसे — शायद आज पानी बरसे।

(vii) शर्तबोधक :- वह वाक्य जो संकेत या शर्त बोध कराये, जैसे — तुम परिश्रम करते तो पास हो जाते।

वाक्य में पदक्रम

वाक्य में पदों के उचित स्थान का विचार 'पदक्रम' कहलाता है। वाक्य रचना करते समय विचार करना पड़ता है कि पद अर्थात, कर्ता, कर्ता का विस्तार, कर्म, कर्म का विस्तार, पूरक, (यदि वाक्य में है) पूरक का विस्तार , क्रिया, क्रिया का विस्तार

आदि किस क्रम में रखे जाएँ। पदक्रम संबंधी नियम निम्नलिखित हैं —

(i) वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म और अंत में क्रिया रखते हैं, जैसे बालक (कर्ता) पुस्तक (कर्म) पढ़ता है (क्रिया)।

(ii) द्विकर्मक क्रियाओं में गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म पीछे रखते हैं, जैसे — मैने (कर्ता) राम को (गौणकर्म) पुस्तक (मुक्यकर्म) दी (क्रिया)।

(iii) विशेषण संज्ञा के पहले और क्रिया विशेषण प्रश्नवाचक के अतिरिक्त क्रिया के पहले आते हैं। जैसे — बड़े प्रसिद्ध (विशेषण) अभिनेता (संज्ञा कर्ता) आज यहाँ (क्रिया विशेषण) आये हुए हैं (क्रिया)।

(iv) निषेधवाचक अव्यय 'न', 'नहीं', 'मत' प्राय: क्रिया के पूर्व आते हैं – मैं नहीं पढ़ूँगा, तुम मत आना।

(v) शर्तबोधक, समुच्चयबोधक प्राय: जोड़ने वाले वाक्यों के प्रारम्भ में आते है, जैसे — वह आयेगा तो मैं जाऊँगा।

(vi) विस्मयादिबोधक और संबोधन प्राय: वाक्य के प्रारम्भ में आते हैं, जैसे — अरे यह क्या हुआ।

संरचना की दृष्टि से वाक्य के भेद

(i) सरल वाक्य (ii) मिश्र वाक्य (iii) संयुक्त वाक्य।

सरल वाक्य :- जिस वाक्य में एक या अनेक उद्देश्य हों किन्तु विधेय एक ही हो, वह सरल या साधारण वाक्य कहलाता है जैसे — मोहन पुस्तक पढ़ रहा है। इसमें उद्देश्य एवं विधेय एक-एक हैं। मोहन, श्याम, हामिद भोजन कर रहे हैं। इसमें तीन उद्देश्य है, विधेय एक है।

मिश्र वाक्य :- जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक या अनेक उपवाक्य हों वह मिश्र वाक्य कहलाता है।

मिश्र वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक या अनेक समापिका क्रियाएँ होती हैं। मुख्य उद्देश्य या मुख्य विधेय युक्त उपवाक्य 'प्रधान उपवाक्य' होता है। शेष उपवाक्य आश्रित उपवाक्य होते हैं। ये आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर आश्रित होते हैं। जैसे — उसने कहा कि मैं कल तुम्हारे घर आऊँगा।

संयुक्त वाक्य :- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या एक से अधिक प्रधान उपवाक्य के समकक्ष उपवाक्य हों उसे संयुक्त उपवाक्य कहते हैं।
'रमेश आया और मोहन घर चला गया' दोनों समाधिकरण वाक्य है। अर्थात एक दूसरे पर आश्रित हैं। संयुक्त वाक्यों में प्रधान उपवाक्यों और समाधिकरण उपवाक्यों को जोड़ने के लिए और, किन्तु, परन्तु, तथा, या, और, अथवा सम्बन्ध बोधक अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावाली

लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) भाषा की व्यवस्था हम किस प्रकार समझ सकते हैं?

(ii) लिपि क्या है?

(iii) वर्णमाला क्या है?

(iv) उच्चारण की दृष्टि से स्वर कितने प्रकार के होते हैं ?

(v) शब्द किसे कहते हैं ?

(vi) वाक्य से क्या समझते हो ?

(vii) स्वर और व्यंजन क्या हैं ?

(viii) रचना एवं व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों के कितने भेद हैं ?

(ix) विकारी और अविकारी शब्द से क्या समझते हो ?

रचनात्मक एवं बोधमूलक प्रश्न

(i) वर्ण व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए।

(ii) व्युत्पत्ति एवं अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण करते हुए संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(iii) अर्थ की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक का संक्षिप्त वर्णन किजिए।

(iv) वाक्यों में पदक्रम के महत्व पर प्रकाश डालिए।

(v) संरचना की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद हैं ? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

कविता, कहानी कथन, अभिनय एवं आरोही पद्धति

प्रस्तावना :– साहित्य के दो रुप हैं पद्य (कविता) और गद्य (कहानी)। इन दोनों ही रुपों की शिक्षण संम्बन्धी विधियों का ज्ञान भाषा–शिक्षक के लिए आवश्यक है। इस इकाई में हमने साहित्य की प्रमुख विधा कविता के शिक्षण की चर्चा के साथ ही कहानी कथन, नाटक एवं आरोही पद्धति का भी वर्णन किया है। कविता शिक्षण में सस्वर वाचन की उपयोगिता और कविता शिक्षण के सोपानो पर विस्तार से चर्चा करते हुए काव्यात्मक अभिरुचि बढ़ाने के उपायों का वर्णन है। साथ ही कहानी कथन की प्रयोजनीयता एवं नाटक के मंचन पर भी प्रकाश डाला गया है। कविता, कहानी कथन, नाटक एवं आरोही पद्धति के महत्वों एवं शिक्षण विधियों पर चर्चा की गई है।

उद्देश्य :– (i) कविता, कहानी एवं नाटक के महत्व बता सकेंगे।

(ii) इन विधाओं में निहित भावों एवं विचारों के सौन्दर्य का विश्लेषण कर सकेंगे।

(iii) इनके शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के सोपानों को बता सकेंगे।

(iv) सौन्दर्य बोध के मूल्यांकन के लिए अपेक्षाकृत युक्तियाँ अपना सकेंगे।

(v) सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में जीवन मूल्यों का निर्धारण कर सकेंगे।

कविता, कहानी कथन, अभिनय एवं आरोही पद्धति

कविता शिक्षण का महत्व :– भाषा अधिगम के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं– भाव प्रकाशन, भाव एवं विचार ग्रहण, सृजनात्मकता। इन तीनों उद्देश्यों की पूर्ति में कविता के पठन–पाठन की महत्वपूर्ण भूमिका है। कविता वालक के मानसिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक विकास में सहायता प्रदान करती है। कविता अध्ययन शिक्षार्थियों की साहित्यिक रसास्वादन की रुचि, और सौन्दर्यानुभूति को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

कविता द्वारा बालक की भावनायें विकसित एवं परिष्कृत होती हैं। कविता सद्भावना, देश प्रेम, दया, सहानुभूति आदि गुणों को विकसीत करने में सहायक होती है।

कविता शिक्षण के प्रयोजन :– कविता शिक्षण के सामान्य उद्देश्य निम्न हैं।

(i) छात्रों में शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण पूर्वक, उचित हाव भाव तथा भावानुकूल पाठ करने की योग्यता का विकास।
(ii) छात्रों में कवि की अनुभूतियों तथा उसकी कमनीय कल्पनाओं को समझने तथा ग्रहण करने की योग्यता का विकास।
(iii) छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास।
(iv) छात्रों में काव्य सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों को परखनें एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास।

कविता शिक्षण की प्रक्रिया :–कविता शिक्षण विधि के चयन में कविता के स्वरुप तथा बालकों की मनोवृत्तियों का ध्यान रखा जाता है। सामान्य पाठ विकास की प्रक्रिया में निम्नलिखित सोपानों को ध्यान में रखा जाता है–

प्रस्तावना – पूर्व ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए। प्रस्तावना इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है–

- कविता के शीर्षक का परिचय।
- पाठ्य कविता की पृष्ठभूमि देते हुए।
- कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत करें।
- कविता के भावानुरुप वातावरण का निर्माण।

उद्देश्य कथन :– कविता के मूल स्वर एवं कवि की मूल संवेदना की ओर संकेत किया जाता है।

आदर्श पाठ :– उद्देश्य कथन के बाद अध्यापक कविता का आदर्श पाठ प्रस्तुत करता है, जिसमें भाव, गति, लय, छन्द, उच्चारण आदि पर उचित ध्यान दिया जाता है।

अनुकरण पाठ :– इसमें बालक शिक्षक के आदर्श पाठ का अनुकरण करते हुए काव्य पाठ करते हैं।

केन्द्रीय भाव ग्रहण :– कविता के दो बार आदर्श पाठ के बाद कविता के केन्द्रीय भाव पर शिक्षक एक दो प्रश्न बालकों से पूछे।

कठिन शब्दार्थों की व्याख्या :– शिक्षक कठिन शब्दों की व्याख्या करेंगे। ध्यान रहे, शब्दार्थ कविता के भाव सौन्दर्य के विकास में साधन बने, साध्य न बने।

समवेत पठन :– इसमें सारी कक्षा समवेत रुप से कविता पाठ करती है। इसमें शिक्षार्थी कविता के नाद एवं संगीत सौन्दर्य का आन्नद प्राप्त करते हैं। यह प्राथमिक कक्षाओं में लाभकारी है।

कहानी शिक्षण :–गद्य साहित्य की विधाओं में कहानी सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। मुंशी प्रेमचन्द के शब्दों में – गल्प एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंश या एक मनोभाव को प्रकट करना ही लेखक का उद्देश्य होता है । उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथान्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।

एक कहानी के निम्नलिखित तत्व होते हैं—
(i) कथावस्तु (ii) चरित्र चित्रण (iii) कथोपकथन (iv) भाषा–शैली (v) उद्देश्य।

कहानी शिक्षण क उद्देश्य :–

- शिक्षार्थी कहानी के पात्रों का चरित्र चित्रण कर सकेंगे।
- स्वर के उचित आरोह, अवरोह तथा प्रभाव के साथ कहानी पढ़ सकेंगे।
- जीवन की समस्याओं के प्रति अपना दृष्टिकोण व्यक्त कर सकेंगे।
- जीवन मूल्यों का निर्धारण कर सकेंगे।

कहानी शिक्षण प्रक्रिया

(i) कहानी शिक्षण के अनुदेशात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक 'कहानी' के अनुकूल सहायक सामग्री लेकर कक्षा में जायें।
(ii) विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान का परीक्षण करना।
(iii) उद्देश्य कथन प्रभावपूर्ण हो ताकि बालक ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरित हो सके।
(iv) प्रस्तुतीकरण में शिक्षण बिन्दु, शिक्षक के कार्यकलाप, शिक्षार्थी के कार्यकलाप तथा श्यामपट्ट कार्य के द्वारा शिक्षण कार्य संपादित किया जाता है। पहले शिक्षक कहानी का भावानुकूल वाचन करें, शिक्षार्थी अनुकरण वाचन करें। फिर शिक्षक विद्यार्थियों को मौन वाचन कर भाव समझने का निर्देश दे। कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
पुन: कहानी के 5 तत्वों का विश्लेषण किया जाय। कक्षा में भाषा पक्ष एवं चरित्र चित्रण आदि पर चर्चा की जा सकती है।

अभिनय एवं आरोही विधि –

साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं में नाटक का सर्वोतम स्थान है। नाटक भी कहानी की तरह किसी घटना का रसात्मक एवं संवादात्मक प्रस्तुतीकरण होता है। नाटक में कथा वस्तु के अलावा संवाद एवं अभिनेयता तथा चरित्र चित्रण प्रमुख तत्व होते हैं। इस शिक्षण की तीन विधियाँ हैं —

(i) आदर्श अभिनय विधि – इसमें शिक्षक ही सभी पात्रों के संवाद हाथ के सामान्य अभिनय तथा चेहरे की सामान्य भावाभिव्यक्ति के साथ स्वयं पढ़ता एवं बोलता है तथा उसी के अनुसार शिक्षार्थियों को अनुकरण पाठ करने के लिए निर्देश देता है। अपेक्षित अंशों की व्याख्या करता है।

(ii) कक्षा अभिनय विधि – इसमें बालक विभिन्न पात्रों के संवाद पढ़ते हैं। शिक्षक आवश्यक अंशों की व्याख्या शिक्षार्थियों के सहयोग से करता है। भाषा शैली पात्रों का चरित्र चित्रण तथा जीवन मूल्यों की स्थापना आदि कहानी शिक्षण के समान ही होता है।

(iii) मंच अभिनय विधि – इसमें विद्यार्थी पूरे पात्रों का संवाद कंठस्थ करके उनके वेश–भूषा को धारण कर मंचन करते हैं। यह औपचारिक शिक्षण से हटकर है। यह प्रतिदिन नहीं किया जा सकता। कक्षा अभिनय विधि ही सर्वोत्तम विधि है।

आरोह-अवरोह का महत्व

भाव प्रधान रचनाओं, विशेष रुप से कविता पाठ करते समय या कहानी कहते समय भावानुसार स्वर के उचित आरोह अवरोह के साथ वाचन का विशेष महत्व है। नहीं तो रसानुभूति समाप्त हो जायेगी। यदि कहानी एवं कविता का शिक्षण रसानुभूति करते हुए, उसका पाठ किया जाये तो आरोहावरोह स्वाभाविक रुप से ही आ जाता है। हमें चाहिए कि शिक्षार्थियों से पठन के समय जहाँ भी भावानुरुप वाचन या अरोहावरोह का अभाव लगे, उसका सुधार करे। यदि इसका ध्यान नहीं रखा जायेगा तो बालक लिखने में भी भूल करेंगे।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्न :-

(i) कविता शिक्षण का क्या महत्व है ?

(ii) कविता शिक्षण की प्रयोजनीयता का उल्लेख कीजिए।

(iii) कहानी शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ?

(iv) अभिनय विधि क्या है ?

(v) आरोह-अवरोह का क्या महत्व है ?

रचनात्मक प्रश्न :-

(i) कविता शिक्षण के विभिन्न सोपानों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(ii) अभिनय विधि के तीनो विधियों का वर्णन कीजिए।

(iii) आरोही पद्धति क्या है ? संक्षेप में परिचय दीजिए।

(iv) कहानी शिक्षण प्रकृया का वर्णन कीजिए।

भाषा शिक्षण में सहायक उपकरणों का महत्व

प्रस्तावना :- हिन्दी शिक्षण व्यवस्था एवं शिक्षण प्रणाली पर प्रकाश डालती है। कक्षा-शिक्षण में केवल पाठ्यपुस्तक ही पर्याप्त नहीं है, अपितु अन्य अनेक दृश्य-श्रव्य शिक्षणोपकरणों की सहायता अपेक्षित होती है। हमने यहाँ इन उपकरणों की चर्चा की है साथ ही बालकों की लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करने के लिए पाठ्चर्चा सहगामी क्रियाओं के महत्व एवं आयोजन प्रक्रिया का उल्लेख किया है। हिन्दी भाषा शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग, शिक्षण को रुचिकर सरल एवं उद्देश्य पूर्ण बनाने में सहायक होता है।

उद्देश्य :- (i) दृश्य-श्रव्य साधनों की उपयोगिता जान सकेंगे।

(ii) दृश्य-श्रव्य साधनों के महत्व को जानकर शिक्षण में उसका उपयोग कर सकेंगे।

(iii) शिक्षण को सरल एवं रुचिकर बना सकेंगे।

भाषा शिक्षण में दृश्य–श्रव्य साधनों का महत्व एवं प्रयोग पद्धति

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में दृश्य–श्रव्य साधनों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। समस्त शिक्षण सूत्रों में से एक शिक्षण सूत्र यह भी है। शिक्षक के लिए केवल विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं है, सबसे सफल शिक्षक वह है जो कठिन बात को छात्रों के स्तरानुकूल दृश्य–श्रव्य साधानों का प्रयोग करके सरल ढंग से समझ सके। इन साधनों की सहायता से शिक्षण कार्य अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। इनको तीन श्रेणियों में बाँटा गया है–

(i) **दृश्य साधन :–** जो उपकरण केवल नेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं उन्हें दृश्य उपकरण कहते हैं जैसे – मूक चित्र, प्रोजेक्टर, चित्र विस्तारक यंत्र, मानचित्र, प्रतिभूतिमॉडल, एल्बम कार्टून आदि।

(ii) **श्रव्य साधन :–** जो उपकरण केवल कान से सम्बन्ध रखते हैं। जैसे ग्रामोफोन, रेडियो आदि।

(iii) **दृश्य–श्रव्य साधन :–** जो उपकरण नेत्रों और कानों दोनों से सम्बन्ध रखते हैं, जैसे – चलचित्र, टी०वी० नाटक आदि।

इन साधनों का निम्नलिखित महत्व है–

(i) कम समय में अधिक सीखना।

(ii) कठिन विचार भी बोधगम्य।

(iii) शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के लिए लाभदायक।

(iv) विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण में स्पष्टता एवं निश्चितता।

(v) निर्जीव तथ्यों को भी जीवंत करने का सामर्थ।

(vi) विषय–वस्तु को याद रखने में सहायक।

(vii) पाठ को रोचक बनाने में सहायक।

(viii) बालकों को संलग्न रखने में सहायक।

(ix) सूक्ष्मातिसूक्ष्म बातों को समझाने में सहायक (शिक्षको की दृष्टि से)।

(x) आत्म शिक्षण में सहायक।

विद्यालय में इन उपकरणों के सफल प्रयोग के लिए मातृभाषा शिक्षक को कुछ मुख्य सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए।

(i) अधिकतर शिक्षक इन उपकरणों को निर्धारित पाठ्यक्रम से अलग शिक्षा प्रणाली में एक गौण स्थान देना चाहते हैं किन्तु ये हमारी शिक्षा योजना में एक महत्वपूर्ण अंग के रुप में हैं।

(ii) ये उपकरण साधन मात्र हैं साध्य नहीं, ये पाठ्य पुस्तक अथवा शिक्षक का स्थान नहीं ले सकते।

(iii) इन उपकरणों का प्रयोग शिक्षक को आना चाहिए, नहीं तो ये उपकरण शिक्षक की सहायता की अपेक्षा कक्षा में अनुशासनहीनता ला देंगे।

(iv) कुछ समय पश्चात नियमित रुप से इन साधनों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि ये उपकरण शिक्षा में कहाँ तक उपयोगी सिद्ध हो सके हैं।

दृश्य एवं श्रवण पर आधारित उपकरण

श्यामपट्ट :- इसका प्रयोग शिक्षक के लिए सबसे सरल है। मातृभाषा का कोई पाठ बिना इसकी सहायता के पूरा नहीं हो सकता। गद्य पाठ पढ़ाते समय बहुत से चित्र श्यामपट्ट पर बनाये जा सकते हैं। गद्य या पद्य पाठ पढ़ाते समय इस पर शब्दार्थ लिखे जा सकते हैं। व्याकरण पढ़ाते समय उदाहरण वाक्य, परिभाषाएँ श्यामपट्ट पर लिखी जाती हैं। निबन्ध का सारांश छोटी कक्षाओं में सुलेख के नमूने आदि लिखने के लिए श्यामपट्ट का प्रयोग शिक्षक के लिए परम आवश्यक है।

मॉडल :- कुछ विषय मॉडल की सहायता से भली भाँति समझाये जा सकते हैं जैसे गद्यपाठ में पंचायत का मॉडल बनाया जा सकता है। ऐसे और भी अनेक पाठ हैं जिनके मॉडल बनाये जा सकते हैं। इसके अलावा पूर्वाङ्कित चित्रों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

आडियो या रेडियो :- यह मनोरंजन के साधनों में से एक लोकप्रिय साधन है। आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रम रोंचक एवं ज्ञानवर्धक होता है, कविता पाठ, वार्ता समाचार आदि के कार्यक्रम मनोरंजक होने के साथ-साथ बालक को शिक्षित करने वाले होते हैं। बालकवि सम्मेलन, संवाद, वाद विवाद, बाल नाटक आदि का कार्यक्रम बालक को एक बहुत बड़ी प्रेरणा देता है। मौलिक रचना के लिए, जो कि भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में से एक है समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाय ताकि छात्रों को रेडियों के इस कार्यक्रम को सुनने का अवसर मिल सके।

वीडियो कैसेट एवं सीडी :- यहाँ हमारा सम्बन्ध शिक्षा सम्बन्धी कैसेट एवं सीडी से है। बच्चों को स्कूल की ओर से चित्र (Children's films) दिखाने चाहिए जिनका कथानक बाल जीवन की समस्याओं से हो। कैसेट एवं सीडी के माध्यम से वास्तविक जीवन के चलचित्र, समाचार चलचित्र आदि दिखाने जा सकते हैं जो शिक्षाप्रद हो। इससे नाटकीय आलोचना एवं प्रभावशाली संवाद का ज्ञान कराया जा सकता है। मानव का विकास कैसे हुआ इसको इसके जरिये दिखा कर समझाया जा सकता है। लेकिन दु:ख की बात है कि हमारे देश में बाल चलचित्र संख्या में बहुत थोड़े हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

रचनात्मक प्रश्न :-

(i) दृश्य-श्रव्य सामग्री से क्या समझते हैं ?
(ii) दश्य-श्रव्य सामग्री के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
(iii) दृश्य-श्रव्य समग्रियों को कितने भागों में बाँटा गया है संक्षेप में वर्णन कीजिए।
(iv) दृश्य एवं श्रवण पर आधारित उपकरण क्या हैं ?
(v) श्यामपट्ट के महत्व को बताते हुए मातृभाषा शिक्षण में इसकी प्रयोजनीयता का उल्लेख कीजिए।
(vi) दृश्य-श्रव्य सामग्री का सफल प्रयोग करने के लिए शिक्षक को किन सिद्धातों पर ध्यान रखना चाहिए ?
(vii) दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग के रुप में अडियो रेडियो तथा सीडी की क्या उपयोगिता है ?

सूक्ष्म शिक्षण की धारणा एवं पाठ परिकल्पना

प्रस्तावना :- प्रस्तुत इकाई में सूक्ष्म शिक्षण की धारण पर विस्तृत जानकारी दी गई है। भाषा शिक्षण में यह महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सूक्ष्म शिक्षण तकनीकी पर आधारित एक प्रशिक्षण है। भाषा शिक्षण को रुचिकर बनाने में सूक्ष्म शिक्षण महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह विस्तृत शिक्षण से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

उद्देश्य :- (i) व्याख्यात्मक दक्षता एवं उपयुक्त व्यवहार अर्जित कर सकेंगे।

(ii) शब्द भंडार में वृद्धि कर सकेंगे।

(iii) आत्मभिव्यंजात्मक शक्ति का विकास होगा।

(iv) आनंद की अनुभूति कर सकेंगे।

(v) कम समय में अधिक उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

सूक्ष्म शिक्षण :– सूक्ष्म शिक्षण तकनीकी पर आधारित एक प्रशिक्षण है, जिसके अन्तर्गत किसी विशेष शैक्षणिक तकनीक के विभिन्न अवयवों को पहचानते हुए उनकी सहायता एवं उनके अनुकरण द्वारा थोड़े समय में किसी पाठ इकाई के एक सूक्ष्म भाग का सफल अध्यापन किया जाता है।

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित चक्र का उपयोग किया जाता है–

```
┌-----------------  Plan  -------------------  Teach  ---------------┐
│                                                                     │
Refeedback                                                          Feedback
│                                                                     │
└-----------------  Reteach  -------------------  Replan  ---------------┘
```

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित शैक्षणिक दक्षताओं का प्रयोग किया जाता है–

1. अनुशंन्धानात्मक प्रश्न पूछने की दक्षता (Skill of probing question)
2. उद्दीपन परिवर्तन की दक्षता (Skill of stimulus variation)
3. पुनः पुष्टिकरण दक्षता (Skill of reinforcement)
4. व्याख्यात्मक दक्षता (Skill of explaining)
5. श्यामपट्ट प्रयोग संम्बन्धी दक्षता (Skill of using black board)
6. उदाहरण द्वारा विश्लेषण (Illustrating with example)
7. प्रशिक्षण सामग्री का प्रयोग (Using teaching - aids)
8. कक्षा प्रबन्ध संम्बन्धी दक्षता (Skill of class management) इत्यादि।

1. अनुशंधानात्मक प्रश्न पूछने की दक्षता — इसके अन्तर्गत निम्नलिखित अवयवों का प्रयोग किया जाता है — क) उत्साहवर्द्धक प्रश्न (Prompting Question) (ख) अग्रिम सूचना प्राप्ति संम्बन्धी प्रश्न (Seeking further information question) (ग) पुनःकेन्द्रीकरण सम्बन्धी प्रश्न (Refocussing Question) (घ) पुनः निर्देशन संबन्धी प्रश्न (Redirected Question) (ङ) विशेष ज्ञानवर्द्धक प्रश्न (Increasing Critical awareness Question)

(क) उत्साहवर्द्धक प्रश्न — ऐसे प्रश्न शिक्षक द्वारा पुछे जाते हैं जिनके द्वारा वे छात्रों को अनुशंधानात्मक तथ्य को ज्ञात करने में सहायक होते है।

(ख) अग्रिम सूचना प्राप्ति संम्बन्धी प्रश्न — इसके अन्तर्गत ऐसे प्रश्न किये जाते हैं जिसके द्वारा छात्रों का और अधिक ज्ञान वर्द्धन वांच्छित तथ्य के विषय में हो सके। इसके अन्तर्गत क्यों, कैसे आदि प्रश्न पूछकर छात्रों का ज्ञानवर्द्धन किया जाता है।

(ग) पुनःकेन्द्रीकरण प्रश्न — वांच्छित तथ्य से समानता और असमानता या संबंध रखने वाले ऐसे प्रश्न किये जाते हैं जो छात्र को अपेक्षित तथ्य की तरफ अग्रसर कर सके।

(घ) पुनः निर्देशन सम्बन्धी — इसके अन्तर्गत एक से अधिक छात्रों से प्रश्न पूछकर तथ्य की तरफ अग्रसर होते हैं।

(ङ) विशेष ज्ञान वर्द्धक प्रश्न — इसके अन्तर्गत छात्रों से ऐसे प्रश्न किये जाते है, जो उनकी विशेष ज्ञान वृद्धि में सहायक हो एवं वे तथ्य के विषय में विशेष ज्ञानार्जन कर सके।

2. उद्दीपन परिवर्तन दक्षता — कक्षा में छात्रों से लगातार प्रश्न पूछने अथवा उन्हें हमेंशा अध्ययन में व्यस्त रहने से उनमें शिक्षण के प्रति ऊबने की प्रवृत्ति, जागृत होती है एवं वे पढ़ाई से दूर भागते हैं इसकी समाप्ति के लिए यह पद्धति शिक्षक द्वारा अपनायी जाती है। और बच्चों में शिक्षण प्राप्ति के प्रति रुचि जगाई जाती। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित अवयव प्रयुक्त होते हैं :—

(क) अंग संचालन (Movement) — शिक्षक द्वारा कक्षा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर अथवा अपने अंग संचालन के द्वारा छात्रों को ज्ञान प्राप्ति हेतु उत्साहित किया जाता है।

(ख) भाव भंगिमा परिवर्तन — इसके अन्तर्गत शिक्षक अपने सिर, हाथ और शरीर के द्वारा ऐसी भाव भंगिमा प्रस्तुत करता है जिसके द्वारा वह छात्रों की ज्ञान प्राप्ति में रुचि वर्द्धित करता है। जैसे - आवेगात्मक अभिव्यंजना, आकार के प्रति सूचना उसकी आकृति सम्बन्धी धारणा हेतु भाव भंगिमा प्रस्तुत की जाती है।

(ग) संवाद पद्धति में परिवर्तन — (Change in Speech Pattern) एकाएक आवाज में परिवर्तन आवाज की अरोही एवं अवरोही पद्धति, गति एवं लय में परिवर्तन के द्वारा अध्यापन बच्चों के ध्यान को आकर्षित करता है।

(घ) केन्द्रीकरण (Focussing) — शाब्दिक, भाव भंगिमा या अशाब्दिक भाव भंगिमा के द्वारा छात्रों का ध्यान किसी विशेष तथ्य की तरफ आकर्षित किया जाता है जैसे 'ध्यान से सुनो' 'इसे देखो' इत्यादि।

(ङ) पारस्परिक संवाद परिवर्तन — (Change in interaction Style) इसके अन्तर्गत अध्यापक कभी किसी छात्र समूह के साथ वार्तालाप करता है अथवा कभी किसी एक छात्र से वार्तालाप करता है या कभी कभी छात्रों के बीच आपसी वार्तालाप करता है।

(च) रुकना (Pausing) — अध्यापक बच्चों के ध्यान आकर्षण हेतु बोलते बोलते अचानक कुछ देर के लिए रुक जाता है। जिससे कक्षा के छात्रों का ध्यान अचानक शिक्षक की तरफ आकर्षित हो जाता है।

(छ) मौखिक एवं प्रदर्शनात्मक अभिव्यक्ति — (Oral-Visual Switching) इसके अन्तर्गत कभी मौखिक, कभी प्रदर्शनात्मक एवं कभी कभी इन दोनों का एक साथ प्रयोग करके छात्रों को ज्ञान प्राप्ति हेतु आकर्षित किया जाता है।

3. पुनः पुष्टिकरण दक्षता — इसके अन्तर्गत व्यवहार सम्बन्धी निम्नलिखित अवयव आते हैं - सकारात्मक शाब्दिक (Positive Verbal), सकारात्मक अशाब्दिक (Positive Non verbal), नकारात्मक शाब्दिक (Negative Verbal), नकारात्मक आशाब्दिक (Negative Nonverbal), दुहराना (repeating), पुनः अभिव्यंजना (Rephrasing) छात्रों के उत्तर लिखकर, औसत छात्रों को उत्साह देकर अथवा पूरी कक्षा को उत्साहित करके उन्हें ज्ञानार्जक प्रति उत्साहित किया जाता है।

4. व्याख्यात्मक दक्षता — इसके अन्तर्गत शिक्षक के शैक्षणिक व्यवहार को दो भागों में बाँटा जा सकता है उपयुक्त व्यवहार (Desirable behaviours), अनुपयुक्त व्यवहार (Undesirable behaviours) अध्यापक को कभी कभी कक्षा में व्याख्यान पद्धति द्वारा शिक्षण देना पड़ता है जिसके अन्तर्गत उसे निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना पड़ता है।

(i) उपयुक्त व्यवहार :- (क) व्याख्यात्मक संयोजक शब्द जैसे 'क्योंकि' 'कारण है कि' 'इसी कारण' इत्यादि शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। (ख) प्रारम्भिक वक्तव्य (Begining Statements) (ग) उपसंहारात्मक वक्तव्य (Concluding Statements) (घ) छात्रों की समझ के परीक्षण हेतु छात्रों से प्रश्न पूछना (Questions to test pupil's understanding) (ङ) सही उत्तर देने वाले शिष्यों पर आधारित प्रश्न (Questions followed by Correct pupil's responses)।

(ii) अनुपयुक्त व्यवहार :- (क) असंम्बधित वक्तव्य (Irrelevant Statements) (ख) सतत वक्तव्य में कमी (Lacking in Continuity) (ग) अनुपयुक्त शब्दों का प्रयोग (Inappropriate Vocabulary) (घ) भाषा प्रवाह में कमी (Lacking in fluency) (ङ) अनुपयुक्त शब्द एवं लोकोत्तियों का प्रयोग (Use of vague words and phrases)।

5. श्यामपट्ट प्रयोग सम्बन्धी दक्षता — शिक्षक को कक्षा में अध्यापन के समय आवश्यकतानुसार अपने सबसे सहयोगी उपकरण श्यामपट्ट का प्रयोग करना पड़ता है। इसके प्रयोग में भी शिक्षक को निम्नलिखित बातों के प्रति सचेत रहना पड़ता है।

(i) लिखते समय स्वत:, सदैव बाँये रहते हुए दाहिने की तरफ लिखना।
(ii) लिखावट स्पष्ट एवं स्वच्छ होना।
(iii) आवश्यकतानुसार विशेष महत्वपूर्ण शब्दों का रेखांकन।
(iv) ध्यानाकर्षण हेतु उपयुक्त रंगीन चाक का प्रयोग।
(v) श्यामपट्ट पर सैदव बायीं तरफ से दायीं तरफ लिखना।
(vi) शब्दों का आकार उचित हो जिससे पिछले बेंचों पर बैठे छात्र भी आसानी से पढ़ सके।
(vii) लिखावट सुन्दर एवं आकर्षक होनी चाहिए।

सूक्ष्म शिक्षण की धारणा

भाषा शिक्षण में जितना महत्वपूर्ण स्थान विस्तृत अध्ययन रखता है उतना ही सूक्ष्म अध्ययन भी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। सूक्ष्म अध्ययन के लिए निर्धारित पाठ् पुस्तकों में मुख्यत: तीन प्रकार के पाठ होते हैं – गद्य, पद्य, नाटक आदि। सूक्ष्म शिक्षण के निम्नलिखित महत्व हैं –

(i) शब्द भण्डार में वृद्धि — भाषा सीखने में सहायता करना सूक्ष्म अध्ययन का तात्पर्य है। पाठ पुस्तक में आये प्रत्येक पाठ का अध्ययन गम्भीरतापूर्वक करना ताकि शब्द भंडार में वृद्धि हो सके और पाठ में निहित सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों और विचारों को भली भाँति समझ सकें, शाब्दिक अर्थ के साथ भावार्थ भी समझ सकें। अत: सूक्ष्म अध्ययन के द्वारा बालक का भाषा ज्ञान बढ़ता है, उसके शब्द भण्डार में भी वृद्धि होती है।

(ii) अत्माभिव्यंजनात्मक शक्ति का विकास — सूक्ष्म अध्ययन के द्वारा बालक साहित्य नई कहावतो, मुहावरों, नये शब्दों से परिचित होगा, उसे भाषा को शीघ्र समझने का अभ्यास भी होगा और समझकर अपने शब्दों में उसी विचार को अभिव्यक्त करना आ सकेगा। पाठ्य पुस्तक में लिखित अभ्यास द्वारा बालक को आत्मभिव्यंजनात्मक शक्ति का विकास किया जा सकता है।

(iii) भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने में सहायता — इस अध्ययन से बालक न केवल भाषा सीखता है बल्कि भाषा पर उसका पूर्ण अधिकार हो जाता है। इस गम्भीर अध्ययन के परिणामस्वरूप बालक परिमार्जित भाषा शैली का प्रयोग करना सीखा जाता है, किसी विद्वान का यह कथन सूक्ष्म अध्ययन के बारे में ठीक प्रतीत होता है –

"भाषा शैली एवं भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने का इससे उत्तम कोई अन्य साधन नहीं हो सकता।"

(iv) मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन — यदि किसी लेख को सरसरी दृष्टि से पढ़ें तो उतना आनन्द नहीं आता जैसे – सूर के पद ''मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी'' को यदि हम पढ़े तो कोई विशेष आनन्द हमको नहीं आयेगा किन्तु गहन अध्ययन के पश्चात पद में निहित बाल सुलभ चेष्टाओं का वर्णन पढ़कर साहित्यिक सैष्ठव से जब हम परिचित होते हैं तो आनन्द दूना बढ़ जाता है। सूक्ष्म अध्ययन का अभिप्राय यह नहीं है कि निर्धारित पाठ नीरस, कोरे उपदेश देने वाले व ऊबा देने वाले हों। रोचकता सफल पाठ्य पुस्तक का अनिवार्य गुण है।

भाषा अध्ययन में दो प्रकार की पुस्तकों का आश्रय लिया जाता है – एक तो सूक्ष्म अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तकें इसके अतिरिक्त विस्तृत अध्ययन की निर्धारित पुस्तकें। सूक्ष्म अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तकों का गंभीर अध्ययन किया जाता है। ये पुस्तकें समस्त अध्यापन का केन्द्र बनती हैं। किन्तु पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ सहायक पुस्तकों के अध्यापन की एवं पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों को पढ़ने की प्रेरणा देना भी आवश्यक है। ताकि बालकों में शीघ्रातिशीघ्र पुस्तकों को पढ़ने की आदत पड़ सके।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

लघु उत्तरीय प्रश्नः–

(i) सूक्ष्म शिक्षण क्या है ?
(ii) सूक्ष्म शिक्षण के अन्तर्गत किन–किन दक्षताओं का प्रयोग किया जाता है ?
(iii) उद्दीपन परिवर्तन दक्षता क्या है ?
(iv) भाव भंगिमा परिवर्तन से क्या समझते हो ?
(v) केन्द्रीकरण क्या है ?
(vi) श्यामपट्ट का उपयोग करते समय शिक्षक को किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है ?

रचनात्मक प्रश्न :–

(i) सूक्ष्म शिक्षण के महत्व एवं प्रयोजनीयता पर विचार कीजिए।
(ii) सूक्ष्म शैक्षणिक विधि की दक्षताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
(iii) सूक्ष्म शिक्षण की धारणा स्पष्ट कीजिए।

एक बूँद

प्रस्तावना – 'एक बूँद' कविता अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध कविता है। प्रस्तुत कविता में बूँद के माध्यम से घर छोड़ने वाले व्यक्ति की मनोदशा का वर्णन किया है। घर से निकलने वाला व्यक्ति परेशान रहता है उसे पता नहीं होता उसका क्या होगा ? उसकी किस्मत एवं कर्म उसे कहाँ ले जायेगी। सिंह जी ने बूँद का मानवीकरण बड़ा ही प्रभावी ढ़ंग से किया है। कवि ने यथार्थ का वर्णन किया है तथा मनुष्य में साहस का संचार किया है। यथार्थ स्थिति से अवगत कराया है कि प्रत्येक मनुष्य को घर छोड़ना ही पड़ता है।

उद्देश्य :-(1) बालकों में साहस और वीरता भरना साथ ही उन्हे प्रेरित करना।

(2) दुतता एवं शुद्ध उच्चारण कर सकना।

(3) अर्थ समझ कर लिख सकना।

(4) भविष्य में आने वाली हर विपत्ति का सामना करने के लिए प्रेरित करना।

(5) काव्य के प्रति रूचि जगाना।

एक बूँद

अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध''

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूंद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह। क्यो घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।। 1।।

दैव मेरे भग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।। 2।।

वह गयी उस काल एक ऐसी हवा,
वह समुन्दर ओर आयी अनमनी।
एक सुन्दर सीप का मुँह या खुला,
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।। 3।।

लोग यों ही हैं झिझकते सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।। 4।।

शब्दार्थ :- कढ़ी = निकली, बदा = लिखा, अनमनी = उदास, लौ = समान।

अभ्यास प्रश्न

1) दैव मेरे भाग्य ..... धूल

(क) प्रस्तुत पंक्ति की रचना एवं रचनाकार का नाम लिखिए।

(ख) यहाँ मैं शब्द किसके लिए आया है ?

(ग) इस अंश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2) लघुत्तरीय प्रश्न :-

(क) घर से निकलनें वाली बूँद क्या सोचती है ?

(ख) सीप में गिर कर बूँद क्या बन गयी ?

(ग) इससे कवि हमें क्या शिक्षा दे रहा है ?

3) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

(क) कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखो।

4) निम्नलिखित के विपरीतार्थक लिखिए-

आगे, खुला, अवसर, बंद।

5) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची (कम से कम तीन-तीन) लिखे -

देव, घर, बादल, फूल, हवा, मोटी

कदम्ब का पेड़

प्रस्तावना– 'कदम्ब का पेड़' सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता है। प्रस्तुत कविता में प्रकृति प्रेम को दर्शाया गया है। इस कविता में एक बच्चा अपनी माँ से कदम्ब के पेड़ के प्रति अपनी आत्मियता को प्रकट कर रहा है। वह अपनी माँ से कहता है कि यदि तुम मुझे बाँसुरी खरीद देती तो मैं कदम्ब की डाल पर चढ़ उसे बजाता। तुम मेरी बंसी को सुनती तो खुश हो आती। तुम सब काम छोड़कर मेरे पास आती तो मैं और ऊपर चढ़ जाता। तुम गुस्सा होकर मुझे डाँटती और जब नीचे आ जाता तो 'मुन्ना राजा' कहकर प्यार करती। माँ और बेटे के प्रेम को भी दर्शाया गया है।

उद्देश्य – (क) माँ और बेटे के वात्सल्य सम्बन्ध को समझ सकना।

(ख) बालसुलभ चंचलता को समझते हुए प्राकृतिक वस्तुओं पेड़ पौधें से प्रेम एवं इनका संरक्षण कर सकना।

(ग) द्रुतता एवं शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ सकना।

(घ) कठिन शब्दार्थों को समझ सकना एवं समझकर लिख सकना।

कदम्ब का पेड़

सुभद्रा कुमारी चौहान

यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।
ले देती यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीचे हो जाती यह कदम्ब की डाली।

तुम्हें नहीं कुछ कहता, पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मां, ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठे फिर बड़े मजे से मैं बाँसुड़ी बजाता,
अम्मा-अम्मा कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

सुन मेरी बंसी को माँ तुम इतनी खुश हो जाती।
मुझे देखने काम छोड़कर तुम बाहर तक आती।
तुमको बाहर आता देख बाँसुड़ी रख मैं चुप हो जाता।
पत्तों में छिपकर धीरे से फिर बाँसुरी बजाता।

गुस्से होकर मुझे डाँटती, कहती, ''नीचे आ जा''।
पर जब मैं न उतरता, हँसकर कहती, ''मुन्ना राजा''।
नीचे उतरो मेरे भैया। तुम्हें मिठाई दूँगी,
नए खिलौने, माखन, मिसरी, दूध मलाई दूँगी।

मैं हँसकर सबसे ऊपर की टहनी पर चढ़ जाता,
एक बार माँ कह पत्तों में वहीं कहीं छिप जाता।
बहुत बुलाने पर भी जब मै न उतरकर आता,
तब माँ, हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता।

तुम आंचल पसारकर अम्मा, वहीं पेड़ के नीचे,
ईश्वर से कुछ विनती करतीं, बैठी आँखे नींचे
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं धीरे से आ जाता,
तुम घबराकर आँख खोलती फिर भी खुश हो जाती
जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पाती।

इसी तरह कुछ खेला करते हम-तुम धीरे-धीरे
माँ कदम्ब का पेड़ अगर यह होता यमुना-तीरे।

शब्दार्थ :- यमुना = नदी का नाम, तीरे = किनारे, कन्हैया = कृष्ण, विकल = बेचैन, पासारकर = फैलाकर।

अभ्यास प्रश्न

(1) कन्हैया कदम के पेड़ को कहाँ चाहता था? वह किसे रिझाने का प्रयत्न करना चाहता है?

(2) 'कदम्ब का पेड़' कविता का सारांश तथा उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(3) (क) यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ .....

..... यह कदम्ब की डाली।

(अ) प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता एवं रचना का नाम लिखिए।

(आ) प्रस्तुत कथन कौन किसके प्रति कह रहा है।

(इ) पंक्तियों का सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(ख) मैं हँसकर सबसे ऊपर की टहनी .....

..... बहुत विकल हो जाता।

(अ) पंक्तियाँ किस कवि की किस रचना से ली गई हैं?

(आ) माँ क्यों विकल हो जाती है?

(इ) पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

(4) रचनात्मक प्रश्न :-

(क) निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए -

ऊपर, चढ़ना, बाहर, धीरे, राजा, गुस्सा

(ख) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें -

राजा, पेड़, कन्हैया, माँ, पत्ता, नदी।

हार की जीत

प्रस्तावना— 'हार की जीत' श्री सुदर्शन जी की प्रसिद्ध, नैतिक शिक्षाप्रद कहानी है। प्रस्तुत पाठ में बाबा भारती का पशु प्रेम दर्शाया गया है। उन्हें अपने घोड़े से बहुत प्रेम था। लेकिन एक दिन डाकू खड़ग सिंह धोखे से उनके घोड़े पर अधिकार कर लेता है। बाबा भारती उसे प्रार्थना करते है कि, उनके ठगे जाने की बात किसी को पता न चले। बाबा के आदर्श वचनों ने डाकू का हृदय परिर्वतन कर दिया। प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने अहंकार, चोरी एवं धुर्तता जैसे दुर्गुणों पर करारा प्रहार किया है। तत्कालीन और यर्थाथ समाज इन दुर्गजों की चपेट में था और है। सदाचार, परोपकार और सच्चाई जैसे गुणों की स्थापना के उद्देश्य से प्रस्तुत पाठ की रचना लेखक द्वारा की गई।

उद्देश्य – (i) अहंकार, चोरी एवं धुर्तता जैसे गुणों से बच सकना।

(ii) सदाचार परोपकार एवं सच्चाई जैसे गुणों को अपना सकना।

(iii) शुद्ध उच्चारण के साथ समझते हुए पढ़ एवं लिख सकना।

(iv) मुहावरे, लोकत्तियाँ, विलोम, सरल एवं संयुक्त वाक्य की जानकारी कर सकना।

(v) संक्षेप में कहानी लिख सकना।

हार की जीत

श्री सुदर्शन

(1)

माँ को अपने बेटे, साहुकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द प्राप्त होता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर होता था। भगवद भजन से जो समय बचाता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुन्दर एवं बलवान था। इसके जोड़े का घोड़ा सारे इलाके, में न था। बाबा भारती उसे सुल्तान कह कर पुकारते, देख-देख कर प्रसन्न होते थे। उन्होनें अपना सब कुछ छोड़ दिया था— रुपया, माल-असबाब जमीन। अब गाँव के बाहर एक, छोटे से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे, परन्तु सुल्तान से बिछुड़नें की वेदना उनके लिए असह्य थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते ऐसे चलता है जैसे मोर घनघटा देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या के समय सुल्तान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर नहीं लगा लेते तब तक उन्हें चैन नहीं आता।

खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। धीरे-धीरे सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। एक दिन दोपहर में वह बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

खड़ग सिंह ने सिर सुकाकर उत्तर दिया--- 'आपकी दया है।' ---- सुल्तान की चाह खींच लाई। 'विचित्र जानवार है', देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे। 'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'

'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी'

'कहते है देखनें में भी बड़ा सुन्दर है।'

'क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।' 'बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हुआ हुँ।'

बाबा और खड्ग सिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया दंभ से, खड़ग सिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्त्रों थोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा तो खड़ग सिंह के पास होना चाहिए था। इस साधू को ऐसी चीजों से क्या मतलब? कुछ देर तक आश्चर्य से चुप चाप खड़ा रहा इसके पश्चात हृदय में हलचल होने लगी, बालकों की तरह अधीरता से बोला : 'परन्तु बाबा जी इसकी चाल न देखी तो क्या देखा।'

(2)

बाबा तो मनुष्य थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुँह से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो उठा। छोड़े को खोल कर बाहर लाए और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचक कर सवार हो गए। घोड़ा वायु वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड़ग सिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था। जो वस्तु उसे पसन्द आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, रूपया था और आदमी थे। जाते-जाते बोला : 'बाबा जी, मैं यह घोड़ा आप के पास नहीं रहने दुँगा।'

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात में नीदं न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड़ग सिंह का भय लगा रहता। परन्तु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गए और इस भय को स्वप्न की तरह मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता थी कभी छोड़ों के शरीर को देखते, कभी रंग और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आई — 'ओ बाबा ! इस कंगले की बात भी सुनते जाना।

आवाज में करूणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिए। देखा एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले — 'क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है ?'

अपाहिज ने हाथ जोड़ कर कहा —'बाबा मैं दु:खिया हूँ' 'मुझ पर रहम करो। रामवाला यहाँ से मीलों दूर है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।

'वहाँ तुम्हारा कौन है।'

'दुर्गादन्त वैद्य का नाम तो आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।'

बाबा भारती ने घोड़े से उत्तरकर अपाहिज को छोड़े पर सवार किया और स्वंय उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है।

उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज खड़ग सिंह डाकू था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और उसके पश्चात् कुछ निश्चय कर के पूरे बल से चिल्लाकर बोले : 'जरा-ठहर जाओ।'

'बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।'

'परन्तु एक बात सुनते जाओ खड़ग सिंह एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार मत करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायेगा'।

'बाबाजी आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ। केवल यह घोड़ा न दूँगा।'

'अब घोड़े का नाम न लो मैं तुमको इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना के वल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट मत करना।'

'खड़ग सिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर वहाँ से भागना पड़ेगा। परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'

इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ?

खड़ग सिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हार कर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुँख पर गड़ा दी और पूछा------

'इससे आपको क्या डर है ?'

'बाबा भारती ने उत्तर दिया : लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगें।'

यह कहते कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कोई सम्बन्ध ही न था। बाबा भारती चले गये, परन्तु उनके शब्द खड़ग सिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है। जिस घोड़े की रखवाली में वे कई रात सोते नहीं, भजन भक्ति छोड़े दी पर आज उनके मुख पर दु:ख की रेखा तक नहीं, ख्याल केवल इतना कि लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

(3)

रात्रि के अंधकार में खड़ग सिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अन्दर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़ग सिंह सुल्तान की रास पकड़े हुए था। वह धीरे धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, किन्तु आज उन्हें किसी चोरी या डाके का भय नहीं था। खड़ग सिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर, सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इसे समय उसकी आँखो में पश्चाताप के आँसू थे।

शब्दार्थ :-

साहूकार = महाजन, धनी। अर्पण = दान, भेंट। असबाव = सामान, असह्य = असहनीय। कीर्ति = यश, ख्याति। अभिलाषा = इच्छा। सहस्त्रों = हजारों। बांका = वहादुर। मिथ्या = झुठ। करूणा = दया। अपाहिज = लूला, लंगड़ा। प्रयोजन = उपयोग। सन्नाटा = नीरवता। अस्तबल = घुड़साल। पश्चाताप = पछतावा। खरहरा करना = घोड़े की मालिश करना।

A. अभ्यास प्रश्न :-

1) खड़ग सिंह एवं बाबा भारती कौन थे?
2) खड़ग सिंह बाबा भारती के पास क्यों गया?
3) वृक्ष की छाया में पड़ा अपाहिज कौन था, उसका उद्देश्य क्या था?
4) पाठ के आधार पर बताओं कि हार कर भी कौन जीत गया व कैसे?

B. मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग करो :-

1) लट्टू होना, फूले न समाना, सिर मारना।
2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए —

क) यह घोड़ा बहुत ---------- एवं ---------- था।

ख) उसकी चाल तुम्हारा --------- ---------- लेगी।

ग) --------- और ---------- दोनों अस्तबल में पहुँचे।

घ) बाबा तो ---------- थे।

ङ) घोड़े पर चढ़ा लो ---------- ---------- भला करेगा।

एकाग्रता

प्रस्तावना :-

'एकाग्रता' महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित शिक्षाप्रद रचना है। प्रस्तुत पाठ में अर्जुन की एकाग्रता का परिचय मिलता है। गुरू द्रोण अपने विद्यार्थियों की परीक्षा लेने के उद्देश्य से एक नीले रंग की बनावटी चिड़िया पेड़ पर टंगवा दी एवं बारी बारी से बुलाकर उसपर निशाना साधने को कहा लेकिन निशाना साधनें के पहले वे उनकी एकाग्रता की जांच करना चाहते थे। जिनमें केवल अर्जुन ही सफल हो सके। वाकी लोगों ने दोण के प्रश्नों का संतोषप्रद उत्तर नहीं दिया।

उद्देश्य -

(i) एकाग्रता एवं कार्यनिष्ठा के भाव का विकास।

(ii) गुरु के प्रति आदर एवं सम्मान के भाव का विकास।

(iii) श्रवण, पठन, लेखन आदि के क्षमता का विकास विराम आदि चिन्हों का ध्यान रखते हुए शुद्धता शीघ्रता एवं भावबोध के साथ वाचन कर सकना।

(iv) आत्म अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास, बोलकर एवं लिखकर करना।

(v) रचनात्मक शक्ति, भाषा व्यवहार, व्याकरण के कुछ, नियमों को सीखने के साथ शब्द भण्डार में वृद्धि करना।

एकाग्रता

महावीर प्रसाद द्विवेदी

एक दिन दोणाचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा लेने का विचार किया। उन्होंने नीले रंग की एक बनावटी चिड़िया सामने पेड़ की ऊँची डाल पर रखी। सभी राजकुमारों को बुलाकर वह चिड़ियाँ उन्हें दिखायी। दिखाकर कहा —"तुम सभी उस निशाने पर बाण चलाकर चिड़ियाँ को वाण से भेजने के लिए तैयार हो जाओ।" मैं एक एक को निशाना लगानें की आत्मा दूँगा। बाण छोड़ने की आज्ञा पाते ही तुम लोग इस चिड़ियाँ के सिर के वाण से छेद देना।

यह कहकर द्रोण ने पहले युधिष्ठिर को बुलाया और निशाने के सामने खड़ा कर के उनसे कहा हे वीर पहले हमारे प्रश्न का उत्तर दो फिर युधिष्ठिर ने धनुष उठाया और उस पर वाण रख कर निशाने की तरफ तान कर खड़े हुए तब द्रोण ने पूछा —"हे धर्मपुत्र, क्या तुम इस चिड़िया को देखते हो?"

युधिष्ठिर ने कहा "हाँ देखता हूँ।"

फिर दोण ने पूछा "क्या तुम उस पेड़ को, हमको और जितने राजकुमार खड़े हैं उन सबको भी देखते हो?"

युधिष्ठिर ने उत्तर दिया मैं — "इस पेड़ को, आपको और खड़े हुए राजकुमारों को भी देख रहा हूँ।"

यह बात द्रोण के असन्तोष का कारण हुई।

उन्होंने अप्रसन्न होकर कहा —"तुम इस निशाने को भेद न सकोगे। यह कहकर युधिष्ठिर को वहाँ से लौटा दिया।"

इसके अन्नतर एक एक करके दुर्योधन आदि को भी आचार्य ने निशाने के सामने वाण चढ़ाकर खड़ा किया और सबसे यही प्रश्न किया। उत्तर सब ने वही दिया जो युधिष्ठिर ने दिया था। उनके उत्तरों को सुनकर दोणाचार्य को खेद हुआ। उन्होनें सबको तिरस्कार करके निशाने के सामने से हट जाने को कहा। किसी को वाण छोड़ने की आज्ञा नहीं दी।

अन्त में द्रोण ने मुस्कराकर अपने प्यारे शिष्य अर्जुन को बुलाया और उन्हें यथास्थान खड़ा करके कहा —"पुत्र इस बार तुम्हें यह निशाना वेधना होगा। धनुष्य की प्रत्यंचा चढ़ाओ और निशानें की तरफ वाण कर कुछ देर ठहरो। मेरे प्रश्नों का उत्तर देकर फिर आज्ञा पाते ही निशाने पर तीर चलाना।"

गुरु की आज्ञा से धनुष पर वाण रखकर अर्जुन एकटक निशानें की तरफ देखने लगे। द्रोण पहले की तरह अर्जुन से पुछने लगे "वत्स, पेड़ पर बैठी हुयी चिड़िया, हम और सभी भाई तुम्हें दीख पड़ते हैं ना?"

अर्जुन ने कहा —"मुझे सिर्फ निशाना दिखाई पड़ रहा है न पेड़ दीख पड़ता है, न आप दीख पड़ते है, न कोई और दीख पड़ता हैं।"

तब प्रसन्न होकर द्रोण ने फिर पूछा "क्या तुम्हें चिड़िया दिखाई पड़ रही है।"—

अर्जुन बोले — "मुझे चिड़ियाँ का सिर दीख पड़ता। उसका कोई अंग नहीं दीख पड़ता।"

यह सुनकर द्रोण बहुत प्रसन्न हुए और बोले —"अच्छा, तो निशाने पर बाण छूटने दो।"

आज्ञा पाते ही अर्जुन ने वाण छोड़ा और सिर कटी हुयी चिड़िया पृथ्वी पर आ गिरी। द्रोण ने अर्जुन को बड़े प्रेम से गले लगाया।

शब्दार्थ :-

अनन्तर = बाद में। यथास्थान = उचित स्थान। तिरस्कार = उपेक्षा, अपमान। प्रत्यंचा = धनुष की डोरी। वत्स = पुत्र। शिष्यों = चेलों। असन्तोष = नाखुश। खेद = दु:ख। गलेलगना = प्रेम करना। एकटक = अपलक, निरन्तर।

अभ्यास-प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्न

(i) द्रोणाचार्य शिष्यों की परीक्षा क्यों लेना चाहते थे ?

(ii) उन्होंने अन्य तीन शिष्यों को वाण चलाने से क्यों मनाकर दिया

(iii) गुरु जी ने क्यों अजुर्न को ही वाण चलाने की आज्ञा दी ?

(iv) द्रोण ने अर्जुन को क्यों प्रेम से गले लगा लिया ?

(v) प्रस्तुत पाठ से क्या शिक्षा मिलती है।

अभ्यासार्थ-प्रश्नावली

ख) बोधमूलक प्रश्न :-

(1) "तुम इस निसाने को भेद न सकोगे।"

(क) कौन, किससे कहता है ?

(ख) पंक्तियों का प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

(2) "मुझे चिड़ियाँ का सिर दीख पड़ता है।"

(क) कौन, किससे कहता है ?

(ख) वक्ता के चरित्र की क्या विशेषता है ?

(ग) पक्तियों की व्याख्या कीजिए।

ग) रचनात्मक प्रश्न :-

(क) पर्यायवाची शब्द लिखे (कम से कम तीन-तीन)

वाण, गुरु, चिड़ियाँ, पुत्र, पृथ्वी, प्रेम

(ख) निम्नलिखित शब्दों का वाक्य परिवर्तन कर लिंग निर्णय कीजिए

परीक्षा, सिर डाल, चमक, आज्ञा।

कबीर दास

प्रस्तावना- प्रस्तुत पाठ में महान संत और समाज सुधारक कबीर का वर्णन किया गया है। कबीर एक सच्चे मानव थे। उन्होंने अपने दोहों के द्वारा तत्कालीन समाज में फैली बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होने समाज में फैली छुआ-छूत, जाति-पाँति का भेद भाव, वाह्य आडम्बर एवं मूर्ति-पूजा का विरोध किया। कबीर एक अवधूत थे। कबीर न तो हिन्दू थे न मुसलमान वे एक सच्चे इन्सान थे। कबीर नैतिक एवं व्यवहारिक जीवन के समर्थक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श था।

उद्देश्य - (क) विद्यार्थियों में धर्म निरपेक्षता के गुणों का विकास करना। विद्यार्थियों में सभी धर्मों और मनुष्यों के प्रति आदर और सम्मान के भाव जागेगें।

(ख) आपसी प्रेम बढ़ेगा और सभी मनुष्यों को एक समान समझेंगें।

(ग) कबीर के विचारों एवं साहित्य से परिचित हो सकेंगे। सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित होंगे।

(घ) विद्यार्थियों में सुनने, समझने और पढ़ने लिखने की योग्यता बढ़ेगी अपने आप किसी चीज को जानने की रुचि बढ़ेगी।

कबीर दास

संकलन

बनारस के पास नीरु नाम का एक जुलाहा रहता था। उसकी पत्नी का नाम नीमा था। उनके कोई संतान न थी वे एक बच्चे के लिए प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे।

एक दिन नीरु कहीं जा रहा था। रास्ते में एक तालाब मिला। वहाँ वह मुँह हाथ धोकर विश्राम करने लगा। उसे एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी नीरु आवाज की ओर दौड़ा। उसने एक बच्चे को रोता हुआ देखा। उसने आवाज देकर बच्चे के अविभावक को बुलाने की कोशिश की। दूर-दूर तक उसे कोई नजर नहीं आया। वह बच्चे को अपनी गोद में उठाकर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए घर वापस चला गया।

नीमा और नीरु ने मिलकर बालक का नाम कबीर रखा। बालक कबीर इनकी गोद में पलने लगा। बड़े होने पर कबीर ने गुरु रामानन्द का नाम सुना। कबीर उसने दीक्षा लेना चाहते थे।

एक दिन कबीर ने गुरु रामानंद का पैर पकड़ लिया। कहने लगे ''आप अपना शिष्य बना लीजिए''। कुछ सोचने के बाद गुरु रामानंद ने उन्हे अपना शिष्य बना लिया।

गुरु से ज्ञान प्राप्तकर कबीर प्रेमपूर्वक लोगों तक अपनी बात पहुँचाने लगे। वे कहते- ईश्वर एक है। वह सभी से प्रेम करता है। ईश्वर मंदिर मस्जिद में नहीं रहता, वह मनुष्य के हृदय में ही रहता है। हिन्दू-मुसलमान सब उसी की संतान है। सारी दुनियां के इन्सान एक हैं।

कबीर दोहे और साखियों में अपना उपदेश दिया करते थे। उनके दोहे और साखियों को आज लोगों की जुबान से सुना जा सकता है।

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब।।

वृद्धावस्था में कबीर का देहान्त मगहर में हुआ। हिन्दू-मुस्लमान दोनों ने अपने अपने रीति रिवाज से उनका संस्कार किया। क्योंकि कबीर न हिन्दू थे न मुसलमान। वे एक सच्चे इन्सान थे।

शब्दार्थ - संतान = औलाद। अभिभावक = देख-भाल करने वाला। दीक्षा = गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान। भेंट = उपहार। फूला न समाना = बहुत प्रसन्न होना। हृदय = दिल। निभीर्क = निडर। विद्वान = पण्डित। वृद्धावस्था = बुढ़ापा।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(1) लघु उत्तरीय प्रश्न :-

(क) कबीर ने किसे अपना गुरु बनाया ?

(ख) कबीर ने लोगों को क्या उपदेश दिए ?

(ग) कबीर की मृत्यु कहाँ हुयी ?

(घ) कबीर की मृत शरीर का क्या हुआ ?

(ङ) इस पाठ का उद्देश्य क्या है ?

(2) बोध मूलक प्रश्न :-

(अ) काल करै सो आज कर ..... करेगा कब।

(क) यह किसका कथन है ?

(ख) पंक्तियों के माध्यम से किसके महत्व को दर्शाया गया है ?

(ग) पंक्तियों का मूल भाव क्या है ?

(3) रचनात्मक प्रश्न -

(क) निम्नलिखित शब्दों का पर्यायवाची लिखित -

संतान, पंडित, बुढ़ापा, ईश्वर, बालक

(ख) निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय कीजिए -

पत्नी, हाथ, इन्सान, दिन, शिक्षा।

(ग) निम्नलिखित शब्दों का विलोम शब्द लिखिए -

दिन, प्रसन्न, पण्डित, निभीर्क, बढ़ापा।

राष्ट्रीय झण्डा

प्रस्तावना – प्रस्तुत पाठ 'राष्ट्रीय झण्डा' के द्वारा बच्चों या पाठकों को। राष्ट्रीय झण्डे के रंगों से परिचित कराते हुए उसके महत्व को बताया गया है। प्रस्तुत पाठ द्वारा देश–प्रेम, सच्चाई, वीरता, धैर्य, साहस जैसे गुणों के विकास के लिए प्रेरित किया गया है। राष्ट्रीय झण्डा प्रत्येक देश की पहचान है। यह मान सम्मान का प्रतीक है। देश की आजादी के लिए लोगों ने स्वतंत्रता प्रेमियों ने झण्डे को हाथ में लेकर लड़ाई लड़ी। अनगिनत लोगों ने इस झण्डे के लिए अपने को बलिदान कर दिया। हम लोगों को अपने झण्डे का सम्मान करना चाहिए। यह एक सच्चे एवं आदर्श नागरिक का प्रमुख कर्तव्य है।

उद्देश्य – (क) छात्रों को आदर्श नागरिक के कर्तव्य के पालन की सीख मिलेगी। साथ ही देश प्रेम, सच्चाई, वीरता, धैर्य, साहस, झंण्डे से प्रेम आदि गुणों का विकास।

(ख) विराम, शुद्धता, शीघ्रता के साथ वाचन कर सकेगा।

(ग) शब्द बोध एवं अर्थ बोध के साथ वाचक एवं लेखन कला में पारंगत हो सकेगा।

राष्ट्रीय झण्डा

संकलन

हमारे देश का नाम भारतवर्ष है। इस देश का राष्ट्रीय झण्डा तिरंगा है। तिरंगे में केसरिया, सफेद और हरे रंग हैं। झंडे के बीच में एक चक्र होता है। यह झंण्डा हमारे देश की शान है। हर देशवासी इस झंडे का सम्मान करते हैं।

झंडे के प्रत्येक रंग का अपना-अपना महत्व है। केसरिया त्याग और वीरता, सफेद रंग प्रेम, शांति और सच्चाई तथा हरा रंग समृद्धि और विकास का सूचक है। झंडे के चक्र से निरंन्तर विकास की ओर बढ़ते रहने की प्रेरणा मिलती है।

आओ अब इसके महत्व को जाने- हमारे देश पर करीब 2 सौ वर्षों तक अंग्रेजों का शासन था। उन्होंने हमारी भारतमाता को पराधीन बनाकर रखा था। देश के लाखों वीर सपूत तिरंगा झंडा हाथ में लेकर अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए आजादी की लड़ाई लड़ते रहे। अनगिनत लोगों को इसके लिए आत्म बलिदान देना पड़ा। उसमें भगत सिंह एवं उनके साथी चन्द्रशेखर आजाद, मातंगिनी हाजरा, सुभाषचन्द्र बोस, खुदीराम बोस, विनय, बादल, दिनेश, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, सूर्य सेन, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद आदि का नाम तुम जानते ही हो।

भारत के वीर सपूतों ने अपने जान देकर तिरंगे की शान की रक्षा की, जिसका परिणाम यह निकला कि १५ अगस्त १९४७ के दिन हमारा देश आजाद हो गया। इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले पर तिरंगा झंडा फहरा कर मनाया गया। स्वतंत्र भारत के झंडे को सबसे पहले हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने फहराया था। तबसे हर १५ अगस्त के दिन देश के प्रधानमंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय झंडा फहराते हैं। देश के नाम संदेश भी देते है। भारत के कोने कोने में तिरंगा फहराकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। सरकारी, गैरसरकारी इमारतों, स्कूलों आदि पर झंडा फहराया जाता है। राष्ट्र गान गाया जाता है। बच्चे झंडे हाथ में लेकर प्रभात फेरी करते हुए झंडा गीत गाते हैं-

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला,
वीरों को हर्षाने वाला,
मातृ भूमि का तन मन सारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

अब आओ हम इसके चक्र के बारे में जाने। देखो इस चक्र में २४ तीलियाँ हैं। यह चक्र सम्राट अशोक के स्तंम्भ के धर्मचक्र से लिया गया है। आगे सुनो- भारतीय योद्धा केसरिया बाना पहनकर युद्ध में जाते थे। चूंकि बाना सिर पर रहता है, अत: केसरिया रंग झंडे में सबसे ऊपर है। झंडे के बीच में सफेद एवं सबसे नीचे हरा रंग है। हम भारतवासी युद्ध नहीं शांति चाहते हैं। सबके साथ मित्रता चाहते हैं। इसी कारण तिरंगे के बीच में सफेद रंग ने स्थान पाया है। हरियाली हमारे हरे-भरे खेतों तथा समृद्धि व्यापार एवं उन्नति से प्रकट होती है। यह रंग हमारे राष्ट्रीय झंडे के नीचे वाले भाग में है। क्योंकि हरियाली का संबंध हमारी मिट्टी से है।

राष्ट्र एवं राष्ट्रीय झंण्डे का सम्मान करना हर भारतवासी का कर्तव्य है।

शब्दार्थ – प्रतीक = चिन्ह, संकेत। न्यारा = अलग। मुक्त = स्वाधीन। बाना = पगड़ी। समृद्धि = सम्पन्नता। पावन = पवित्र पर्व त्यौहार। निरंतर = लगातार।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(1) अभ्यास प्रश्न :- लघु उत्तरीय

(क) भारत का प्रतीक क्या है ?

(ख) हमलोग राष्ट्रीय झंडा कब फहराते हैं ?

(ग) इस झंडे का क्या महत्व हैं ?

(घ) राष्ट्रीय झंडा हमें क्या संदेश देता है ?

(ङ) १५ अगस्त को झंडा क्यों फहराते हैं ?

(2) बोधमूलक एवं रचनात्मक प्रश्न–

(क) राष्ट्रीय झण्डे में रंगों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

(ख) राष्ट्रीय झंण्डे में चक्र के बारे में क्या बताया गया है ?

(ग) निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए –
मान, वीरता, सपूत, पराधीन, उन्नति, पावन।

(घ) निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय कीजिए–
झंडा, वीर, शासन, लड़ाई, हरियाली।

(ङ) निम्नलिखित एक वचन शब्दों के बहुवचन कीजिए–
एक, सपूत, इमारत, क्रान्तिकारी, स्कूल, बच्चा, लाख, प्रेमी।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास की रुप रेखा एवं लेखक परिचय

प्रस्तावना– साहित्य समाज का दर्पण है प्रस्तुत इकाई में आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास का वर्णन किया गया है। यहाँ आधुनिकालीन हिन्दी साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों का सुसंबद्धता और समग्रता की दृष्टि से अतिसंक्षेप में परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है और आप से यह अपेक्षा है कि इस आधार पर ही समुन्नयन कार्यों की योजना बनाना समीचीन होगा। साथ ही इस इकाई में कुछ लेखकों और कवियों का परिचय भी दिया गया है। अत: किसी भी साहित्य की विद्या को पढ़ाते समय उसके बारे में तथा उसके काल के बारे में संक्षिप्त परिचय आवश्यक हो जाता है, तभी हम उस कृति का सही अध्ययन कर सकते है और आनंद ले सकते हैं।

उद्देश्य – (i) आधुनिक युग रचनाओं एवं रचनाकारों को समझ सकेंगे।

(ii) आधुनिक युग की प्रवृत्तियों का परिचय कर सकेंगे।

(iii) विद्यार्थियों को अतिरिक्त सामग्री के अध्ययन के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

(iv) विभिन्न रचनाकारों से परिचित हो सकेंगे।

(v) साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न कर सकेंगे।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा

साहित्य की धारा नदी की धारा की भाँति निरंतर विकासशील होती है और उसका प्रवाह अखण्ड और अक्षुण्ण रहता है। तथ्य यह है कि साहित्य का कोई भी स्वरुप किसी एक दिन की घटना का परिणाम या प्रतिफल नहीं होता, अतः उसके लिए किसी निश्चित तिथि का अंकन या निर्धारण करना अत्यन्त कठिन है। फिर भी अध्ययन की सुविधा एवं व्यवहारिकता के दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया है जो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इस प्रकार है—

(i) वीरगाथा	काल	:	सम्वत्	1050–1375 वि0
(ii) भक्ति	काल	:	सम्वत्	1375–1700 वि0
(iii) रीति	काल	:	सम्वत्	1700–1900 वि0
(iv) आधुनिक	काल	:	सम्वत्	1900–अब तक

विभिन्न कालों के नामकारण के सम्बन्ध में यह ध्यान रखने योग्य है कि काल विशेष की विशिष्ट साहित्यिक प्रवृति को ध्यान में रखकर ही उसका नामकरण किया गया है।

यहाँ पर केवल आधुनिक काल का अध्ययन अभिष्ट है अतः केवल आधुनिक काल का ही वर्णन किया जा रहा है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य की रूपरेखा

आधुनिक काल शब्द से ऐसे काल का बोध होता है, जो प्राचीन परिपाटी और परम्परा से भिन्न कुछ नवीनता लिए हुए हिन्दी साहित्य में आया हो और पूर्ववर्त्ती काल के साहित्य से विल्कुल भिन्न और नया हो।

आधुनिक काल का हिन्दी साहित्य सर्वसाधारण का साहित्य है। इसमें साधारण जन की भावनाओं, उनके विचारों सुख–दुःख आदि की अभिव्यक्ति है। डा॰ शिवकुमार शर्मा के शब्दों में, "आधुनिक काल का हिन्दी साहित्य भारतीय समाज के एक सर्वथा नवीन वर्ग की वाणी को मुखरिट करता है।" जो वर्ग नवीन शासन प्रणाली तथा नयी अर्थ व्यवस्था के परिणाम स्वरूप पीड़ित और शोषित था, वह था जनता का सामान्य एवं मध्यवर्ग। आधुनिक काल के साहित्य में वास्तविक अर्थों में आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं, समस्याओं और इसके महत्वपूर्ण प्रश्नों को रूपायित किया गया और विशेष रूप से इसका गद्य साहित्य जीवन के ययार्थ चित्रण का विषय बना।

भाषा शैली के प्रयोगों एवं वैचारिक विशिष्टताओं के आधार पर आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य के उत्तरोत्तर विकास को भारतेन्दु, युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद नई कविता आदि कई नामों से अभिहित किया गया। भारतेन्दु युग के साहित्य में युग चेतना की सटीक समझ और मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। इस युग के साहित्यकारों ने रीतिकाल की अंलकरित शैली से हटकर काव्य साहित्य में नवीन विषयों का समावेश किया। भारतेन्दु जी ने शब्दों के विकृत रूपों और अप्रचलित शब्दों के प्रयोगों का बहिष्कार किया तथा भाषा को स्वभाविक गति प्रदान करके उसे अधिकाधिक जन सम्पर्क में लाने का प्रयास किया। इस युग का साहित्य सुधारवादी भावनाओं से प्रेरत राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक चेतना का इतिहास है। देशभक्ति संबंधी रचनाओं के साथ–साथ बाल–विवाह, विधवा–विवाह, जाति–पाँति बंधन, छुआ–छुत, मूर्ति पूजा आदि विषयों, अतीत की गौरव गाथा एवं वर्तमान की करुणा कथा की अभिव्यंजना इसकी विशेषताएँ हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के द्वितीय चरण में हिन्दी खड़ी बोली साहित्य को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा विशेष प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। इसलिए इसे द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। भारतेन्दु युग की राष्ट्रीय भावनाओं को द्विवेदी युग में अत्यधिक बल प्राप्त हुआ। व्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग सर्वमान्य हुआ। भाषा संस्कार के साथ-साथ गद्य और पद्य की विभिन्न विधाओं का जबरदस्त विकास हुआ।

आधुनिक काल के तृतीय चरण में हिन्दी साहित्य विविध दिशाओं में अग्रसर हुआ। अंग्रजी और बंगला साहित्य विशेषकर रविनद्रनाथ की विशिष्ट रुप की सृष्टि की जिसे हम 'छायावाद' के नाम से जानते हैं। इस धारा के कवियों ने प्रकृति के साथ अपने रागात्मक सम्बन्ध स्थापित किये और अत्यन्त चित्रमयी भाषा में नाना मनोरम रुप संकेत एवं भाव-संकेत उपास्थित किये। इनकी अभिव्यंजनाओं में लाक्षणिकता एवं मधुरिम कल्पना का बड़ा ही चित्ताकर्षक प्रयोग मिलता है।

देश के स्वातंत्रय-संग्राम के बीच विभिन्न राजनैतिक संगठन सामने आये और प्रत्येक ने अपनी विचारधारा का प्रचार साहित्य के माध्यम से किया। इनमें से समाजवाद एवं साम्यवाद का साहित्य पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा और हिन्दी का प्रगतिशील साहित्य सामने आया। प्रगतिवाद इसी को कहते हैं। इस साहित्य में कृषकों, श्रमिकों, दलितों एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति, शोषकों के प्रति आक्रोश, व्यवस्था के प्रति विद्रोह एवं रुढ़ियों के विरुद्ध, क्रांति के स्वर मुखरित हुए।

साहित्य के प्रांगण में प्रगतिवाद के बाद प्रयोगवाद ने प्रवेश किया। प्रयोगवादी साहित्य में मान्य उपमानों को घिसा-घिसाया मानकर नवीन उपमान-विधान का प्रयास दिखाई देता है। इस साहित्य में जागरुक बौद्धिकता एवं परम्परागत व्यवस्था के प्रति विद्रोह दिखाई देता है।

आधुनिक साहित्य में प्रगतिवाद तथा प्रयोग के स्वर मंद पड़ जाने पर नयी कविता, नयी कहानी आदि की चर्चा आरम्भ हुई। इसमें नवीनता के प्रति विशेष आग्रह दिखाई पड़ा। विविध साहित्य-वादों की भरमार को देखकर यह कहना अनुचित न होगा कि आधुनिक युग वादों का युग है। वस्तुत: वाद नाम का कोई साहित्य नहीं है। यदि साहित्य में कोई वाद संभव हो सकता है तो वह है — 'मानवतावाद।'

आधुनिक काल के साहित्य की विशेषताएँ

युग-निर्माणकारी सभी परिस्थितियों का प्रभाव युग विशेष पर पड़ता है। हिन्दी में नवीन यगीन चेतना का समारम्भ सन्1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद हुआ। साहित्य सामंती संस्कृति से हटकर जनवादी संस्कृति की ओर मुड़ा। साहित्य का स्वरूप ही परिवर्तित हो गया। उसका विषय ही नहीं शैली भी बदलने लगी। आधुनिक-युग का रूप बदल गया। आधुनिक-युग की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

गद्य का विकास - इस युग की सबसे बड़ी विशेषता गद्य का बहुमुखी विकास है। इस युग के पूर्व विशेषत: मुद्रण यंत्र के अभाव में केवल कविता का ही विकास हो पाया था। पद्य साहित्य का पर्यायवाची बना रहता था। वस्तुत: गद्य अपने विविध रुपों नाटक, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, समालोचना जीवन चरित्र आदि के साथ इस युग को गौरवन्वित कर रहा है।

खड़ी बोली की प्रधानता - खड़ी बोली की प्रधानता हिन्दी पद्य और गद्य दोनों के लिए स्वीकार की गई। नव युग की

चेतना की अभिव्यक्ति के लिए खड़ी बोली ही बढ़ते-बढ़ते राष्ट्रभाषा के उच्च पद पर आसीन होने योग्य हुई। अंग्रेजी उर्दू और देश की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं के शब्दों को अपनाकर वह समृद्धशाली बनी।

राष्ट्रीय भावना की वृद्धि- आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय भावना की वृद्धि इसकी तीसरी महान विशेषता है। देश में राष्ट्रीय चेतना धीरे-धीरे बढ़ी। राष्ट्र प्रेम की भावना और अधिक प्रबल हुई। किसान, श्रमिक, और हरिजन सभी राष्ट्र प्रेम के महत्व को समझ कर देश के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने को प्रस्तुत हो गये और देश स्वतंत्र हुआ। मैथलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्राकुमारी चौहान, माखन लाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल, द्विवेदी आदि ने राष्ट्र प्रेम के सुललित गान गाये।

साधारण जन जीवन का साहित्य- वीरगाथा काल में राजाओं और सामन्तों से संबन्धित रचनाएँ हुई। भक्ति काल में राम और कृष्णा का गुणगान हुआ। रीतिकाल में आश्रयदाता राजाओं को रिझानें के उद्देश्य से, काव्य-सुन्दरी को संवारा गया है।

आधुनिक युग के साहित्यकारों का ध्यान सर्वसाधारण की ओर गया। जो गिरे हुए थे उन्हें उठानें की आवश्यकता महसूस की गई। कृषक, मजदूर, विधवा, भिक्षुक आदि हमारी सहानुभूति के पात्र बने। समाज में निर्बल, दलित, पतित, पीड़ित, कुरुप, दीन हीन, और आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए थे। उन्हें सहारा दिया गया।

प्रकृति का सुन्दर चित्रण- प्रकृति को नये प्राण देने की क्षमता आधुनिक युग के कवियों में ही पायी जाती है। इन्होंने प्रकृति का वर्णन उद्दीपन रूप में न करके अवलम्बन रूप में अधिक किया है। पन्त ने प्रकृति की कल्पना प्रयसी के रूप में की है। इसके अलावा महादेवी वर्मा, प्रसाद, निराला, हिन्दी काव्य के प्रकृति उद्यान में ऐसे कवि माली है, जिन्होंने कविता क्यारियों को सुन्दर काव्य पुष्पों से भली भाँति सजा दिया है।

वादों की प्रधानता- आधुनिक काल में वादों की प्रधानता रही। इस काल में वादों की बाढ़ सी आ गई। ऐसी अवस्था पहले नहीं थी। वादों की विविधता का प्रभाव अच्छा ही पड़ा। इनसे युग-साहित्य की वृद्धि हुई। इस युग के प्रमुख वाद इस प्रकार हैं — छायावाद, रहस्यवाद, पालायनवाद, हालावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद। इन विविध वादों के कारण इस युग का बौद्धिक विकास हुआ।

साहित्य पर अंग्रेजी का प्रभाव- आधुनिक युग पर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव भी कम महत्व नहीं रखता। इस युग के पूर्व हमारे साहित्य पर पश्चिम का प्रभाव नहीं पड़ा था। अंग्रेजी राज्य भारत में कायम हो जानें के कारण हिन्दी गद्य-पद्य दोनों पर अंग्रेजी भाषा और साहित्य का प्रभाव पड़ा है।

मार्क्सवाद का प्रभाव- अर्थ वैषभ्य का विरोध आधुनिक युग की एक विशेष प्रवृति बन गई। वर्तमान युग मानव में आर्थिक दृष्टि से बहुत अन्तर देखना नहीं चाहता। यह प्रभाव मार्क्सवाद का है। आधुनिक हिन्दी-साहित्य मार्क्सवाद के प्रभाव से बहुत प्रभावित है। दिनकर, रामवृक्ष बेनीपूरी, डा0 देवराज, राम विलास शर्मा, शिवदान सिंह, आदि का साहित्य मार्क्सवाद से स्पष्टतः प्रभावित है।

लेखक व कवि परिचय

पं0 माखन लाल चतुर्वेदी

चतुर्वेदी जी का जन्म 1954 में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के अन्तर्गत बबई नामक ग्राम में हुआ था। इन्होंने बहुत दिनों तक अध्यापन कार्य किया। अध्यापन करते हुए इन्होनें संस्कृत, अंग्रजी, बंगला, मराठी और गुजराती की जानकारी प्राप्त की। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ 'प्रभा' में प्रकाशित होती रहीं। इन्होनें अध्यापन कार्य छोड़कर 'प्रभा' 'प्रताप' और 'कर्मवीर' में सम्पादन कार्य का निर्वाह बड़ी सफलता के साथ किया। अभी हाल ही में इनकी मृत्यु हुई है।

इनके प्रमुख काव्य ग्रंथ 'हिमकिरीटिनी' 'हिमतरंगिणी', 'माता', 'समर्पण', 'युग चरण' आदि हैं। इन्होनें राष्ट्रीय आन्दोलन में भी भाग लिया। राष्ट्र प्रेम से सम्बन्धित इनकी कविताएँ बड़ी सरस और भावुकतापूर्ण हैं। 'पुष्प की अभिलाषा' कवि की राष्ट्र प्रेम से भरी-पूरी है। वे एक अच्छे निबन्धकार एवं नाटककार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। गद्य काव्य क्षेत्र में इनकी भाषा अनोखी है। 'साहित्य देवता' इनका सुप्रसिद्ध काव्य संग्रह है।

डा0 हरिवंश राय बच्चन

इनका जन्म 1906 में हुआ था। इन्होंने छालावादी प्रवृत्ति के साथ हिन्दी साहित्य में प्रवेश किया। मस्ती के जीवन को अपनाने की प्रवृत्ति इनकी कविताओं में है। इनकी 'मधुशाला' और 'मधुबाला' नामक काव्य पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हुई। इनकी कविताओं में उर्दू की सी रवानी है। इनकी 'निशा निमन्त्रण' और 'एकान्त संगीत' नामक पुस्तकें भी पसंद की गई इनकी अन्य कृतियाँ —'मिलन यामिनी', 'सतरंगिणी' हैं। इनमें निराशा की पुकार है। बच्चन के दो संस्मरण क्या भूलूँ क्या याद करुँ, नीड़ का निर्माण फिर विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए। इनकी भाषा बड़ी आकर्षण बन पड़ी।

दूसरी शादी करने के बाद बच्चन का जीवन बदल गया। वे निशावादी और पलायनवादी न रहकर पुरूषार्थी बन गये। बच्चन की भाषा सरल, सुबोध एवं मुहावेरदार है। कवि गीतकार हैं। उन्हें विभिन्न छन्दों को अपनाने की आवश्यकता पड़ी ही नहीं। उनकी शैली सुबोध है। लयात्मकता की दृष्टि से बच्चन के गीत हिन्दी काव्य जगत के श्रृंगार है।

प्रेमचन्द

प्रेमचन्द का वास्तविक नाम धनपत राय था। और उन्हें नवाब राय भी कहा जाता था। उनका जन्म काशी के निकट लमहीं नामक ग्राम में 31जुलाई 1980 ई0 में हुआ था। वे एक साधारण कायस्थ परिवार के थे। उनके पिता अजायब राय तथा माता आनन्दी देवी थी। बहुत छोटी सी आयु में ही इन्हें मातृ स्नेह से बंचित होना पड़ा। उनकी सौतेली माँ का उनके प्रति व्यवहार अच्छा न था।

पढ़ने में तेज होने के कारण इनकी फीस माफ थी। पर जीवन निर्वाह की अन्य आवश्यकताओं के लिए ट्यूशन् आदि पर खर्च चलाना पड़ता था। गणित में कमजोर होने के कारण इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण न कर सके। अंत में पढ़ना छोड़कर अध्यापक की नौकरी कर ली।

प्रेमचन्द्र के साहित्यिक जीवन का आरंभ उनकी कहानियों से हुआ। कहानीकार के रूप में अपने समय के सर्वोच्च कलाकार थे। इनके किस्से किसी न किसी प्रेरणा अथवा अनुभव पर आधारित होते। उनकी रचनाओं में भावात्मक सत्य

दीखता है। कहानी के अलावा वे उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आदि लिखे। रूठी रानी, प्रेमा, वरदान, रंगभूमि कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र इनकी प्रमुख कहानियाँ है। इनका कहानी साहित्य समृद्ध और विशाल है। विषय की दृष्टि से इनकी कहीनियों को सामाजिक ऐतिहासिक, राजनैतिक, धार्मिक नैतिक और राष्ट्रीय नामक भागों में विभाजित किया जा सकता है। अक्टूबर 1936 के प्रात:काल इनकी मृत्यु हो गई।

कबीर दास

कबीरदास निर्गुण काव्य धारा की ज्ञानमार्गी शाखा के सन्त कवि थे। इनका जन्म 1454 वि0 (1399 ई0) में काशी में एक विधवा ब्राह्मनी के गर्भ से हुआ था। वह इन्हें लोकलज्जा के भय से लहरतारा नामक तालाब के पास फेक आयी। संयोग से नीरू और नीमा नामक नि:सन्तान दम्पति ने इन्हें उठा लिया। इनका विवाह लोई नामक स्त्री से हुआ था जिनके कमाल नामक पुत्र और कमाली नामक पुत्री उत्पन्न हुई।

कबीर जी का मन बचपन से ही भगवत् भक्ति में लगा रहा। साधु-संतों की संगति में रहा करते थे। घर-गृहस्थी में इनकी रुचि न थी। इन्होंने 'कबीर-पन्थ' नामक अपना एक पन्थ चलाया।

कबीर पढ़े लिखे नहीं थे। उनके शिष्यों में उनकी कविताएँ लिखी। कबीर के शिष्य धर्म दास ने 'बीजक' नाम से इनकी रचनाओं का संग्रह किया। 'रमैनी चौपाइयों' में और 'सबद' पदों में है। कबीर के सम्पूर्ण रचनाओं का संकलन बाबू स्याम सुन्दर दास ने कबीर ग्रन्थावली के नाम से किया है।

कबीर जी निर्गुण सम्प्रदाय की ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख संत थे। ये रुढ़िवादी, परम्पराओं और अंध विश्वासों के घोर विरोधी थे। रोजा, नमाज, मूर्तिपूजा तिलक, छाया आदि को ढोंग बताकर इन सबका खण्डन किया। इनकी कविता हृदय के उद्गार है। इसमें किसी प्रकार का बनावट या दिखावा नहीं है। इनका स्वर्गवास 1518ई0 में मगहर में हुआ।

सुभद्रा कुमारी चौहान

श्री, मही सुभद्रा जी का जन्म 1904 ई0 में नागपंचमी के दिन प्रयाग के निहालपुर मुहाल्ले में हुआ था। सं0 1976 में जब वह प्रयाग के कस्थबेट गर्ल्स स्कूल की छात्रा थी। तभी उनका विवाह खंडवा निवासी डा0 लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हो गया। पति के आदेशानुसार वह बनारस के थियोसोफिकल विद्यालय में पढ़ने गयी, पर कलकत्ता कांग्रेस में असहयोग का प्रस्ताव पास होने पर उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया। उनके पति ने भी वकालत करने का निश्चय छोड़ दिया। और वह पं0 माखनलाल चतुर्वेदी के साथ 'कर्मवीर' के सम्पादन तथा असहयोग आन्दोलन में योग देने लगे। सुभद्रा जी कई बार राजनीतिक आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेने लगी और कई बार जेल की यातनाएँ भी सही। वह मध्यप्रदेश विधान सभा की सदस्या भी रही तथा उनका जीवन अत्यन्त सरल एवं सादगीपूर्ण रहा।

मूलत: सुभद्रा जी कहानीकार और कवयित्री ही थी, पर उनकी रचनाएँ संख्या की दृष्टि से कम होते हुए भी गौरव की वस्तु है। मुकुल, बिखरे मोती, झाँसी की रानी, उन्मादिनी, त्रिधारा, सभा के खेल, सीधे-सादे चित्र और विवेचनात्मक गल्प विहार नामक प्रसिद्ध रचनायें है। देशप्रेम और परिवारिक प्रेम ही इनकी रचनाओं का मुख्य विषय है। इनकी भाषा साहित्यिक खड़ी बोली और संस्कृत के शब्दों के साथ ही फारसी भी है। इनकी मृत्यु 1948 में हो गई।

पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी

पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म रायबरेली जिला के दौलतपुर ग्राम में सन् 1864 में हुआ था। इनकी मृत्यु 1935 में हुई। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव के स्कूल में हुई। 13वर्ष की अवस्था में अंग्रेजी पढ़ने के लिए ये रायबरेली गये। फिर ये अपने पिता के साथ बम्बई गये। वहाँ इन्होंने गुजराती और मराठी का ज्ञान प्राप्त किया। इन्हें रेलवे की नौकरी करने के कारण नागपुर, अजमेर, झाँसी आदि कई शहरों में जाना पड़ा। अंत में इन्होंने बंगला भी सीख ली। रेलवे की नौकरी से इस्तीफा देकर इन्होंने हिन्दी सेवा करने का निश्चय किया।

हिन्दी कविता के प्रति इनकी रूचि बालकपन से ही थी। इन्होने यह आन्दोलन चलाया कि जब गद्य खड़ी बोली में लिखा जाता है, तो पद्य को भी खड़ीबोली में लिखा जाना चाहिए। इन्होंने 'सरस्वती' नामक पत्रिका का सम्पादन 20 वर्षो तक किया। इस बीच खड़ी बोली में कविता लिखने के लिए बहुतों को प्रोत्साहित किया।

भाषा परिष्कार करने के साथ ही इन्होंने विषय और अभिव्यक्ति शैली के परिवर्तन पर भी बल दिया। द्विवेदी ली ने कविताएँ बहुत लिखी, पर उनमें साहित्यिक उत्कृष्ठता का अभाव सा है। उनकी कविता में विचारों की प्रधानता है। उसमें कल्पना और अनुभूति की कमी है। उनका महत्व कवि रुप में उतना नहीं है जितना कवि निर्माता के रुप में है। खड़ी बोली को काव्य-भाषा बनाने का उनका सफल प्रयत्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

इनका उपनाम 'हरिऔध' है। ये ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में कविता करते थे। इन्होंने रीति ग्रन्थों के पर रस कलश की रचना की। इस पुस्तक में प्राचीन नायिकाओं के साथ इन्होंने 'देशप्रेमिका' 'धर्मसेविका' आदि नायिकाओं का भी उल्लेख किया है।

हरिऔध जी का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'प्रियप्रवास' है। वह खड़ीबोली का सर्वप्रथम महाकाव्य है। इसकी भाषा सस्कृतगर्भित तथा सरल दोनों तरह की है। कवि ने इसमें मानवतावादी आदर्शों की स्थापना की है। खड़ी बोली का प्रारम्भिक काव्य होने पर भी यह उत्कृष्टता की दृष्टि से समय से बहुत आगे है। जीवन के उच्च संदेश इसमें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

"वैदेही वनवास" इनका दूसरा प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ है। यह सुबोध तथा सरस है। इन्होंने सामालोचना के क्षेत्र में भी अच्छा काम किया है। इनके व्याख्यान बड़े विद्वतापूर्ण होते थे। हरिऔध जी हमारे प्रतिरिधि राष्ट्रकवि है। ये मुख्यत: कवि के रूप में ही प्रसिद्ध थे। बोल चाल की भाषा में लिखे गये इनके काव्य ग्रन्थ 'चोखे चौपदे' और चुभते चौपदे हैं। इनमें इन्होंने मुहावरे का बड़ा फबता प्रयोग किया है।

श्री सुदर्शन

इनका पूरा नाम बदरीनाथ है। इनका जन्म स्थालकोट में हुआ था। प्रेमचंद वर्ग के कहानीकारों में इनका नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। प्रेमचन्द की भाँति ये हिन्दी से उर्दू में आये। इसलिए इनकी भाषा में जो स्वच्छता सरसता, स्वभाविकता, चुस्ती चमत्कार और मुहावरेदारी है वह अन्यन्त दुर्लभ है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह है - सुदर्शन - सुधा तीर्थ-यात्रा, परिवर्तन, पुष्पलता, पनघट, सुप्रभात, सुदर्शन, सुमन, प्रमोद, फूलमती, नवनिधि, नगीने, सुहराब, रुस्तम और चार कहानियाँ।

प्रेमचन्द की भाँति ये भी आदर्शोमुख यथार्थवादी कहानीकार हैं। अपनी कहानियों में इन्होंने व्यक्तिसुधार और समाज सुधार दोनों की ओर ध्यान दिया है। 'हार की जीत' इनकी प्रसिद्ध कहानी है। बाबा भारती का मार्मिक वाक्य "लोगों को यदि इस घटना का पता लग जाय तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे " डाकू खड्ग सिंह का हृदय परिवर्तन कर देता है। वह साधु बन जाता है। इस परिवर्तन में कहानीकार की कला की विशिष्टता है।

कहानीकार के अलावा इन्हें चलचित्र जगत में विशेष सफलता मिली है। धरती माता, भाग्यचक्र, रूपरेखा, सिकन्दर, पत्थर का सौदागर आदि चित्रों के कथानक इन्हीं के द्वारा रचे गये हैं। अपने मोहक संवादों और सरल गीतों के लिए ये हिन्दी सिनेमा संसार में विख्यात हैं।

अभ्यासार्थ-प्रश्नावली

क) संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्न

(i) हिन्दी साहित्य के इतिहास को कितने भागों में बाँटा गया है ?

(ii) आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य को उन्तरोन्तर विकास के आधार पर किन-किन युगों में बाँटा गया है ?

(iii) आधुनिक युग में गद्य के विकास पर टिप्पणी लिखिए।

(iv) आधुनिक साहित्य पर मार्क्सवाद के प्रभाव को लिखिए।

ख) रचनामूलक प्रश्न

(i) आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि का संक्षिप्त विवरण दें।

(ii) आधुनिक हिन्दी साहित्य की परिस्थितियों का उल्लेख करें।

(iii) आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियों या विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(iv) निम्नलिखित साहित्यकारों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

माखनलाल चतुर्वेदी, डा0 हरिवंश राय बच्चन, डा0 हरिवंश राय बच्चन, प्रेमचन्द्र कबीर, सुभद्रा कुमारी चौहान, पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी, हरिऔध, श्री सुदर्शन,

व्याकरण - शिक्षण

प्रस्तावना- प्राचीनकाल से ही हमारे देश में भाषा सीखने के लिए व्याकरण शिक्षण पर विशेष बल दिया जाता था। यास्क, पाणिनी, पतंजलि, भर्तृहरि आदि प्रसिद्ध वैयाकरण हुए हैं। उसी परम्परा में कामता प्रसाद गुरु तथा आचार्य किशोरी दास बाजपेयी का हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में विशेष योगदान है। बच्चा प्रारम्भ में अनुकरण द्वारा बिना जाने भाषा का व्यवहार सीखना है। किन्तु व्याकरण ज्ञान से भाषा के शुद्ध परिष्कृता एवं मानक रूप को जानकर भविष्य में वह आत्माविश्वास के साथ भाषा प्रयोग में दक्ष हो जाता है। भाषा के प्रयोग में शुद्धता और स्पष्टता तथा प्रभावोत्यादकता लाने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। किन्तु व्याकरण साध्य नहीं, साधन है। भाषा की प्रकृति, उसके ध्वनि, रूप विज्ञान एवं शब्द निर्माण के नियमों की जानकारी के लिए व्याकरण का शिक्षण आवश्यक है। व्याकरण के नियमों की जानकारी से संन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, वाक्य रचना, मुहावरे, समोच्चरित शब्द, विलोम शब्द, पर्यायवाची आदि का संश्लेषण एवं संक्षिप्तीकरण किया जा सकता है जिससे कम शब्दों में अधिक अर्थ का संप्रेषण संभव हो सके।

उद्देश्य — (i) व्याकरण का स्वरूप एवं व्याकरण शिक्षण के महत्व का उल्लेख कर सकेंगे।

(ii) व्याकरण शिक्षण की आगमन, निगमन एवं पाठ संसर्ग विधियों का निरुपण एवं अन्तर समझ सकेंगे।

(iii) व्याकरण शिक्षण में पाठ विकास की प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों को बता सकेंगे।

व्याकरण

मुहावरे

साधारण रूप में 'मुहावरा' उस वाक्यांश को कहते हैं जिसके प्रयोग से वाक्य के अर्थ में विलक्षणता उत्पन्न हो जाती है, जैसे अँगूठा दिखाना। यह एक साधारण सा वाक्यांश है। इसका साधारण अर्थ है अँगूठे को दिखाना। पर यह एक मुहावरा भी है और मुहावरे के रूप में इसका अर्थ है 'देने से साफ मुकर जाना'।

मुहावरों का प्रयोग भाषा में सौष्ठव, माधुर्य और कथन में चमत्कार तथा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। कुछ विशेष मुहावरे और उनके अर्थ इस प्रकार हैं —

अंग-अंग ढीला होना (बहुत थक जाना)	—	अधिक काम करने से मेरे अंग अंग ढीले हो गये।
अंगारों पर लेटना (बहुत व्यग्र होना, घबड़ाना)	—	वह परेशानी में पड़कर अंगारों पर लेट रहा है।
अंगुलियों पर नाचना (वशीभूत होना)	—	उसकी अपनी बुद्धि काम नहीं करती, वह तो उसकी अंगुलियों पर नाचता है।
अँचरा पसारना (भीख माँगना)	—	कुन्ती ने अँचरा पसारकर कर्ण को अर्जुन से न लड़ने के लिए कहा।
अंधा बन जाना (धोखे में आ जाना)	—	उसके चकमे में आकर बहुत से लोग अंधे बन जाते हैं।
अंधे की लकड़ी (एकमात्र सहारा)	—	बुढ़िया के लिए उसका पुत्र अंधे की लकड़ी है।
अक्ल का दुश्मन (नासमझ)	—	मदन तुम अक्ल के दुश्मन हो, इसलिए तुम्हें कुछ समझ में नहीं आता।
अक्ल चकराना (बुद्धि काम न करना)	—	परीक्षा में कठिन प्रश्न देखकर उसकी अक्ल चकराने लगी।
अक्ल मारी जाना बुद्धि भ्रष्ट होना)	—	तुम्हारी अक्ल मारी गयी है, तुम्हें अपनी लाभ समझ में नहीं आती।
अग्नि में घी डालना (तकरार बढ़ाना)	—	बात साधारण थी, लेकिन तुमने अग्नि में घी डाल दिया।
अपना उल्लू सीधा करना (अपना मतलब सिद्ध करना)	—	स्वार्थी लोग हमेशा अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।
अपने पाव पर कुल्हाड़ी मारना (अपनी हानि खुद करना)	—	वह गलत कार्य करके अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार लिया।
आँखे दिखाना (धमकाना)	—	मुझे आखे मत दिखाओ मैं डरने वाला नहीं हूँ।
आँखे फेरना (प्रतिकुल होना)	—	विपत्ति में मित्र भी आँखे फेर लेते हैं।
आँखो पर पट्टी बाँधना (असावधान होना)	—	आँखों पर पट्टी बाँधने से तुम हमेशा ठगे जाओगे।
कमर कसना (तत्पर होना)	—	विजय चाहते हो तो कमर कस लो।

कागज काले करना (व्यर्थ लिखना)	—	आजकल अच्छे लेखक कम हैं। अधिकांश कागज काला करते है।
दाँत काटी रोटी होना (घनिष्ट सम्बन्ध होना)	—	राम और श्याम में दाँत काटी रोटी है।
दिल दरिया होना (उदार होना)	—	मोहन का दिल दरिया है। उसके दरवाजे से कोई खाली हाथ नहीं लौटता।
थाह मिलना (भेद का पता चलना)	—	वह बहुत चालक है। उसके दिल का थाह मिलना कठिन है।
नाक कटना (बदनाम होना)	—	पुत्र के खराब कार्यों से पिता की नाक कट गई।
नाक का बाल होना (अति प्रिय होना)	—	अच्छे व्यवहार के कारण सुनील सभी की नाक का बाल हैं।
बगुला भगत बनना (पाखण्ड दिखलाना)	—	वह पण्डित पूरा बगुला भगत है। इससे सावधान रहो।

समोच्चरित शब्द

समोच्चरित शब्द वे शब्द होते हैं, जिनका उच्चारण एक समान होते हुए भी उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे —

(1)	दिन	—	दिवस	(2)	द्रव	—	तरल वस्तु
	दीन	—	गरीब		द्रव्य	—	तत्व, वस्तु
(3)	पथ	—	रास्ता	(4)	परुष	—	कठोर
	पथ्य	—	हितकर		पुरूष	—	मनुष्य
(5)	प्रसाद	—	कृपा	(6)	पानी	—	जल
	प्रासाद	—	महल		पाणि	—	हाथ
(7)	प्रकार	—	भेद, तरह	(8)	मैं	—	अहम् (I)
	प्राकार	—	चार दीवारी		में	—	अन्दर (In)
(9)	बदन	—	शरीर	(10)	लक्ष्य	—	उद्देश्य
	वदन	—	चेहरा		लक्ष	—	लाख
(11)	व्यजन	—	पंखा	(12)	चपल	—	चंचल
	व्यंजन	—	कई प्रकार के भोजन		चप्पल	—	पैरों में पहनने का चप्पल
(13)	ज्वर	—	बुखार	(14)	तरणि	—	नौका, सूर्य
	ज्वार	—	समुद्र का उफान		तरुणि	—	जवान औरत
	जुआर	—	एक अन्न				
(15)	तर्क	—	दलील, युक्ति	(16)	तरंग	—	लहर
	तक्र	—	छॉछ		तुरंग	—	छोड़ा

(17) व्यसन — लत
वसन — कपड़ा

(18) ह्लास — कमी
हास — प्रसन्नता

(19) अशक्त — शक्तिहीन
असक्त — विस्क्त

(20) क्रम — सिलसिला
कर्म — कार्य

(21) उपल — पत्थर
उत्पल — कमल

विपरीतार्थक शब्द

दो शब्द जब विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, तब उनमें से एक दूसरे को दूसरे का विपरीतार्थक या 'विलोम' शब्द कहते हैं। जैसे — घात - प्रतिघात।

विपरीत शब्द के निर्वाचन के समय कई बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए —

(i) समधर्मी शब्दों में से ही विपरीतार्थक शब्द का चयन करना चाहिए। यदि शब्द तत्सम, तत्भव, देशी अथवा विदेशी हो तो विलोम भी तत्सम, तत्भव, देशी तथा विदेशी होना चाहिए।

(ii) मूल शब्द का लिंग विपरीत शब्द में भी वही रहेगा। जैसे — सबल-दुर्बल।

(iii) मूल शब्द का कारक विपरीत शब्द में ज्यों का त्यों रहता है। जैसे अपने-पराये।

विपरितार्थक शब्द गठन करने की पद्धति

साधारणत: विपरितार्थक शब्द का गठन छ: प्रकार से किया जाता है

(i) भिन्न शब्द के व्यवहार से जैसे— हानि-लाभ, सुख-दु:ख।

(ii) अव्यय के योग से — ग्राह्य-अग्राह्य, मान-अपमान।

(iii) उपसर्ग से — वाद-प्रतिवाद।

(iv) उसर्ग के परिवर्तन से — अनुराग-विराग।

(v) प्रत्यय से — शासक -शासित।

(vi) लिंग परिवर्तन द्वारा — माता-पिता, बेटा-बेटी।

आगम	सुगम	अपमान	मान
रूचि	अरूचि	आधुनिक	प्राचीन
आस्तिक	नास्तिक	आयात	निर्यात
अनुरक्ति	विरक्ति	आसक्त	अनासक्त
अग्नि	जल	इहलोक	परलोक
अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक	एकता	अनेकता

आकर्षण	विकर्षण	क्रय	विक्रय
आभ्यान्तर	ब्राह्य	ज्वार	भाटा
इष्ट	अनिष्ट	प्रवृति	निवृत्ति
उपयुक्त	अनुपयुक्त	उत्थान	पतन
उग्र	सौभ्य	राजा	रानी
अपना	पराया	नाना	नानी
लड़का	लड़की	बेटा	बेटी
कटु	मधु	लड़का	लड़की
अमर	मर्त्य	कुत्ता	कुतिया
अनुलोम	प्रतिलोम	अंधेरा	उजाला
मित्र	शत्रु	आकाश	पाताल

पर्यायवाची शब्द

समान अर्थ को व्यक्त करने वाले शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं। समृद्ध भाषाओं में पर्यायवाची शब्द की अधिकता होती है। यथा कमल के पर्यायवाची हैं शतदल, इंदीवर, राजीव, पुण्डरीक, अम्बुज, वारिज, पंकज, नीरज आदि।

भले ही पर्यायवाची शब्द मोटे तौर पर समान अर्थ व्यक्त करें किन्तु, गहराई से विचार करने पर उनमें अर्थगत सूक्ष्म अन्तर अवश्य होता है। जैसे कमल के तीन पर्यायवाची ले राजीव, इंदीवर, पुण्डरीक यद्यपि ये तीनों शब्द कमल के लिए प्रयुक्त है, किन्तु इनके रंग अलग हैं राजीव–लाल कलम, इंदीवर,–नीलकमल, पुण्डरीक–पीले कमल के लिए प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार जल और पानी में। जल स्वच्छता एवं शुद्धता का प्रतीक है। पूजा के लिए जल लाओ जब कि पानी में ऐसी बात नहीं पानी खेत में चढ़ा आओ। सिंचाई के लिए प्रयुक्त पानी में पवित्रता नहीं देखी जाती।

पर्यायवाची शब्दों की सूची

अर्जुन : धनंजय, पार्थ, कौन्तेय, सव्यसाची, गांडीवधारी।

अश्व : घोड़ा, घटक, हय, बाजि, तरंग, सैन्धव।

अरण्य : जंगल, कान्तार, वन, विपिन, कानन।

आकाश : नभ, व्योम, शून्य, अनन्त, अन्तरिक्ष।

अमृत : सुधा, पियूष, सोम, मधु, सुरभोग।

अग्नि : आग, अनल, पावक, कृशान्त, दहन, उताशान।

पृथ्वी : अचला, क्षिति, वसुंधरा, धरा, मेदिनी, भू।

गणेश : गणपति, विध्नहर्ता, पार्वतीनंदन, एकदत, गजवदन, मोदकप्रिय।

गधा : गर्दभ, खर, धूसर, गदहा, वैशाखनंदन।

गंगा	:	भागीरथी, देवपगा, सुरसरि, देवनदी, सुरसरिता।
घर	:	गृह, गेह, सदन, आलय, केतन, धाम, मंदिर, आगार।
गाय	:	धेनु, सुरभि, गौ, गऊ, गैया।
चन्द्रमा	:	राकेश, मयंक, सोम, शशि, इन्दु।
चोर	:	दस्यु, खनिक, तस्कर, सजनीचर, साहसिक, कुम्मिल।
चाँदी	:	रजत, रूपा, रौप्य, जातरूप, कलधौत।
जगत	:	संसार, जग, दुनिया, विश्व, भव, जगती।
झरना	:	निर्झर, स्रोत, उत्स, प्रपात, सोता।
तालाब	:	सर, सरोवर, तड़ाग, जलाशय, पुष्कर, ह्रय।
दु:ख	:	व्यथा, वेदना, कष्ट, शोक, खेद, यातना, संकट।
दानव	:	असुर, राक्षस, निशाचर, दैत्य, दनुज, रजनीचर।
पत्नी	:	भार्या, दारा, वाया, जाया, परिणीता, गृहिणी।
पक्षी	:	खग, विहंग, नभचर, द्विज, चिड़िया, पखेरु।
पत्ता	:	पत्र, दल, किसलय, पर्ण, पल्लव।
सुत	:	तनुज, बेटा, वत्स, तनय, नंदन, पूत।
बन्दर	:	कपि, शाखामृग, वानर, मर्कट, हरि।
बिजली	:	दामिनी, तड़ित, चपला, चंचला, विद्युत।
ब्राह्मण	:	द्विज, भूसर, विप्र, पण्डित, भूदेव।
राजा	:	नृप, महीष, भूपति, महिपाल, नरेन्द्र, नरेश, भूप।

समानार्थक शब्द

किसी भी भाषा में समान अर्थ रखनेवाले बहुत से शब्द होते हैं जिन्हें एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है। ऐसे शब्दों को समानार्थक या समानार्थी शब्द कहते हैं। इन्हें प्रतिशब्द या एकार्थक शब्द भी कहा जाता है। नीचे कुछ समानार्थक शब्द प्रयोग के साथ दिये गये हैं —

(i) अश्व : घोड़ा, हय, बाजि, तुरंग।

घोड़ा टाँगा खीचंता है। हय हिनहिना रहा है। रणक्षेत्र बाजियों से भर गया। पवन वेग से सिन्धु देश का तुरंग दौड़ता है।

(ii) किरण : रश्मि, अंशु, मयूख, मरीचि।

सूर्य की रश्मि प्रखर है। अंशु के कारण सूर्य को अंशुमाली कहते हैं। चन्द्रमा की मरीचियाँ शीतल होती हैं।

(iii) छल : छलना, वंचना, प्रतारणा।

छलना बहुत बड़ा दुर्गुण हैं। प्रतारणा की पीड़ा असहनीय होती है। द्वारिका प्रसाद अपनी वंचना के कारण वंचक कहलाता है।

(iv) तट : कूल, किनारा, पुलिन।

नदी का कूल स्वच्छ है। समुद्र का किनारा कटा फटा है। यमुना नदी के पुलिन पर कृष्ण रास रचाते हैं।

(v) नदी : सरि, सरिता, स्रोतस्विनी, तरंगिणी

देव सरि में स्नान करके पुण्य के भागी बने, सरिता का जल निर्मल है। स्रोतस्विनी का स्रोत कभी बन्द नहीं होता। मेरी नाव तरंगिणी से खेल रही है।

(vi) हाथी : गज, द्विरद, मतंग, कुंजर।

गजराज बलवान पशु हैं। दो बड़े दाँतों के कारण हाथी द्विरद कहलाता है। कुंज से कुंजर निकला आ रहा है। मतंग मतवाली चाल चल रहा है।

(vii) रात्रि : रात, रजनी, विभावरी, निशा।

रात बीत रही है। दु:ख की रजनी के बाद सुख का सबेरा आता है। जागरण में विभावरी चली गयी। निशा में निशाकर सोभा देता है।

(viii) प्रभात : प्रात:, प्रात:काल, सबेरा, सुबह।

मैं प्रतिदिन प्रात: टहलता हूँ। प्रात:काल सुहाना होता है। सवेरा होते ही पक्षी बोलने लगते हैं। सुबह उठना अच्छी आदत है।

(ix) मित्र : सखा, सुहृद, मीत, जीवन-साथी, दोस्त।

राम के सखा सुग्रीव थे। सच्चे सुहृद संसार में दुर्लभ हैं। मेरे मन का मीत पता नहीं कहाँ है? जीवन-साथी के बिना संसार नहीं चल सकता। उसके दोस्तों की संख्या बहुत बड़ी है।

(x) मुख : वदन, आनन, मुँह

प्रसन्न वदन व्यक्ति ही सुन्दर होते हैं। उसका आनन कमल के समान है। मुँह-हाथ धोकर आओ।

(xi) बन्दर : वानर, मर्कट, कपि, शाखामृग।

हनुमान वानर जाति के थे। कपि चंचल होते हैं। मर्कट के शरीर पर आभूषण नहीं फबता। बन्दर अदरक का स्वाद क्या जाने।

वाक्य गठन की पद्धति

ऐसा सार्थक शब्द-समूह जिससे पूरा आशय व्यक्त हो सके, वाक्य कहलाता है।

महाभाष्यकार पतंजलि के अनुसार 'पूर्ण अर्थ की प्रतीति करानेवाले शब्द-समूह को वाक्य कहा जाता है।' वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है।

व्याकरण में वाक्य-गठन का विशेष महत्व है। उसके सजाने और सँवारने के अपने नियम या विधान हैं। स्पष्टता वाक्य-गठन की सबसे बड़ी विशेषता है। वाक्य-संरचना जितनी संयत, संतुलित, श्रुति-सुखद स्पष्ट और मन को आनन्दित करने वाली होगी उतनी अच्छी समझी जायेगी।

रचना की दृष्टि से वाक्य के दो अंग हैं —

(1) उद्देश्य (2) विधेय

उद्देश्य :– वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे —

(i) दादी जी पढ़ रही हैं।

(ii) मोहन लिखता है।

इन वाक्यों में दादी जी और मोहन उद्देश्य हैं। वाक्य का कर्ता और कर्ता का विस्तार उद्देश्य होते हैं।

विधेय :– वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ बताया जाता है, उसे विधेय कहते हैं। जैसे कुत्ता भौंक रहा है इस वाक्य में भौंक रहा है विधेय है।

उद्देश्य	विधेय
निर्धन बालिका	भूख से व्याकुल है।
हम	कल नागपुर जायेंगे।
हलवाई	जलेबियाँ तल रहा है।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

(1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य

(1) सरल या साधारण वाक्य :– जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं। सरल वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया होती है। जैसे राम पढ़ता है। वह सोता है।

(2) संयुक्त वाक्य :– जिस वाक्य में दो या दो से अधिक खण्ड वाक्य स्वतंत्र रूप से योजक द्वारा मिले हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे हम गये अैर तुम आये।

(3) मिश्रित वाक्य :– जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो तथा अन्य खण्ड वाक्या आधीन अथवा आश्रित होकर आयें उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। जैसे मैने सुना है, कि वह यहाँ पहुँच गया। इसमें 'मैने सुना ह' प्रधान उपवाक्य है तथा 'यहाँ पहुँच गया है' आधीन या आश्रित वाक्य है।

उपवाक्य :– शब्दों का वह समूह जिससे पूर्ण अर्थ या विचार प्रकट होते हो तथा जिसका स्वतंत्र होता है उसे स्वतंत्र उद्देश्य तथा स्वतंत्र विधेय होता है, उसे उपवाक्य कहते है। इसके तीन भेद हैं।

(i) स्वतंत्र उपवाक्य :– जो उपवाक्य किसी पर आश्रित न होकर स्वतंत्र उपवाक्य कहते हैं। जैसे — दशरथ के चार पुत्र थे और चारों पुत्रों पर उनका समान स्नेह था। इसमें 'दशरथ के चार पुत्र थे' स्वतंत्र उपवाक्य है।

(ii) प्रधान उपवाक्य :– मिश्रित वाक्य के मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय से जो वाक्य बनता है, उसे प्रधान उपवाक्य कहते हैं। प्रधान उपवाक्य यद्यपि दूसरे वाक्यों से जुड़ा रहता है, तथापि अर्थ और भाव में स्वतंत्र होता है। जैसे— 'रमेश ने कहा कि मैं स्कूल जाऊँगा'— इसमें 'रमेश ने कहा' प्रधान उपवाक्य है।

(iii) आश्रित उपवाक्य :– जिस उपवाक्य का अर्थ प्रधान उपवाक्य पर आश्रित रहता है, उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं। जैसे नम्रतायुक्त आचरण करो, जिससे तुम पर सब प्रसन्न रहें। इसमें नम्रतायुक्त आचरण करो प्रधान उपवाक्य और जिससे तुम पर सब प्रसन्न रहें आश्रित उपवाक्य हैं।

मिश्रित उपवाक्य में प्रयुक्त होने वाले गौण उपवाक्य भी तीन प्रकार के होते हैं।

(1) संज्ञा उपवाक्य — छात्र जानते हैं कि परिश्रम कितना कठिन है।

(2) विशेषण उपवाक्य — यह वही आदमी है, जिसने कल चोरी की थी।

(3) क्रिया विशेषण उपवाक्य — जब तुम स्टेशन से चले तब मैं घर से चला।

किसी भी वाक्य के निर्माण करने में छ (छ:) विशेषताओं का होना अनिवार्य है, उन्हें वाक्य के गुण कहते हैं — (1) सार्थकता, (2) योग्यता, (3) अकांक्षा, (4) आसक्ति या निकटता, (5) पदक्रम, (6) अन्वय अर्थात मेल

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(क) संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्न

(i) महावरा से क्या समझते हो ?

(ii) समोच्चरित शब्द क्या हैं ?

(iii) विपरितार्थक शब्द किसे कहते हैं ?

(iv) पर्यायवाची शब्द कहने से क्या समझते हो ?

(v) समानार्थक शब्द क्या हैं ?

(vi) वाक्य क्या है ? रचना के आधार पर इसके कितने भेद हैं ?

(vii) उपवाक्य किसे कहते हैं ?

(viii) सरल वाक्य क्या है ?

(vx) संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं ?

(x) मिश्र वाक्य किसे कहते हैं ?

(xi) उपवाक्य के कितने भेद है ?

(xii) मिश्रित उपवाक्य में उपयुक्त होने वाले गौण उपवाक्य कितने प्रकार के होते हैं ?

(xiii) वाक्य निर्माण की छः अनिवार्य विशेषताएँ क्या हैं ?

(xiv) स्वतंन्त्र एवं प्रधान उपवाक्य से क्या समझते हो ?

(ख) रचनात्मक एवं बोधमूलक प्रश्न

(i) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए स्वरचित वाक्य में प्रयोग कीजिए —

अंग ढीला करना, अंगारों पर लेटना, अँचरा पसारना, अंगूठा दिखाना, खेत रहना, नानी मरना, खाल निकालना, बछिया का ताऊ, अंधे की लकड़ी , अक्ल का दुश्मन, नाक काटना, कमर कसना, पानी पानी होना, दाँत पीसना।

(ii) निम्नालिखित समोच्चरित शब्दों के अर्थ लिखिए —

दिन–दीन, पानी–पाणी, प्रकार–प्राकार, बदन–वदन, मैं–में, लक्ष्य–लक्ष, व्यजन–व्यंजन।

(iii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए —

आगम, रुचि, आस्तिक, अग्नि, अल्पसंख्यक, इष्ट, उपयुक्त, उग्र, अपना, कटु, अमर, अनुलोम, अमर, मित्र, अपमान, आधुनिक, आयात, आसक्त, एकता, क्रय, उत्थान, राजा,

(iv) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें —

अर्जुन, अश्व, अरण्य, आकाश, अमृत, अग्नि, पृथ्वी, गणेश, गधा, गंगा, घी, चोर, चन्द्रमा, तालाब, दुःख, सुत, बन्दर, बिजली, ब्राह्मण, सुत पक्षी।

(v) निम्नलिखित समानार्थक शब्दों को उनके प्रयोग के अनुसार लिखें —

अश्व : घोड़ा, हय, बाजि, तुरंग।

किरण : रश्मि, अंशु, मयुख।

छल : छलना, वंचना, प्रताणना।

तट : कूल, किनारा, पुलिन।

नदी : सरि, सरिता, तरंगिणी।

(vi) निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन करें —

(क) उसने अपने मित्र का पुस्तकालय खरीदा (मिश्र वाक्य में)

(ख) अच्छे लड़के परीश्रमी होते हैं। (मिश्र वाक्य में)

(ग) सूर्योदय होनें पर कुहासा जाता रहा (संयुक्त वाक्य में)

(घ) अस्वस्थ्य रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका। (संयुक्त वाक्य में)

(ङ) उसने कहा कि मैं निर्दोश हूँ। (मिश्र वाक्य में)

(च) फिर मैंने श्रेद्धओं की दुर्गति देखी है (संयुक्त वाक्य में)

(v) संयुक्त, सरल एवं मिश्र वाक्य के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

व्याकरण शिक्षा की प्रयोजनियता एवं लेखन पद्धति पत्र, अनुच्छेद एवं प्रतिवेदन

प्रस्तावना– भाषा शिक्षण का शुद्ध ज्ञान कराने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना अतिआवश्यक है। इसकी प्रयोजनीयता का वर्णन इससे पहले की इकाइयों में किया गया है। व्याकरण के महत्व को इस इकाई में दर्शाया गया है साथ ही लेखन अभिव्यक्ति कौशल के विकास पर भी बल दिया गया है। प्रतिवेदन, अनुच्छेद रचना एवं पत्र लेखन के तरीकों के बारे में भी बताया गया है। लिखित अभिव्यक्ति के लिए शब्द चयन, वाक्य गठन, विचार–क्रम की सुसम्बद्धता, शुद्ध वर्तनी लेखन, विराम चिन्हों का यथोचित प्रयोग तथा उपयुक्त भाषा शैली का शिक्षण आवश्यक है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रस्तुत इकाई का अध्ययन जरूरी है।

उद्देश्य– (क) शुद्ध भाषा का ज्ञान अर्जन कर सकेंगे।

(ख) लेखन के महत्व एवं उसकी प्रक्रिया का उल्लेख कर सकेंगे।

(ग) अनुलेख, श्रुतलेख तथा स्वतंत्र लेख के अन्तर को स्पष्ट कर सकेंगे।

(घ) लिखित रचना के प्रकार– निर्देशित तथा स्वतंत्र रचना के भेद बता सकेंगे।

(ङ) पत्र लेखन, अनुच्छेद रचना तथा प्रतिवेदन लेखन के क्रम निर्धारण कर सकेंगे।

(च) सृजनात्मक लेखन का महत्व बता सकेंगे।

व्याकरण शिक्षा की प्रयोजनीयता

व्याकरण भाषा का प्रतिमान होता है। जबकि भाषा अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन होती है। भाषा मानव का प्रकृतिक गुण नहीं हैं, वह तो समुदाय से अर्जित एक व्यवहार है। भाषा परस्पर विचारों के आदान प्रदान का सक्रिय माध्यम है। परन्तु भाषा लिखित या मौखिक रूप में वक्ता या लेखक की बात को श्रोता या पाठक तक तभी पहुँचा सकेगी, जब वह स्वयं व्यवस्थित होगी और भाषा को एक व्यवस्थित रूप देने का कार्य व्याकरण करता है। अत: प्रत्येक भाषा में व्याकरण का बड़ा महत्व है। व्याकरण ही किसी भाषा के मानक रूप का निर्धारण करता है। उसी मानक रूप को स्थापित और स्थिर करने के लिए ही मानक व्याकरण की आवश्यकता होती है। वस्तुत: किसी भाषा का व्याकरण ही उस भाषा के शुद्ध रूप का निर्धारक होता है।

प्रत्येक भाषा की अपनी अपनी अलग-अलग व्यवस्था होती है। एक ही प्रकार के भाव और विचार व्यक्त करने के लिए पृथक-पृथक भाषाओं में पृथक-पृथक ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए प्रत्येक भाषा में ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों की रचना से सम्बन्धित नियम अलग-अलग होते हैं। व्याकरण इन नियमों का संकलन तथा विश्लेषण कर भाषा को एक सुनिश्चित व्यवस्था प्रदान करता है।

व्याकरण का उद्देश्य शब्दों के विश्लेषण के साथ ही भाषा के सर्वमान्य रूप को प्रस्तुत करना, विकल्प वाले शब्दों का निर्देश करना, शुद्ध-अशुद्ध शब्दों का विस्तृत ज्ञान एवं प्रयोग करना सिखाता है। व्याकरण का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि भाषा के नियमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं माजक रूप की जानकारी दी जाय।

इस प्रकार बोलचाल और लिखित रूप में किसी भी भाषा के प्रचलित और प्रसिद्ध हो जाने पर, उसके शुद्ध रूप को जानने और समझने के लिए व्याकरण की आवश्यकता पड़ती है। इससे भाषा के आधारभूत नियमों का ज्ञान होता है। व्याकरण हमें भाषा में नित्य प्रति होने वाले मनमानें परिवर्तनों से सावधान करता है। वास्तव में व्याकरण भाषा के नियम नहीं बनाता। वह तो किसी भी भाषा समाज के अधिकांश लोगों या शिष्ट वर्ग द्वारा भाषा के जिस रूप का प्रयोग किया जाता है, उसी को आधार बनाकर उस भाषा के व्याकरण की रचना करता है। अत: व्याकरण मूलत: समाज द्वारा सिद्ध नियम का ही अनुसरण करता है। वह स्वयं नियम बनाकर समाज को उनका प्रयोग करने के लिए बाध्य नहीं करता। समय समय पर भाषा में जो परिवर्तन होते चले जाते हैं, उन परिवर्तनों के अनुसार व्याकरण में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन करते हैं।

व्याकरण द्वारा भाषा का विश्लेषण- व्याकरण में भाषा का विश्लेषण किया जाता है। यह विश्लेषण कई स्तरों पर होता है। ये निम्नलिखित हैं-

(1) **ध्वनि तथा उच्चारण के स्तर पर**- इसमें वर्गों की मौखिक ध्वनियों के उच्चारण के स्थानों के साथ-साथ उनके रूपों का भी विश्लेषण किया जाता है।

(2) **लिपि तथा वर्तनी के स्तर पर**- इसमें मौखिक वर्गों को लिखित रूप देने के लिए चिन्ह निर्धारित किये जाते हैं तथा वर्तनी अर्थात शब्द विशेष के लेखन के लिए वर्ण निर्धारित किये जाते हैं।

(3) **शब्द के स्तर पर**- इसमें शब्दों के भेद, व्युत्पत्ति और रचना आदि से सम्बद्ध नियमों का निर्धारण किया जाता है।

(4) **पद के स्तर पर**- इसके अन्तर्गत पद-भेद रूपान्तर और रचना आदि से सम्बद्ध नियमों का निर्धारण किया जाता है।

(5) **वाक्य रचना और अर्थ के स्तर पर**– इसके अन्तर्गत वाक्य का विश्लेषण रचना और अर्थ के आधार पर किया जाता है। वाक्य भेद, अंग–उपंग, उसके सम्बन्ध तथा परस्पर, संश्लेषण विराम चिन्ह आदि पर विचार किया जाता है।

भाषा का मानक रूप स्थापित करने में व्याकरण की भूमिका– व्याकरण मुख्य रूप से भाषा के नियमों का संकलन एवं विश्लेषण करता है। शैक्षिक व्याकरण इन नियमों को स्थिरता प्रदान करता है। व्याकरणिक स्थिरता के अभाव में भाषा के विस्तार और प्रचार के कारण उसके मौखिक व लिखिक रूपों में अनेकरूपता आ जाती है। उदाहरण के लिए हिन्दी में अ–अ्र, झ–झ, क्त–क्त, ण–ण आदि अनेक वर्ण ऐसे हैं, जिसके दो–दो रूप प्रचलित हैं। इसी प्रकार एक ही शब्द के कई–कई रूप प्रचलित हैं जैसे– चाहिए–चाहिये, लिए–लिये, अंत–अन्त, सम्बन्ध–संबंध आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्याकरण भाषा में एक रूपता लाकर उसके रूप को स्थिर करता है। व्याकरण के विभिन्न नियमों के स्थिर होने से भाषा में एक प्रकार की मानकता आती है जो भाषा को परिनिष्ठित बनाती है। अतः भाषा के मानक रूप को स्थिर करने में व्याकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रतिवेदन–लेखन

'प्रतिवेदन' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – किसी घटना, कार्य योजना आदि के सम्बन्ध में छानबीन पूछताछ आदि करने के पश्चात तैयार किया गया विवरण जो किसी अधिकारी, विभाग या सभा आदि के सामने प्रस्तुत करने के लिए हो। अथार्त् प्रतिवेदन वह सूचना या जानकारी है, जो किसी व्यक्ति द्वारा अपनी सूक्ष्म सूझ या ज्ञान के आधार पर एकत्रित की गई हो।

किसी सभा अथवा संस्था की बैठक, गोष्ठी, कार्यशाला अथवा विभाग आदि में हुए विचार विनिमय की रिर्पोट अथवा घटना के विवरण को लिखना प्रतिवेदन लेखन कहलाता है। कार्यवाही एक घंटे, दिन, सप्ताह, मास और वर्ष आदि की हो सकती है। बैठक में जो निर्णय लिए जाते हैं, उन्हें लिखा जाता है कि बैठक की अध्यक्षता किसने की और कौन–कौन सदस्य उपस्थित थे। यदि वह किसी स्थायी संस्था की बैठक की कार्रवाई हो तो पिछली बैठक की कर्रवाई की पुष्टि का उल्लेख किया जाता है। प्रतिवेदन लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(1) प्रतिवेदन संक्षेप में लिखा जाना चाहिए।
(2) कार्यवाही की मुख्य–मुख्य बातों को ही सम्मिलित करना चाहिए।
(3) प्रतिवेदन तथ्यात्मक और स्पष्ट होना चाहिए।
(4) प्रतिवेदन में दोहरे अर्थ रखने वाले वाक्यों या वाक्यंशों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
(5) प्रतिवेदन में दिया गया विवरण सत्य तथ्यों पर आधारित हो।
(6) प्रतिवेदन क्रमबद्ध व तर्कपूर्ण हो।
(7) भाषा सरल व स्पष्ट हो।

प्रतिवेदन लेखन के कुछ उदाहरण

प्रतिवेदन : सरस्वती इण्टर कालेज में आयोजित स्वतंत्रता समारोह

15 अगस्त, 2011 को सरस्वती इण्टर कालेज, डनलप में स्वतंत्रता दिवस समारोह सफलता पूर्वक मनाया गया। मुख्य अतिथि पद्म विभूषण श्री किशन जी महाराज ने इस अवसर पर वाराणसी के स्वतन्त्र्य वीरों को याद करते हुए स्वतन्त्र्य बनाये

रखने पर बल दिया। इसमें पूर्व प्रधानाचार्य जी ने माननीय मुख्य अतिथि तथा आये हुए अन्य नागरिकों का स्वागत किया। ध्वजारोहण माननीय मुख्य अतिथि जी ने किया। सभा का संचालन विद्यालय के छात्र दीपक सिंह ने किया। अन्त में विद्यालय प्रबंधक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रतिवेदन : साक्षरता अभियान संचालन समिति की बैठक

साक्षरता अभियान संचालन समिति, वाराणसी की कार्यकारिणी की बैठक विगत मंगलवार को प्रसिद्ध शिक्षाविद् डा॰ राजेन्द्र मिश्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में साक्षरता अभियान के अनेक पक्षों पर विचार करने के बाद नखास तथा भुलटेन मुहल्लों में स्थायी रात्रि विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया। विद्यालयों के लिए स्थान उपलब्ध कराने के लिए जिलाधिकारी महोदय से अनुरोध किया गया ताकि विद्यालय शीघ्र स्थापित किये जा सकें। फिलहाल सामुदायिक भवनों में विद्यालय खोलने की अनुमति प्रशासन से ले ली गयी है। स्थायी विद्यालयों की स्थापना के लिए प्रयास करने के लिए एक समिति का गठन किया गया है जो आगामी बैठक में अपनी प्रगति प्रस्तुत करेगी।

अनुच्छेद रचना

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गये सम्बद्ध और लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद लेखन कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी भी विषय से सम्बद्ध महत्वपूर्ण तथ्यों को जब छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा एक ही अनुच्छेद में प्रस्तुत किया जाये, तो यह अनुच्छेद लेखन कहलायेगा। यह वृहत् निबन्ध का छोटा रूप भी समझा जाता है, क्योंकि एक निबन्ध में कई-कई अनुच्छेद समाहित रहते हैं। इसमें भूमिका, मध्य और उपसंहार का वृहत् उल्लेख करना आवश्यक नहीं होता।

इसका मुख्य कार्य किसी एक विचार को इस तरह लिखना होता है जिसके सभी वाक्य एक दूसरे से बँधे हों। एक भी वाक्य अनावश्यक और बेकार नहीं होना चाहिए।

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ :

(1) यह एक भाव या विचार को एक बार, एक ही स्थान पर व्यक्त करता है।

(2) इसके वाक्य समूह में उद्देश्य की एकता रहती है।

(3) इसके सभी वाक्य एक दूसरे से गठित एवं सम्बद्ध होते है।

(4) यह एक स्वतंत्र और पूर्ण रचना है।

अनुच्छेद लेखन के निर्देश :

(1) प्रस्तुत विषय पर पहले अच्छी तरह सोंच लें।

(2) सोचे गये विषय को सजाकर लिखें।

(3) यथासंभव अपनी भाषा में छोटे-छोटे वाक्य लिखें।

(4) शुद्धता एवं सुलेख पर पूरा ध्यान दें।

(5) अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचें।

(6) अनुच्छेद की रचना ऐसी हो कि गागर में सागर समाया हुआ लगे।

उदाहरण के लिए कुछ अनुच्छेदों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

पटना

पटना हमारे देश के प्राचीन नगरों में से एक है। यह भारत की सबसे लम्बी नदी गंगा के किनारे स्थित है। यह नगर बिहार राज्य की राजधानी है। बिहार राज्य के सबसे बड़े संग्रहालय, गोलघर, चिड़ियाघर, खगोल-भवन, बिहार विधान सभा भवन आदि दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ की मुख्य सड़के और इनके किनारे बनी गगनचुम्बी इमारते लोगों को सुखद स्वप्न की अनुभूति कराती हैं। यह एक ऐतिहासिक नगर है जहाँ मौर्य कालीन अवशेषों का खजाना है जो विदेशियों तक को यहाँ खींच लाता है।

साहित्य

साहित्य का आधार जीवन है। इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है। उसकी अटारियाँ, मीनार और गुम्बद बनते हैं। लेकिन बुनियाद मिट्टी के नीचे दबी पड़ी है। जीवन परमात्मा की सृष्टि है, इसलिए सुबोध है, सुगम है और मर्यादाओं से परिमित है। जीवन परमात्मा को अपने कामों का जबाब देह है या नहीं हमें मालूम नहीं, लेकिन साहित्य तो मनुष्य के सामने जबाबदेह है। इसके लिए कानून है, जिनसे वह इधर-उधर नही जा सकता। मनुष्य जीवन पर्यन्त आनन्द की खोज में लगा रहता है। किसी को वह रत्न द्रव्य से मिलता है, किसी को भरे पूरे परिवार में, किसी को लम्बे चौड़े भवन में, किसी को एश्वर्य में। लेकिन साहित्य का आनन्द इस आनन्द से ऊँचा है। उसका आधार सुन्दर और सत्य है। वास्तव में सच्चा आनन्द सुन्दर और सत्य से मिलता है, उसी आनन्द को दर्शाना, वही आनन्द उत्पन्न करना साहित्य का उद्देश्य है।

पत्र - लेखन (Letter Writhing)

वास्तव में पत्र-लेखन एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से मानव जाति अपने विचारों का लिखित रुप में आदान-प्रदान करता है। कहीं दूर रहने वाले व्यक्ति आपस में नहीं मिल सकनें के कारण पत्र के माध्यम से अपने दिल की बात व्यक्त करते हैं। इस लिए पत्र लेखन को विचारों का प्रतिबिम्ब कहा जा सकता है। पत्र लेखन हेतु निम्न बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है —

(1) **लेखक और प्राप्तकर्ता :-** दूर रहने वाले व्यक्ति को कुछ सूचित करने के लिए पत्र लिखा जाता है। हम विभिन्न विषयों को लेकर प्राय: एक, दो पत्र लिखते रहते हैं। जो व्यक्ति पत्र लिखता है उसे लेखक (Writer) या प्रेषक (Sender) कहा जाता है। जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जाता है उसे प्राप्तकर्ता, प्रापक या प्रेषिती (addressee) कहते हैं।

(2) **पत्र की भाषा :-** पत्र की भाषा सरल तथा सुबोध होनी चाहिए।

(3) **पत्र के प्रकार :-** पत्र तीन प्रकार के होते हैं।

(i) व्यक्तिगत पत्र (ii) व्यवसायिक (iii) अधिकारिक पत्र

हम माँ-बाप, भाई-बहन बेटे -बेटी और इष्टमित्रों को जो पत्र लिखते हैं, वे व्यक्तिगत पत्र हैं। व्यवसायिक पत्र वे हैं जो व्यवसाय से संबंधित होते हैं। जो सब सरकारी अर्द्धसरकारी तथा सरकार के विभिन्न महकमों द्वारा लिखी जाती है वे अधिकारिक पत्र हैं।

पत्र के अंग - पत्र के पाँच अंग हैं - (i) सिरनामा या शीर्षक (ii) सम्बोधन (iii) अभिवादन (iv) मुख्यभाग (v) समापन

(i) शीर्षक :- पत्र लिखने के लिए व्यापारिक प्रतिष्ठानों के पास खास कागज होते हैं, जिन पर उनके नाम पते छपे होते हैं। ये कागज Letterhead कहलाते हैं। सरकारी कार्यालयों के भी Letterhead होते हैं। व्यक्तिगत पत्र के लिए भी कुछ लोग Letterhead का प्रयोग करते हैं।

(ii) संबोधन :- पत्र के इस भाग में पत्र पानेवाले के नाम और पद आदि का उल्लेख किया जाता है। हिन्दी पत्रों में व्यक्ति के नाम से पहले श्री, श्रीयुक्त ,श्रीयुत, श्रीमती, सुश्री, कुमारी आदि का प्रयोग किया जाता है।

(iii) अभिवादन:- हर भाषा में पत्र पानेवाले की प्रतिष्ठा के अनुकूल उसके अभिवादन की रीति है। हिन्दी के व्यक्तिगत पत्र में बड़ों के लिए परमपूज्य, परमपूज्या आदरणीय, आदरणीया, माननीय, माननीया आदि का, समवयस्कों या मित्रों के लिए प्रिय, प्रियवर, प्रियबंधु, बंधुवर आदि का तथा छोटों के लिए आयुष्मान, आयुष्मती, चिरंजीव परमप्रिय आदि का प्रयोग होता है।

(iv) पत्र का मुख्य भाग :- इस भाग में पत्र-लेखक अपनी बातें लिखता है। विषय, के अनुकूल भाषा हल्की या गंभीर हो सकती है। लेकिन दो बातों का ध्यान रखना चाहिए

एक : पत्र की भाषा सरल एवं प्रभावोत्पादक हो।

दो : व्यक्तिगत पत्र कुछ लंबा हो सकता है लेकिन व्यवसायिक पत्र अकारण लंबा नहीं होना चाहिए।

(v) समापन :- हम हिन्दी के व्यक्तिगत पत्रों में यहाँ बड़ों को आपका आज्ञाकारी, स्नेहपात्र, कृपाभिलाषी, आदि समवयस्कों को तुम्हारा, तुम्हारा ही तथा छोटो को शुभचिन्तक, शुभाभिलाषी लिखते है। हिन्दी के व्यवसायिक पत्रों में आम तौर पर यहाँ भवदीय, भवदीया, निवेदक, निवेदिका आदि लिखा जाता है।

उदाहरण :- वाणिज्यिक पत्र

वाणिज्यिक पत्र वे होते हैं जो व्यवसाय या व्यापार से संबंधित व्यक्तियों को दिये जाते हैं।

(i) स्थापित बैंक द्वारा अपने बैंक शाखा बंद करने की सूचना देते हुए पत्र।

स्टेट बैंक आफ इण्डिया
कोलकता

सेवा में,
महोदय / महोदया

हमें खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि हम किसी कारणवश आने वाले 5 मार्च को कोलकाता में स्थित अपने सभी (ब्रांचो) शाखाओं को बन्द करने के लिए मजबूर हैं।

इन शाखाओं के सभी खाता धाराकों को श्रीरामपुर में स्थित शाखा संख्या-12(T-23/B) को स्थान्तरित कर दिया गया है। अगर खाताधारी को कोई असुविधा होगी तो उसके लिए हम क्षमा के प्रार्थी हैं।

भवदीय
शाखा प्रबन्धक

वैयाक्तिक -पत्र
सगाई की बधाई

दिनांक.....

प्रिय अनुराग जी,

माधुरी के साथ आपकी सगाई की सूचना पाकर मेरा मन प्रसन्न्ता से नाच उठा। आप बड़े भाग्यशाली हैं। मैं माधुरी से भली प्रकार परिचित हूँ वह एक नेक लड़की है। सुन्दरता की तो मानो वह साक्षात प्रतिमा ही है। मैं आपको इस सगाई के लिए बधाई देता हूँ। कामना करता हूँ कि आप दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखमय हो।

तुम्हारा ही
राज

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

क) संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्न

(i) व्याकरण की प्रयोजनीयता का संक्षिप्त वर्णन करे।

(ii) भाषा का मानक रुप स्थापित करने में व्याकरण की क्या भूमिका है ?

(iii) प्रतिवेदन से भूमिका है ?

(iv) प्रतिवेदन लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(v) अनुच्छेद रचना के नियम लिखिए एवं इसकी विशेषताओं का उल्लेख करें।

(vi) पत्र लिखते समय किन बातों का ध्यान रखा जाता है ?

(vii) पत्र के कितने अंग हैं ? प्रत्येक का संक्षिप्त वर्णन करें।

(viii) पत्र कितने प्रकार के होते हैं।

(ix) कोलकाता शहर पर एक अनुच्छेद रचना कीजिए।

(x) विद्यालय में 26 जनवरी मनाया गया। इस विषय पर एक पतिवेदन लिखे।

(xi) बंगाल बंद अर्थात सार्वजनिक छुट्टी पर समाचार पत्र के लिए प्रतिवेदन लिखे।

(xii) ओलंपिक (2012) लंदन में सम्पन्न होगा लंन्दन में खुशी की लहर पर समाचार पत्र में छपने के लिए प्रतिवेदन लिखें।

(xiii) 'साहित्य समाज का दर्पण है" इस विषय पर एक अनुच्छेद रचना करें।

(xiv) शुल्क माफ कराने हेतु प्रधानाचार्य को पत्र लिखें।

(xv) शिक्षा के गिरते हुए स्तर के सम्बन्ध में राज्य के शिक्षा मन्त्री को पत्र लिखें।

(xvi) रोज समाचार पत्र पढ़ने की आवश्यकता और महत्व को समझाते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

(xvii) अपने नगर पालिका के अध्यक्ष को सफाई हेतु पत्र लिखिए।

मातृभाषा शिक्षण की पद्धतियाँ एवं उच्चारण, वर्तनी दोष और निवारण।

प्रस्तावना — इस इकाई में मातृभाषा शिक्षण को कुछ पद्धतियों जैसे — कथोयकथन, आलोचना, अनुबंध एवं प्रकल्प पद्धति के बारे में विस्तृत आलोचना किया गया है साथ ही उच्चारण एवं वर्तनी समस्या के साथ उनके दोषों को दूर करने के उपाय की चर्चा की गई है। यह भाषा शिक्षण के लिए अति आवश्यक है। बोलने अथवा मौखिक अभिव्यक्ति की प्रभाविष्गुता भाषा के शुद्ध उच्चारण पर निर्भर है। सस्वर वाचन एवं कविता पाठ में तो शुद्ध उच्चारण का और भी महत्व है। अत: भाषा शिक्षण में प्रारम्भ से ही शिक्षार्थियों के शुद्ध उच्चारण पर बल देना चाहिए। शुद्ध उच्चारण का तात्पर्य मानक उच्चारण से है।

उद्देश्य —

(i) भाषा शिक्षण के विभिन्न पद्धतियों से परिचित हो सकेंगे।

(ii) उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी वर्णों का वर्गीकरण कर सकेंगे।

(iii) मौखिक अभिव्यक्ति में शुद्ध उच्चारण का प्रयोग कर सकेंगे।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों का सुधार कर सकेंगे।

(v) वर्तनी के अनुसार उच्चारण शिक्षण के लिए उचित प्रक्रिया अपना सकेंगे।

(vi) भाषा शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों को आसानी से यथास्थान प्रयोग कर सकेंगे।

मातृ भाषा शिक्षण की कुछ पद्धतियाँ– आज का युग बाल केन्द्रित शिक्षा का युग है। हमारी पुरानी मान्यतायें, धारणायें बदल चुकी हैं, उनमें एक महान परिवर्तन आ चुका है। भाषा शिक्षण प्रणाली भी उससे वंचित नहीं है विभिन्न मनोवैज्ञानिक खोजों के फलस्वरुप भाषा शिक्षण विधि में भी भारी उथल–पुथल हो चुकी है। आज की शिक्षा प्रणाली में मनोवैज्ञानिक दृष्टि मूल प्रेरक तत्व ही बन चुकी है। हम प्रत्येक विधि को मनोवैज्ञानिक कसौटी पर कस कर; परख कर ही आज अपनाने को तैयार हैं अन्यथा नहीं। इसी दृष्टि से प्रेरित हो कर भाषा शिक्षण प्रणाली में कई नवीन प्रयोग है जो शिक्षण पद्धतियाँ कहलाती हैं। भाषा शिक्षण में इन सभी पद्धतियों ने न्यूनाधिक योगदान किया है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं

कथोपकथन पद्धति– भाषा शिक्षण की दृष्टि से कथोपकथन पद्धति एक लाभप्रद पद्धति है। इस पद्धति में शिक्षक आलोचना करवाते हैं इसे बात करने की भंगिमा में इस तरह से प्रश्न करते हैं कि उत्तर देते समय दो बालक बात करने के अंदाज में उत्तर देते हैं। किसी विषय पर दो छात्र आपस में बात करेंगे। शिक्षक उनके उच्चारण एवं वाक्यों पर ध्यान देंगं कि वह कहीं अशुद्ध उच्चारण या वाक्य तो नहीं बोल रहा है। इस प्रकार पारस्परिक विचार विनमय के माध्यम से छात्र आसानी से भाषा सीख सकता है।

आलोचना पद्धति :– किसी भाषा सम्बधी विषय को शिक्षार्थियों के बीच दल बनाकर जब शिक्षक या शिक्षिका आलोचना पद्धति कहते हैं। इस पद्धति में बालकों को कई दलों में बाँट दिया जाता है। प्रत्येक दल का एक नेता होता है। आलोचना की मुख्य भूमिका नेता ग्रहण करता है। शिक्षक उसकी मदद करेंगे। आलोचना पद्धति में पश्नोत्तर पद्धति का सहारा लिया जा सकता है।

वाक्य गठन, शब्द गठन, पद परिचय, भाषा–बोली इत्यादि आलोचना के विषय हो सकते हैं।

अनुबन्ध पद्धति :– विद्यीर्थी या बालक का मन विभिन्न अनुभवों और ज्ञानधारा का त्रिवेणी संगम है। विभिन्न विषय कहीं न कहीं एक दूसरे से जुड़े हैं। विभिन्न समजातीय विषयों के सूत्रों को एक साथ जोड़कर विद्यार्थी के ज्ञानभण्डार को पुष्ट करना ही अनुबन्ध प्रणाली है। एक विषय दूसरे विषय को सीखने में सहायता करता है। जिस प्रकार एक वृक्ष की विभिन्न शाखाएँ होती है जो एक दूसरे की पूरक होती हैं। उसी प्रकार विद्या रूपी वृक्ष की भी विभिन्न शाखाएँ हैं जो एक दूसरे से जुड़ी हैं और एक दूसरे की पूरक हैं। हिन्दी पढ़ाते समय गद्य, पद्य के साथ व्याकरण व रचना पर भी आलोचना करते हैं। इतिहास पढ़ाते समय युग, काल, साहित्य के बारे में बताते है। इसी एक विषय में दूसरे विषय के समन्वय को अनुबन्ध पद्धति कहते हैं। किसलय साहित्य चतुर्थ श्रेणी में 'मेरा पड़ोसी देश' पढ़ाते समय भूगोल और इतिहास के बारे में जानकारी दिया जा सकता है। 'प्राण रक्षक' पाठ पढ़ाते समय विज्ञान की बातों को सजीव, निर्जीव के बारे में बता सकते हैं। इस प्रकार अनुबन्ध प्रणाली द्वारा बालकों का ज्ञान भण्डार बढ़ाया जा सकता है।

प्रकल्प पद्धति :– इस विधि में छात्र अध्यापक की सहायता से कोई समस्या चुन लेते हैं और इस समस्या का समाधान करना उनका मुख्य उद्देश्य होता है, समस्या के समाधान हेतु प्रासंगिक रूप से समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं और इसी रूप में भाषा ज्ञान भी प्राप्त कर लेते हैं। उदाहरणार्थ विद्यार्थियों ने प्रोजेक्ट चुना "पाठशाला का डाकघर चलाना।" इस प्रोजेक्ट के समाधान हेतु बालक को लिखना, पढ़ना, मौलिक कार्य करना सिखाया जाता है जैसे डाक व्यवस्था के बारे में पुस्तकों पत्रपरित्रकाओं आदि में जितनी पाठ्य सामग्री मिल सके पढ़ाना और पढ़कर निर्माण पुस्तक में लिखना, मनीआर्डर फार्म भरना आदि। डाकिए एवं उसके कार्यों का वर्णन। पोस्ट मास्टर एवं डाकिए का वार्तालाप अपने कल्पना के आधार पर

लिखना। इस तरह बालक प्रोजेक्ट के समाधान हेतु मौलिक कार्य भी कर सकता है। यह विधि इसलिए भी प्रशंसनीय है क्योंकि इसके द्वारा जीवनोपयोगी शिक्षा दी जाती है और मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर भी आधारित हैं जैसे करके सीखना (Learning by doing) रूचि के अनुसार शिक्षण, खेल विधि का प्रयोग। इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान छात्र के मन पर स्थायी प्रभाव डालता है।

उच्चारण एवं वर्तनी समस्या एवं उनके निवारण की पद्धतियाँ

उच्चारण की शुद्धता :- भाषा मनुष्य की अर्जित सम्पत्ति है। अन्य अर्जित सम्पत्तियों की तरह भाषा पर भी प्रत्येक व्यक्ति का सर्वथा समान अधिकार नहीं होता। उच्चारण भाषा का ही एक पक्ष है और लोगों में उच्चारण भेद पाया जाता है। उच्चारण भेदों से हम जान जाते हैं कि हिन्दी बोलने वाला हिन्दी भाषी है या अहिन्दी भाषी। बहुत से लोग हिन्दी का उच्चारण शुद्ध रूप से नहीं कर पाते।

अशुद्ध उच्चारण प्राय: सभी हिन्दी विद्वानों अखरता है। उच्चारण की समस्या भाषा-शिक्षण की अत्यन्त चटिल समस्या है। काशी में वर्णमाला सीखने वाला बालक क, ख, ग, घ, का शुद्ध उच्चारण करता है, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी और राजस्थान का बालक कै, खै, गै, घै बोलता है तो पंजाब का बालक का, खा, गा, धा और बंगाल का बालक को, खो, गो, घो बोलता है जिससे उच्चारण में बड़ी अव्यवस्था आ गई है अत: इन सब बातों को जानना अवश्यक है-

अशुद्ध उच्चारण के कारण

(1) शिक्षक द्वारा अशुद्ध उच्चारण करना
↓
(2) मनोवैज्ञानिक कारण
↓
(3) प्रयत्न लाघव
↓
(4) असावधानी
↓
(5) दुरभ्यास (बाजाकर बोलना)

(6) सामाजिक प्रभाव
↓
(7) उच्चारण शिक्षा का अभाव
↓
(8) अज्ञान
↓
(9) ध्वनि यंत्र में विकार
↓
(10) बोली की प्रभाव

(1) हिन्दी का शिक्षक यदि स्वयं अशुद्ध उच्चारण करता है तो विद्यार्थी अनुकरण प्रवृत्ति के कारण शिक्षक के उच्चारण को आदर्श मानकर अशुद्ध उच्चारण करेंगें। हिन्दी शिक्षक का उच्चारण शुद्ध होना परमावश्यक है।

(2) अत्यधिक भावोद्वेग शंका, भय, झिझक, अतिप्रसन्नता या हीनता की भावना भी अशुद्ध उच्चारण का कारण हो सकती है।

(3) प्राय: बालकों को आदत होती है कि पूरा शब्द न कहकर उसका छोटा रूप कहते हैं। जैसे— 'माता जी' की जगह 'मात ई' कहना।

(4) लापरवाही, भी इसका प्रमुख कारण है जैसे — 'आवश्यकता' न कहकर अवश्यकता कह जाना।

(5) कभी-कभी बनाकर बोलने की आदत के चलते भी अशुद्ध उच्चारण हो जाता है, जैसे — फल को फल, खाना को खाना कहना।

(6) समाज के प्रभाव में आकर भी कुछ लोग अशुद्ध उच्चारण करते हैं जैसे स्नेह को सनेह, स्टेशन को सटेशन कहना।

(7) शिक्षकों की उदासीनता भी इसका एक कारण हैं। शिक्षक को अशुद्ध उच्चारण करने पर बालक को टोकना चाहिए।

(8) कभी कभी अज्ञानवश भी अशुद्ध उच्चारण हो जाता है जैसे — 'औरत' का उच्चारण 'औरत' की तरह करना। मात्रा ज्ञान के अभाव में ऐसी भूलें होती है।

(9) ध्वनि तंत्र में विकार के कारण बहुत से छात्र अशुद्ध उच्चारण करते हैं। नाक से बोलना हकलाना आदि इसके कारण हैं।

(10) बालक के ऊपर क्षेत्र का प्रभाव भी पड़ता है। जिसे इलाके में खड़ी बोली, बोली जाती है वहाँ का बालक 'क' का उच्चारण 'के' करने लगे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का निराकरण —

(1) उच्चारण के छः तत्वों से सम्बन्धित अध्यापन कराना जैसे अक्षर व्यक्ति, उचित ध्वनि निर्गम स्थान, बलघात व जैसे बलाघात व स्वराघात, विश्राम, सुलहर आदि।

(2) कठिन शब्दोच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए।

(3) उन ध्वनियों का अन्तर समझाना जो कठिन है जैसे न, ण, श, ष व और ब, ड और ड़ ङ और ढ, ढ़ छ और क्ष आदि।

(4) चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार का उच्चारणभ्यास करना चाहिए। इस तरह

चन्दबिन्दु	अनुस्वार
चाँदनी	अकांक्षा
आँसू	इन्द्रधनुष
आँधी	इंच

(5) इकार, ईकार, उकार और ऊकार शब्दों की तालिका बनाकर उच्चारण करायें, तथा अन्तर बतायें।

(6) उच्चारण की दृष्टि से कठिन अक्षर की बारह खड़ी का अभ्यास करायें

अक्षर **बारहखड़ी**

क — क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः।

ख — ख, खा, खि, खी, खु, खू, खे, खै, खो, खौ, खं, खः।

ग — ग, गा, गि, गी, गु, गू, गे, गै, गो, गौ, गं, गः।

वर्तनीगत अशुद्धता के कारण

(1) अशुद्ध उच्चारण की अशुद्ध वर्तनी ही होगी। प्राय: वर्तनी की अशुद्धियाँ अशुद्ध उच्चारण के कारण ही होती है।

(2) संन्धि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग, लिंग, वचन के ज्ञानाभाव के कारण भी वर्तनीगत भूलें हो जाती है। जैसे-उज्जवल उज्जवल लिख जाना।

(3) लिपि का अधूरा ज्ञान भी इसका प्रमुख कारण है, जैसे श, स, ष का अन्तर लिपि की दृष्टि से न समझ पाना।

(4) असावधानी एवं जल्दीबाजी भी इसका एक कारण है।

(5) उर्दू, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं ने भी हिन्दी के उच्चारण की शुद्धता को प्रभावित किया है। अंग्रेजी के प्रभाव से प्रभावित होकर हमलोग कृष्ण को कृष्णा, राम को रामा कहने लगे हैं।

(6) आजकल विद्यार्थियों की संख्या अधिक होनें की वजह से प्रत्येक वर्तनीभूलों का सूधार लिखित या मौखिक रूप से नहीं हो पाता।

वर्तनी अशुद्धियों के प्रकार—

वर्तनीगत अशुद्धियाँ निम्नलिखित प्रकार की होती है-(1) मात्रा सम्बन्धी, (2) संयुक्त अक्षर सम्बन्धी (3) अनुनासिक सम्बन्धी, (4) अनुस्वर सम्बन्धी एवं चन्द्रबिन्दु सम्बन्धी भ्रम (5) लिंग, वचन, सन्धि, प्रत्यय, उपसर्ग सम्बन्धी प्रान्त: एव बोली के प्रभाव के कारण भी वर्तनीगत भूलें होती है।

वर्तनीगत भूलों के निराकरण के उपाय-इसके दो उपाय हैं- (1) निरोधात्मक (2) सुधारात्मक

इनके अर्न्तगत समस्त साधन आते हैं जिनके द्वारा छात्रों को वर्तनीगत शुद्धता का अभ्यास कराया जाता है।

(1) गद्यांश पाठ पढ़ाते समय वर्तनी की शुद्धता पर बल देना।

(2) व्याकरणगत नियमित एवं प्रासंगिक शिक्षण के अवसर पर वर्तनीगत परिवर्तन को स्पष्ट करना।

(3) लिखित कार्य के संशोधन के समय त्रुटियों को सुधार करना। लेखन कार्य अधिक से अधिक दें।

(4) वर्तनीगत भूलों के निराकरणार्थ अभ्यास मालाओं का प्रयोग करना।

(5) प्रत्येक छात्र से वर्तनी पुस्तिकाएँ बनाने के लिए कहा जाय तथा उसमें शुद्ध एवं अशुद्ध रूपों को लेखने के लिए कहा जाय।

(6) दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग हितकर होगा।

(7) वर्तनी परीक्षा ली जाय। इस परीक्षा में कई तरह के प्रश्न बनाये जा सकते हैं। उसी के आधार पर प्रगति पत्र तैयार किया जा सकता है।

(8) उच्चारण की शुद्धता एवं लिपि की ओर ध्यान देना।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

क) संक्षिप्त उत्तरीय प्रश्न-

(1) कथोपकथन पद्धति क्या है ?

(2) आलोचना पद्धति से क्या समझते हो ?

(3) अनुबन्ध पद्धति का संक्षिप्त परिचय दें।

(4) प्रकल्प पद्धति क्या है ?

ख) रचनात्मक बोधमूलक एवं ज्ञानमूलक प्रश्न-

(1) अशुद्ध उच्चारण को कारणों का उल्लेख करते हुए उसके समाधान के उपाय बतायें।

(2) वर्तनीगत अशुद्धता के क्या कारण हैं ?

(3) वर्तनीगत अशुद्धियाँ कितने प्रकार की होती हैं ? उनके निराकरण के क्या उपाय है ?

(4) भाषा शिक्षण में उच्चारण एवं वर्तनीगत शुद्धियों के महत्व को बताएँ।

सामर्थ्य पर आधारित इकाई विश्लेषण एवं पाठ परिकल्पना एवं मूल्यांकन

प्रस्तावना– इस इकाई में हम सामर्थ्य पर आधारित इकाई विश्लेषण एवं पाठ परिकल्पना के बारे में अध्ययन करेंगे। क्योकि पाठ्य सूची की विभिन्न इकाईयों को पढ़ाते समय किसी एक छात्र के सीखने के सामर्थ्य को समझना अति आवश्यक है। उसी अनुसार पाठ परिकल्पना करने की आवश्यकता है। साथ ही इस इकाई द्वारा भाषा शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया के महत्व, मूल्यांकन युक्तियों और प्रश्ननिर्माण कला का परिचय प्राप्त करेंगे। मूल्यांकन वस्तुतः शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इसी से हमें ज्ञात होता है कि हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए जिन उद्देश्यों को हमने निर्धारित किया था उसकी पूर्ति में कितनी सफलता मिली। इसके अन्तर्गत सतत एवं सामग्रिक मूल्यांकन पर चर्चा करते हुए प्रश्न प्रस्तुतिकरण के नियमों का उल्लेख किया गया है।

उद्देश्य– (क) सामर्थ्य पर आधारित इकाई विश्लेषण कर सकेंगे साथ ही पाठ परिकल्पना कर सकेंगे।

(ख) मूल्यांकन का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व बता सकेंगे।

(ग) सतत एवं सामग्रिक मूल्यांकन कर सकेंगे।

(घ) इकाई पाठ विश्लेषण द्वारा प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे।

(ङ) संतुलित, विश्वसनीय एवं वैध प्रश्नपत्रों का निर्माण एवं मूल्यांकन कर सकेंगे।

(च) मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों के प्राप्तांको का विश्लेषण कर सकेंगे।

सामर्थ्य पर आधारित इकाई विश्लेषण के माध्यम से पाठ परिकल्पना

पाठ्य-सूची की विभिन्न इकाईयों के पाठदान के समय किसी एक में छात्रों को किस प्रकार का सिखने का सामर्थ्य अर्जित होगा उसे पहले से ही ठीक कर लेना होगा। किसी एक इकाई के अनुशीलन के समय समस्त क्षेत्रों में छात्र के सामर्थ्य की किन किन क्रमिक धाराओं का अनुसरण करके उसे वास्तविक रूप दिया जा सकेगा व उसके सम्बन्ध में एक स्पष्ट धारणा निश्चित करने के बाद दैनिक कक्षा का अनुशीलन कार्य क्रमबद्ध, सार्थक व वास्तविक रूप में कार्यकारी किया जा सकेगा उसे पहले से क्रमबद्ध रूप में निश्चित कर लेना होगा। इकाई को सामर्थ्य के आधार पर विश्लेषण करके पठन-पाठन करने की पद्धति को सामर्थ्य आधारित इकाई विश्लेषण की पठन-पाठन पद्धति कहते हैं।

प्रत्येक पाठ इकाई एवं उसकी उपइकाईयों को लेकर सामर्थ्य आधारित विश्लेषण हेतु शिक्षक या शिक्षिका जिन जिन विषय पर ध्यान रखेगे वे निम्नलिखित हैं।

(1) पहले वार्षिक सारिणी की इकाई, उपइकाई के विभाजन पर विचार करना होगा। वार्षिक सारिणी तैयार करते समय पाठ्य सूची, पाठ्य पुस्तक करणीय कर्मकाण्ड इत्यादि को लेकर आपस में आलोचना करने की जरूरत पड़ती है एवं किसी उपइकाई के पाठन हेतु कितना घण्टा समय देना होगा उसे भी ठीक करना होगा। एक एक विषय के ऊपर ध्यान रखना आवश्यक है :- सामर्थ्य आधारित विश्लेषण करने के समय यदि देखा जाय कि पहले वार्षिक सारिणी विभाजन के किस क्षेत्र में कोई त्रुटि रह गयी है तो इस स्तर पर उसका संशोधन कर लिया जा सकता है।

(2) इस बार निश्चित करना होगा कि किसी विशेष इकाई के पाठन के पूर्व प्रस्तुति के हिसाब से छात्र में क्या-क्या पूर्व ज्ञान होना चाहिए।

(3) एक-एक उपइकाई के पाठ के बीच से क्रमानुसार छात्र का ज्ञान बोध प्रयोग व दक्षता मूलक सामर्थ्य में क्या क्या विकास सम्भव होगा उस पर विचार कर लेना होगा।

(4) छात्र के सामर्थ्य का विकास उसके आचरण व कर्मप्रयास में विशेष परिवर्तन के हिसाब से प्रकाशित होता है। इसी से प्रत्येक विकास को विशेष रूप में पहचान करने हेतु उसे छात्र के आचार व्यवहार व कर्म प्रयास की विशेष अभिव्यक्ति के रूप में वर्णन करना बहुत गुरूत्वपूर्ण होता है।

(5) शिक्षा प्रयास का अन्यतम गुरूत्वपूर्ण उपादान है मूल्यांकन। साधारण रूप में मूल्यांकन है- सामर्थ्य पर आधारित उद्देश्य को सामने रखकर अनुशीलन का जो कार्य परिचालित हुआ है। उसके अन्त में छात्र के आचार और आचरण में वह कहाँ तक परिवर्तन हुआ है उसकी माप करना। फलतः पाठ इकाई की सामर्थ्य पर आधारित विश्लेषण जैसे जैसे सार्थक अनुशीलन निर्देशक के रूप में काम करता है वैसे वैसे वह पुनः सफल मूल्यांकन के आधार के रूप में कार्य करता है।

किसी एक विषय की शिक्षा का उद्देश्य है उस विषय में छात्र के ज्ञान बोध, प्रयोग व दक्षता में विकास घटित करना वह एक मात्र सुपरिकल्पित रूप में कक्षा अनुशीलन अर्थात परीक्षण शुरू करने से पहले शिक्षक को यह जानना आवश्यक है कि प्राकृतिक रूप में विकास घटित होने से सामथ्यों की अभिव्यक्ति (प्रकाशन) के हिसाब से छात्र के आचार व्यवहार एवं कार्य प्राणाली में क्या क्या परिवर्तन हुआ है। इसके लिए विभिन्न सामथ्यों को आचार व्यवहार में परिवर्तन के विशेषीकृत लक्षण के रूप प्रकाशित करने का प्रयोजन है।

मूल्यांकन– छात्र को कुछ सिखाने के बाद छात्र कहाँ तक शिक्षा को ग्रहण कर सका है उसे देखना भी शिक्षा और शिक्षक का प्रधान कार्य है। परीक्षा (Examination) और मूल्यांकन (Evaluation) शिक्षा परिचालन के इन गुरुत्वपूर्ण कार्यों की पूर्ति करता है।

शिक्षणजगत में मूल्यांकन शब्द अपेक्षाकृत नया है। परीक्षा कहने से संकीर्ण अर्थ में तथा मूल्यांकन कहने से व्यापक अर्थ व्यवहृत होता है। आधुनिक शिक्षा में पारम्परिक परीक्षा के बदले मूल्यांकन के प्रति अधिक गुरुत्व दिया गया है। मूल्यांकन की परिभाषा के रूप में अध्यापक रिंग स्टोन (Prof. Wring Stone) ने कहा है "Evaluation is relatively new concept of measurement that is implied in conventional tests and Examinations" कि परीक्षा द्वारा शासित शिक्षा छात्रों की सजीवता को विनष्ट करती है। (an external machinery that kills vitalits) मूल्यांकन एक गतिशील प्रक्रिया है। इसके तीन प्रधान तथ्य हैं।

(क) शिक्षण कर्मसूची स्थिर करना।

(ख) शिक्षण के फलस्वरूप शिशु छात्र की अर्जित अभिज्ञता द्वारा मानसिक एवं व्यावहारिक परिवर्तन।

(ग) शिशु का व्यक्तिगत सामाजिक विकास।

" The shift from examination to evaluation indicates a shift from a narrow conception of subject matter out comes to a broade conception of growth and development of individuals"

छात्र की शिक्षणीय विषय विषय की असम्पूर्णता को खोजकर बाहर करके संशोधन पाठ के माध्यम से उसे पूर्ण किया जा सकता है। शिशु का व्यक्तिगत विकास उसकी वैज्ञानिक भाव भंगिमा को विकसित करना, उसका सामाजिक करण, विषय विश्लेषण क्षमता को विकसित करना इन सभी दिशाओं की तरफ हर शिक्षक को ध्यान देना आवश्यक है। सतत मूल्यांकन व्यवस्था परीक्षा की कमी को दूर करने हेतु ही चालू की गयी है। यह मूल्यांकन दो प्रकार से हो सकता है।

तात्क्षणिक मूल्यांकन– छोटे अध्याय के पाठदान के ठीक बाद ही छात्रों का १० अंकों का १०-१५ मिनट का मूल्यांकन प्रश्न अतिसंक्षिप्त एवं संक्षिप्त जिनका मान १ या २ अंक से अधिक नही होना चाहिए। यह लिखित या मौखिक भी हो सकता है। इसके अंक प्रगति पत्र में नही लिखे जायेंगे।

सामयिक मूल्यांकन– प्राथमिक शिक्षा पश्चिम बंग के मतानुसार चार लिखित और तीन मौखिक परीक्षा की बात कही गयी है। प्रत्येक पर्व की लिखित परीक्षा ८० या ४० अंक की तथा मौखिक परीक्षायें २० या १० अंक की होगी। छात्रों के प्राप्तांक प्रगति पत्र में लिखे जायेंगे। प्रश्न को वोर्ड पर लिखकर या आजकल वोर्ड द्वारा लिखित परीक्षा के प्रश्न पत्र भी दिये जाते है। इस प्रकार के मूल्यांकन के माध्यम से रचनात्मक मूल्यांकन सफल होता है। सामयिक मूल्यांकन में निम्नलिखित स्तर होते है।

(1) भागों का पूर्णांक २० या ४० अंक तथा समय ३० या ६० मिनट इनमें परिवर्तन भी हो सकता है। (2) स्वीकृत पूर्णांक का वैमासिक विभाज (3) विभाजन के अनुसार तीन इकाई तैयार कर सम्पूर्ण मूल्यांकन (4) प्रश्न पत्र की जाच करना (5) कमी निर्णय व संशोधन पाठ।

सतत एवं सामाग्रिक मूल्यांकन

सतत मूल्यांकन :— शिक्षा और मूल्यांकन दोनों प्रतिक्रियाओं में घनिष्ठ सम्बन्ध है। मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है। मूल्यांकन का उद्देश्य यह देखना है कि बालक का व्यक्तित्व कहाँ तक विकसित हुआ। मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य - शिक्षण प्रक्रिया तथा सीखने की क्रियाओं से उत्पन्न अनुभवों की उपयोगिता के बारे में निर्णय देना।

सतत मूल्यांकन-मूल्यांकन करने की एक अविरत पद्धति है। इस पद्धति में किसी निदिष्ट पाठ, यह किसी विषय के अंश को पढ़ाने के बाद क्रम से दिन, सप्ताह या महीने के अन्तराल पर लगातार मूल्यांकन करना और यह देखना कि छात्र क्रम से उन्नति कर रहें हैं या नहीं, इसी का नाम सतत मूल्यांकन है। इस प्रकार छात्रों को एक निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँचाया जा सकता है। यह एख सूक्ष्म लेकिन निश्चित प्रक्रिया है।

पद्धति :— सतत मूल्यांकन करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना पड़ता है।

(1) वर्ष के प्रारम्भ में ही छात्रों के विषय ज्ञान, दक्षता, शारिरिक क्षमता आदि निर्धारित कर लिखित रूप में रखना पड़ेगा।

(2) आपने एक दिन या एक सप्ताह में जो पढ़ाया या कराया गया उसे लिपिबद्ध करना पड़ेगा।

(3) परिकल्पना के अनुसार बालक पढ़ेगे एवं कार्य करेंगे।

(4) दिन या सप्ताह भर में पढ़ाये गये सामग्रियों का मूल्यांकन और परिमाप करना पड़ेगा।

(5) अन्त में लिखित, मौखिक और व्यवहारिक आधार पर मूल्यांकन करना पड़ता है। जहाँ व्यवहारिक रूप से मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, वहाँ अन्य दो प्रक्रियों को अपनाया जाता है।

सतत मूल्यांकन द्वारा हम शिक्षा के मूल उद्देश्यों को प्राप्त करते हुए बालक में व्यवहारिक परिवर्तन कर सकते हैं। इस मूल्यांकन को करने वाले शिक्षक का दूरदर्शी, परिश्रमी और चतुर होना जरूरी है।

सामग्रिक मूल्यांकन :— साधारण परीक्षा के द्वारा छात्र की विषयगत क्षमताओं का मूल्यांकन होता है। लेकिन सामग्रिक मूल्यांकन अति व्यापक और विस्तृत है। सामग्रिक मूल्यांकन में छात्र के विषयगत क्षमता का माप जिस प्रकार किया जाता है उसी प्रकार उसकी शारीरिक, मानसिक और वैचारिक क्षमताओं का माप ही नहीं किया जाता, बल्कि उनमें उपस्थित त्रुटियों एवं दोषों को दूर कर उसे आगे बढ़ाया जाता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सामग्रिक मूल्यांकन प्रक्रिया ऐसी प्रक्रिया है, जिसके आधार पर हम बालक के शारीरिक, व्यवहारिक, वैचारिक एवं आचरणगत विकस धारा को बनाये रखते हैं। यह एक उत्तम प्रक्रिया है। इसके द्वारा हम बालक, का सर्वांङ्गीण विकास कर सकते हैं। इस विधि में बालकों के सभी पक्षों की ओर ध्यान दिया जाता है।

सामग्रिक मूल्यांकन के उद्देश्य :—

(i) छात्रों के त्रुटियों का निर्धारण करना।

(ii) उनका सर्वाङ्गीण विकास न कि केवल विषयगत।

(iii) परिपूर्ण मनुष्य बनाना।

(iv) छात्र के दिन-प्रतिदिन के उन्नति एवं उवनति का माप करना।

(v) यह विद्यार्थियों के चतुर्दिक विकास में सहायक है।

इकाई पाठ विश्लेषण सम्बन्धित प्रश्नपत्र प्रस्तुतीकरण :

प्रश्न के बिना परीक्षा नहीं ली जा सकती। प्रश्न के बिना कक्षा में पढ़ाते समय अन्त: क्रिया भी संभव नहीं है। प्रश्न का प्रकार उसके संदर्भ एवं रचना पर निर्भर करता है। जिस प्रकार एक जीवित मनुष्य शरीर और आत्मा दोनों का महत्व है, उसी प्रकार प्रश्न की विषय-वस्तु और भाषा दोनों महत्वपूर्ण है। प्रश्नों के द्वारा छात्र की स्मरण शक्ति, समझ, प्रयोग करने की शक्ति, विश्लेषण, संश्लेषण और तुलना समीक्षा आदि योग्यताओं की जाँच करने हैं। इस आधार पर हम प्रश्नों को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। ये वर्ग

(क) ज्ञान : प्रत्यास्मरण या कंठस्थ या पूर्वज्ञात सामग्री प्रस्तुत करते हैं।

(ख) बोध : विभिन्न सिद्धान्तों, अवधारणाओं और घटनाओं की प्रकृति, क्रम, सामाजिक समझ आदि।

(ग) प्रयोग : प्राप्त ज्ञान का नवीन परिस्थितियों में प्रयोग, सृजनात्मकता, मौलिक, लेखन दिये गये कथनों का विश्लेषण, संक्षेपण, तुलना, शीर्षक देना आदि।

योग्यता के आधार पर प्रश्नपत्र का प्रयोग तीन श्रणियों में किया गया है। उत्तर सीमा के आधार पर प्रश्न पत्र निबंन्धात्मक, लघुत्तर एवं अति लघुत्तरीय तथा वस्तुनिष्ठ तीन प्रकार के होते हैं। कठिन्य स्तर के आधार पर सरल, सामान्य और कठिन है। प्रश्नों का यही अंनुपात प्रश्न पत्र के संतुलन के लिए आवश्यक है।

प्रश्नपत्र बनाने से पहले अभिलेख और रूप रेखा तैयार की जाती है। प्रश्न पत्र बनाने के बाद उसकी अंकन योजना और अंकन तालिका तैयार कर लेनी चाहिए जिससे विविध अनुपातों का सहीं विश्लेषण किया जा सके। इसी के साथ प्रश्नों का विश्लेषण पत्रक भी तैयार किया जाता है जिसमें प्रत्येक प्रश्न के विशिष्ट उद्देश्य, प्रकरण, उप विषय, प्रश्न का प्रकार, अंक, समय तथा कठिन्य स्तर आदि का खाका सामने आ जाता है। मूल्यांकन प्रक्रिया का अंतिम सोपान विद्यार्थी के प्राप्त अंकों का विश्लेषण।

प्रश्न पत्र निर्माण के समय ध्यान रहे

(i) प्रश्न पत्र के प्रारम्भ में सामान्य निर्देश दिये गये हों।

(ii) प्रश्नों की भाषा शुद्ध, सरल और स्पष्ट हो।

(iii) अंकों का विभाजन अंकनीय बिन्दु पर हो।

(iv) भाषा शिक्षण में लिखित के साथ मौखिक परीक्षा का भी आयोजन है।

(v) एक प्रश्न में एक ही शिक्षण उद्देश्य की जाँच का प्रयत्न कीजिए।

(vi) सभी प्रकार के प्रश्नों का खण्ड अलग अलग करें।

(vii) सरल प्रश्नों को यथासंभव पहले स्थान दें।

(ix) प्रश्नों में ऐसे संकेत, चिन्ह न दिये जाएँ जिन्हें कच्चे न समझ सकें।

संम्पूर्ण मूल्यांकन (नमूना जाँच पत्र)

(1) निम्नलिखित शब्दों के संयुक्ताक्षर को चुनकर लिखो।

सिद्धार्थ, हिम्मत, बच्चे, अच्छा, चक्का, विश्वास, कर्म, बस्ता, चच्चा। जैसे द्ध

(2) निम्नलिखित वर्णों को संयुक्त कर लिखों :

क + र = , र् + म, =, च् + छ =, ख् + य =, श् + व =, म् + म =, च् + च =। जैसे स् + त = स्त

(3) दिये गये शब्दों को सही स्थान में लिखो :

सागल, पर्वत, गुलाब, फूल, पक्षी

ऊँचा ....., लाल ....., घालय ....., गहरा ....., खिला .....।

(4) नीचे दिये गये वाक्य उदाहरण के अनुसार पूरा करो :

बंदर दौड़ता है। बिल्ली .....।, घोड़ा .....।, कुत्ता .....।, लड़का .....।, लड़की .....।,

(5) विलोम लिखो : उदाहरण रात दिन

नया, ऊपर, बाहर, बड़ा, लड़का, लम्बा, पूरा।

(6) दिये गये शब्दों मे दार लगाकर शब्द बनाओ : जैसे रस रसदार

हवा, रंग, चमक, फल।

(7) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

(क) सिद्धार्थ के पिता का नाम क्या था?

(ख) झगरु को किसने मारा?

(ग) क्रान्तिकारी किसे कहते हैं?

(घ) इन्कलाब का नारा किसने कब लगाया?

(ङ) सप्ताह में कितने दिन होते हैं? नाम के साथ लिखो।

(8) रिक्त स्थानों को भर कर कविता पूरा करों :

उठो ..... अब ..... खोलो

पानी ..... हूँ ..... धोलो

बीती ..... कमलदल .....।

(9) बकरी, कुत्ता, गाय, घोड़ा और अपना विद्यालय में से किसी एक पर दस वाक्य लिखो।

पाठ योजना

इकाई-2 'आओ वर्ण पहचाने'

संभावित घंटे-2 (अभ्यास के साथ घंटे अधिक-कम हो सकते हैं)

पूर्व ज्ञान — स्वर वर्णों को पहचानता है, परिवेश के परिचित वस्तुओं का नाम या चित्र पहचान सकता है।

उपकरण — चित्र, चार्ट, कार्ड, पाकेट बोर्ड, श्याम पट्ट, चाक, डस्टर आदि।

विधि — अवलोकन, अनुकरण, प्रश्नोत्तर, खेल।

सामर्थ्य — देख, सुन और बोल सकना। शब्दों में व्यवहृत वर्णों को पहचान सकना। परिचित वर्णों का शुद्ध उच्चारण कर सकना। परिचित वर्णों के सहारे शब्द गठन कर सकना।

अनुषंगिक सामर्थ्य — परिचित परिवेश पर सहज सरल वार्तालाप कर सकना।

अध्यापक संकेत — बच्चों को बस का चित्र दिखाकर पड़ेंगे यह किसका चित्र है ? चित्र पर ध्यान दिलाते हुए उसके बारे में बात करेंगे। पूछेंगे किस-किस ने बस देखी है। बस पर चढ़ कर कौन आए हैं। बस के चित्र के नीचे किसके, नाम का चित्र है ? बस के नाम वाले चित्र कार्ड के पहले वर्ण को बताओ। किस वर्ण का यह कार्ड है ? पुस्तक में किस वर्ण को घेरे में रखा गया है ? बस के नाम के दूसरे वर्ण को अलग करो और स घेरा लगाओ। प्रत्येक वर्ण को दो चार बार बुलवायेंगे। स की ध्वनि का अभ्यास करवायेंगे। 'न' और 'ल' को भी अनुरुप भाव से पढ़ायेंगे, करवायेंगे। खेल विधि से न और स वर्णों को कागज पर लिखकर बच्चों को देंगे। बारी-बारी एक-दूसरे की पर्ची से मिलान करते हुए शब्द गठन का खेल करवायेंगे। 'न' और 'ल' का भी परिचय इसी प्रकार करवायेंगे।

मौखिक मूल्यांकन : बस पर चढ़ कर कौन आए ? ब और स से बनने वाले सभी शब्दों को बोलो। न, ब, ल और स, से शुरू होने वाले कुछ चीजों का नाम बताओ।

लिखित मूल्यांकन : न, ब, ल और स वर्ण को पाँच बार लिखो। ब, स, न, ल से बनने वाले दो दो शब्द लिखो।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

रचनात्कमक एवं ज्ञानमूलक प्रश्न

(i) इकाई विश्लेषण के माध्यम से पाठ परिकल्पना के महत्व को लिखें।

(ii) भाषा शिक्षण में मूल्यांकन के महत्व को लिखें एवं इसके क्या उद्देश्य हैं ?

(iii) सतत मूल्यांकन क्या हैं ? सतत मूल्यांकन की पद्धति क्या है ?

(iv) इकाई पाठ विश्लेषण सम्बन्धित प्रश्न पत्र बनाते समय किन बातों का ध्यान रखना होता है ?

(v) ज्ञानमूलक, बोधमूलक एवं प्रयागमूलक प्रश्नों के अन्तर बतायें।

(vi) पाठ योजना निर्माण के सोपनों का वर्णन कीजिए ?

पाठ योजना का नमूना

कक्षा प्रथम — इकाई — 7 "पढ़ने से पहले सुनो-बोलो "

उप इकाई (क) — "जल की रानी "

सामर्थ्य : (क) सरल , सुपरिचित एवं प्रचलित पदों, गीतों, कविताओं एवं काहानियों को सुन ,बोल और आवृति कर सकना ।

ख) परिचित परिवेश को नाना चित्रों एवं पाठ के चित्र को देखकर मैखिक सरल अनुरोधों आदेशों को, सहज सरल प्रशनों को समझ सकना।

आनुषंगिक : ग) पूछने पर परिवेश को परिचित पशु, पक्षी, जीव-जन्तु एवं फल-फूलों को नाम बता सकना।

पद्धति : आनंदपाठ, प्रश्नोत्तर एवं खेल ।

उपकरन : कार्ड, पाकेट बोर्ड , शयामपट ,चार्ट चित्र ।

अध्यापन कार्य संकेत : परिवेश के चित्रों को दिखाएँगे। संबन्धित प्रश्नों द्वारा वार्तालाप करेंगे। जैसे -चित्र देखो। चित्र में क्या-क्या दिख रहा है ? चित्र की बड़ी चीजों पर अंगुली रखने को कहेंगे। लड़की की फ्राक पर अंगुली रखो, उसकी नाक, कान, आँख पर बारी बारी से अंगुली रखवाऐगें। अन्य चित्रों को दिखाकर यही क्रिया करने को कहेंगे।

भाव भंगिमा द्वारा शुद्ध उच्चारण के साथ कविता को शिक्षक पढ़ेंगे / बोलेंगे / शिशु सुनेंगे और शिक्षक का अनुकरण करेंगे। कई बार इस क्रिया को करते हुए कविता की शुद्ध आवृति करवायेंगे। इस दौरान कुछ छोटे सहज प्रश्न पुछे जायेंगे । जैसे - मछली कहाँ की रानी है ? मछली अपना जीवन कहाँ बिताती है ? वह मछली को क्यों पकड़ना चाहती है ? पानी में रहने वाले कुछ जीवों का नाम बाताअे।

मौखिक मुल्यांकन : मछली कैसे डर जाती है ? वह कैसे मर जाती है ? पाठ के इस चित्र में मछली के अलावा और क्या क्या है ? जल की रानी कविता को कक्षा में सुनाओ।

लिखित मुल्यांकन : पाठ के नीचे दी गयी रेखाओं को स्लेट / कापी पर खीचों शिक्षक सामर्थ्य को पूर्ण रुप से अर्जन कराने को लिए अपनी विशेष विधि का प्रयोग करें।

इकाई	—	फुल ओर काँटा	विषय	—	मातृ भाषा
उप इकाई	—	प्रथम	कालांश	—	प्रथम

सामर्थ्य —:

- शुद्ध उच्चारण तथा ताल व लय को साथ कविता पाठकर सकना ।
- सुनने, समझने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की क्षमता का विकास कर सकना।
- पाठ में आयें संयुक्ताक्षरों को तोड़ना-जोड़ना और इनसे शब्द गठन कर शब्दों से वाक्य गठन कर सकना ।
- वाक्य द्वारा क्या,किनके,किसे,क्यों आदि से बनने वाले सरल प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा।

अनुषांगिक सामर्थ्य —: विभिन्न फुलों काँटों वाले पौधे एवं उसकी उपयोगिता को समझ सकेगा ।
कविता के माध्यम से दिये गये सीख संदेश को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न कर सकेगा ।

शिक्षण संकेत : शिक्षक / शिक्षिका, कविता पाठ शुद्ध उच्चारण ,ताल,लय तथा भाव भंगीमा के साथ करेंगे । तत्पश्चात शिक्षक / शिक्षिका छात्रों से अनुकरण वाचन करने को कहेंगे। अनुकरण वाचन के बाद पाठ के उप इकाई में आये संयुक्ताक्षरों एवं कठिन शब्दों को रेखांकित करन का कार्य करवायेंगे तथा उनका समाधान श्यामपट पर लिखकर दिखाऐंगे। छात्रों को शब्द तथा वाक्यगठन हेतु श्यामपट

के ऊपर भी कार्य करने हेतु उत्साहित करेंगे। इसके पश्चात् शिक्षक / शिक्षिका कविता के अर्थ को छोटे-छोटे प्रश्नों के माध्यम से बताऐंगे जैसे फुल अपनी सुगंन्ध कैसे फैलाते है ? तो उसे फूल का खिलना कहते हैं। हँसते समय हमारे होठ फैल जाते हैं उसी तरह जब फूल हँसते हैं तो उनकी पंखुड़ियाँ फैल जाती हैं।

अब बताओ — फूल अपनी सुगंध कैसे फैलाती हैं ?

संभावित उत्तर — खिलकर, अपनी पंखुड़ियों को फैलाकर। इसी प्रकार छोटे-छोटे प्रश्नों के माध्यम से हम कविता के अर्थ का बोध करायेंगे। आवश्यक हुआ तो एक काली तथा एक खिले हुए फूल को दिखाकर धारणा को पुष्ट करेंगे।

नोट :

- मूल्यांकन करने पर जिन बच्चों ने सामर्थ्य का अर्जन किया उन्हें धन्यवाद दें एवं उन मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करें कि वे अपने सहपाठी को भी अपने स्तर पर ले आयें।
- निम्न मान वाले छात्र क्यों सामर्थ्य अर्जन नहीं कर पाये इसे शिक्षक तलाश करें एवं संशोधनी पाठ की या अतिरिक्त अभ्यास की व्यवस्था करें। आवश्यक हो तो पद्धति का परिवर्तन कर उन्हें समझायें पाठ के सामर्थ्य का अजर्न करने में उनका विशेष सहयोग करें।
- कहानी कथन, प्रश्नोत्तर, वार्तालाप, आवृत्ति, अनुकरण एवं खेल आदि विधियों द्वारा आनन्दमय पठन पाठन करवाते हुए पाठ के लिए Teaching Learning Material (TLM) का समुचित व्यवहार करें